Durga Sah Municipal Library
NAINI TAL
दुर्गासाह म्युनिसिपल पुस्तकालय
नैनीताल
Class No. 891.7
Book No. K35K
Reg No. 5211

बँगला के कथाकार परशुराम की अनोखी सूझ-बूझ की परम्परा एवं अद्भुत ढंग से कहानी कहने की कला को आगे बढ़ाने वाले 'कौतुक' बनारसी का जन्म २४ सितम्बर सन् १९२३ को वाराणसी जिले के एक गाँव में हुआ। देवरिया जिले से चलकर आपके पूर्वज सैकड़ो वर्ष पूर्व बाबा विश्वनाथ धाम के सन्निकट विराजमान हुए और बहुमूल्य पैतृक सम्पत्ति का त्याग कर सर्वदा के लिए काशी बस गये। कृषि, व्यवसाय एवं पाण्डित्य-प्रदर्शन से वाराणसी क्षेत्र में भी आपके पूर्वजो ने पुनः समस्त ऐश्वर्य प्राप्त किया और नगर के प्रमुख व्यवसायियो के सदेव के लिए सहयोगी बन गये। कुलदेवी आकाश-वाणी के वरद् पुत्र एव तेजस्वी सरयूपारी पण्डित रामानन्द मिश्र के पुत्र श्री अनुरूपनारायण मिश्र हुए और इनके चार तेजस्वी पुत्र पं० अक्षयवरनारायण, पं० आदित्यनारायण, पं० सूर्यनारायण एवं पं० दशरथ नारायण हुए। हमारे कथाकार संगीत-कुशल पं० आदित्यनारायण मिश्र के एकमात्र पुत्र है। सन १९४३ मे साप्ताहिक 'आज' में पत्रकार के रूप मे आपने जीवन का प्रारम्भ किया और स्वातःसुखाय संगीत, व्यंग्य-चित्रकला तथा हास्य-अभिनय मे गहरी दिलचस्पी रखते हुए लेखन-कार्य मे लगे रहे। व्यग्य-विनोद के निबंधों की इस नवीन पुस्तक मे आपकी सरस शैली का विशेष ढंगसे प्रतिपादन हुआ है।

# कलम की कमाई

कौतुक बनारसी

आनन्द पुस्तक भवन
वाराणसी.

प्रकाशक—आनन्द पुस्तक भवन, वाराणसी
मुद्रक—सीताराम प्रेस, काशी.
आवरण शिल्पी—मनोरञ्जन कांजिलाल
प्रथम संस्करण जून १९६०
मूल्य : दो रुपया पचास नये पैसे
रु० २'५०

## जीवन-सहचरी शशिजी को सप्रेम

जिन्हें यशस्वी कवि की बहन होने से जितना सुख था, एक आलसी लेखक की पत्नी होने से उतनी ही परेशानी है और जिनके विचार से मेरे अस्थि-पिंजर को ठीक वक्त पर चाय एवं पथ्य-भोजन से खड़ा रखने में उनके बहुमूल्य समय का जितना सदुपयोग होता है, मेरे सत्साहित्य की प्रशंसा करने में उतना ही दुरुपयोग।

# पैरवी

दुनिया में लिखने के लिए इतने विषय पड़े हुए हैं कि लिखते-लिखते जीवन बीत जाय। मैंने ऐसे ही कुछ जरूरी विषयों पर अपनी लेखनी का उपयोग किया। पुस्तक में मैंने उन समस्त मनोरञ्जक विषयों पर लिखा है, जिनमें आपकी दिलचस्पी है।

जब भी मुझे मौका मिलता है, मैं समझ-बूझ कर लिखता हूँ। लिख लेने के बाद स्वयं पढ़ता हूँ, जब अपने को पसन्द आ जाता है, किसी पत्रमें छपाकर दूसरों को पढ़ाता हूँ।

जब अपने सभी पाठकों को पढ़ाना चाहता हूँ तब किसी अच्छे पुस्तक-प्रकाशक को सौंप देता हूँ। यह पुस्तक अब आपकी सेवा में है, आप लोग आसानी से पढ़ सकते हैं।

अखण्ड ब्रह्मचारियों के देश में पहुँचकर वहाँ की सच्ची रिपोर्ट बन्धुश्रेष्ठ श्री विश्वम्भर गोस्वामी ने दी है। उन जैसे सत्योपासक एवं देशभक्त 'पत्रकार' को मेरा हार्दिक धन्यवाद।

लक्ष्मी-निवास
चेतगंज, वाराणसी.

शिवमूर्ति शिव
[कौतुक बनारसी]

# क्रम


| | | |
|---|---|---|
| १. | तगादा | १ |
| २. | जुआ | ८ |
| ३. | जुआड़ी | १३ |
| ४. | आपको हँसने नहीं आता | २० |
| ५. | आदमी बनो आदमी | २५ |
| ६. | अखबार पढ़िये | २८ |
| ७. | नकलची | ३४ |
| ८. | जाड़ा | ३९ |
| ९. | फिल्म-उद्योग बन्द हो जाये तो.... | ४५ |
| १०. | युद्ध यानी लड़ाई यानी मुँह चुथोवल | ४९ |
| ११. | होली के तीन मनहूस | ५३ |
| १२. | जयन्ती | ६३ |
| १३. | सम्पादकजी, रचना जरूर छाप दें | ६५ |
| १४ | टाल | ७१ |
| १५. | हमारे गांधीजी पूरे मजाकिया थे | ७३ |
| १६ | दाढ़ी और मूँछ | ७६ |
| १७. | जिद्दी भाषाभाषी | ८० |
| १८. | अखण्ड ब्रह्मचारियों के देश में | ८३ |
| १९. | परीक्षा | १०४ |
| २०. | मूर्खों की महिमा | ११० |

# कलम की कमाई

# तगादा

किसी कवि ने बहुत अच्छा लिखा है कि 'जब मैं किसी दिन गोला-गोला-सा चाँद देख लेता हूँ तो मुझे 'उनका' रुपैया याद आ जाता है !' पूनों का चाँद उधारी रुपए की भाँति चमकता है। किसी से उधार लेना और किसी को उधार देना, कर्ज व हथफेर सभी खतरनाक है। चाँद ऐसे अवसर को याद दिला कर कवि को ही नहीं, सबको दुखित करता है।

अगर आपमें थोड़ी भी हया हो, तो आप किसी से रुपया मत लीजिए। रुपया आप लेकर खर्च करेंगे, रुपया खर्च करने के लिए लिया ही जाता है। खर्च कर लेने के बाद आपको एक हल्का गश आएगा। यह कोई अच्छी बात नहीं है कि रुपया खर्च करने के बाद आप एक व्यर्थ का संकट मोल लें। रुपया खर्च करने के लिए पैदा किया जाता है, यह एक सही बात है, पर रुपया उधार देकर खर्च करने के लिए नहीं पैदा किया जाता। उधार दिया कि तगादा करना पड़ा। बिना तगादा किये यदि कहीं से उधार रुपया वसूल हो जाय तो किसी अच्छे ग्रह की दशा समझ

कर बहुत सोचना या खुश नहीं होना चाहिए। यदि आप उधार देने के आदी होंगे, तो तगादा करने में भी पूरे होशियार होंगे। तगादा के सब दाँव-पेंच जानते होंगे।

तगादा कई प्रकार का होता है—१-अपने रुपए का तगादा, २—दूसरों के रुपए का तगादा, ३—उधारी रुपयों का तगादा, ४—बिक्री और मजदूरी के रुपयों का तगादा। तगादा कभी सख्ती के साथ किया जाता है। कभी नरमी के साथ। कब सख्ती और बेमुरौवती के साथ किया जाता है, कब अनुनय-विनय के साथ, इसके भेद हैं। कभी लाठी दिखा कर तगादा करना पड़ता है, कभी हाथ जोड़ कर। कभी घूसा दिखा कर और कभी दाँत। कभी आँख तरेर कर तगादा करते हैं और कभी इशारे से। तरीके कई हैं, सभी रुपया प्राप्त करने के लिए अपनाए जाते हैं।

अपने रुपए का तगादा आप खुद कीजिए, आपकी बात में वजन रहेगा। यदि आप खुद चले गए तो रुपया लेकर चुप लगाने वाले कमबख्त की नानी भले न मरे, उसे बुखार अवश्य आ जायगा। किसी नौकर को भेज दीजिए, संदेशा के सिवा रुपया कभी नहीं लाएगा। चिट्ठी से तगादा करना मूर्खता है, चटपट खड़े-खड़े चिट्ठी की पीठ पर कुछ लिख कर वापस कर दिया जाता है। आपको अपने रुपए के बदले उनकी चिट्ठी ही थमा दी जायगी। नौकर को चिट्ठी के साथ तगादा में भेज दीजिए, जिसके नाम चिट्ठी रहेगी, वही महानुभाव उस चिट्ठी को रख कर कह देंगे, 'भाई साहब जौनपुर गए हैं, आने पर यह चिट्ठी दे दी जायगी।' नौकर चिट्ठी भी गँवा आएगा और मुँह लटका कर आपको कर्जदार की अनुपस्थिति का समाचार सुना देगा।

दूसरे का तगादा बहुत आसान और आरामदेह काम है। अपने रुपए का तगादा करने जाइए, नकार में उत्तर मिलने पर

निश्चित ही आपका खून जल जायगा। दूसरे का तगादा करने में निश्चित यह खतरा नहीं रहता।

'रुपये के लिए भेजा है।'

'आप खुद बाबू साहब को ही भेज दीजिए।' लीजिए कितना आसान, सटीक और जायज उत्तर आपको मिल गया। यह भी कोई अच्छी बात है कि रुपया दूसरे को चाहे और तगादा आप खुद करें। आप तगादा करने का काम ही करते हों और हाथ में मोटा डंडा लेकर घूमते रहते हों तो यह दूसरी बात है कि कर्ज-दार आप से दो बात करे, पान-पत्ता खिला दे। दूसरे का तगादा करने में पान-पत्ता, चाय-जलपान की घूस अच्छी मिल जाती है। मौके-बे-मौके दूसरे का तगादा करने वालों को रुपया कभी नहीं मिलता, उल्लू की उपाधि सदैव मिलती है। जिस समय आप तगादा करके खाली हाथ लौटने लगते हैं, निराशा की एक गहरी लकीर चेहरे पर खिंच जाती है।

उधारी रुपये का तगादा सख्ती से भी कीजिये, अड़ोस-पड़ोस-वालों को बुरा नहीं लगता। आपके साथ सहानुभूति के स्वर में बोलेंगे—'तीन बरस हो गये? क्यों, क्या उधार लिये तीन बरस हो गये? तब तो खेलावन को रुपये अब तक लौटा देने चाहिए थे।' यानी पड़ोसी तब भी यह जरूरी समझेंगे कि उधार की अदायगी तीन बरस पर होनी ही चाहिए। दो बात आपके, तीन बात खेलावन के पक्ष की अवश्य करेंगे। फैसला देंगे—'थोड़ा-थोड़ा दे देगा। थोड़ा मौका दे दीजिए। होली तक दे देगा। जरूर देगा।' और खेलावन को होली तक खेलने का मौका मिल जायगा। अगर होली बीत गयी है तो दिवाली तक।

उधारी रुपये का ही तगादा नहीं होता। उधार दी गयी चीजों का तगादा भी किया जाता है। मेरा होल्डाल दो रोज के लिये

एक मशहूर कवि ने उधार मँगा लिया। हथफेर भी कह सकते हैं। बीसियों बार तगादा करने पर भी आज तक होलडाल नहीं लौटा। कुछ लोग जन्मजात ऐसा गुण रखते हैं कि न तो कभी दूसरे की किताब लौटाते हैं और न सख्त जरूरत पड़ने पर लिया गया सामान। उधार ली गयी चीज की कीमत वापस की जा सकती है, पर कौन वापस करता है?

तगादा करने की भी सीमा होती है। एक दो तीन पाँच दस बारह बीस बार तगादा करने के बाद आखिर तगादा करने वाला कभी तो थकेगा? थकने के बाद महीने दो महीने पर चक्कर लगाना शुरू कर देगा। हो सकता है, बाद में तगादा करना ही बन्द कर दे। रजिस्ट्री नोटिस से तगादा करने के बाद रुपया डूबा हुआ मान लिया जाता है। अदालत से डिग्री होने के बाद ५) प्रति मास की किश्त वसूलना और भी मुश्किल का काम है। किराये का तगादा सबसे कठिन होता है। मकान में रहिये और किराया भी रोक रखिये, तगादगीर को आसानी से लौटा दीजिए, आपको कानून द्वारा भी इस काम से विरत नहीं किया जा सकता।

तगादा करने में अनुभव बढ़ता है। आप तगादा करते-करते एक वक्त ऐसा भी आयेगा, जब पूरे कंजूस बन जायेंगे। किसी को रुपया या रद्दी कुछ भी बिना समझे-बूझे देने में हिचकेंगे। तगादा काफी दिल खट्टा कर देने वाला काम है। तगादा करने वाले को रात में बुखार अवश्य आता है। सुबह तगादा करने निकलिये तो शाम को बुलाहट होगी और शाम को तगादा करने चलिये तो सुबह की। तगादा सुनना भी बहादुरी और कलेजे का काम है। तगादा सुनते-सुनते जिसके कान बहरे हो गये रहते हैं, वह बाद में किसी के तगादे को सुनता ही नहीं। ऐसे लोगों से तगादा कीजिए, पता ही नहीं चलेगा कि वह सुन रहे या गुन रहे हैं।

जिनको तगादा सुनने का अच्छा अभ्यास हो जाता है, वे बहुतों की रकम आसानी से पचा लेते हैं। बहुत रोबदाब से और फिट-फाट रहने वाले पर दस पाँच क्या हजारों तगादों का यही असर होता है, जो एक तगादे का।

कुछ लोग तगादों का उत्तर चिट्ठी लिख कर देते हैं, कुछ महानुभाव जबानी। कुछ सिर हिलाकर और कुछ इशारे से। ऐसे भी महानुभाव मिल जायेंगे जो तगादों का उत्तर गिड़गिड़ाकर भी देते हैं। ऐसे लोग कम मिलते हैं। सच पूछिये तो ऐसे लोग ही बाजी भी मार ले जाते हैं। बरसों तक अपनी मधुर वाणी से आपको चरका देनेवाले ये लोग बहुतों की रकम अपने लाद में छिपाये रहते हैं।

छोटी-मोटी मजदूरी के कामों में तगादा बहुत करना पड़ता है। मेरे मकान से बगल के ज्योतिषी दूसरों की जन्मकुण्डली बना कर रख लेते हैं—बाद में इस बात का तगादा करते हैं कि 'आकर ले जाइये।' अक्सर छः छः मास बाद कुण्डली के ग्राहक आते हैं। सरकारी संस्थाओं को विज्ञान और खेल का सामान सप्लाई करनेवाले दूकानदार किस धीरज से उधार माल देकर रुपये का तगादा करते रहते हैं, आपको पता लगे तो दाँतों तले उँगली दबा लें। तगादा दुनिया का सबसे कड़वा काम है। ईश्वर न करे, आपको तगादा करना पड़े।

तगादा बहुत जरूरी काम है, पर यह बहुत वाहियात काम है। दुनिया में जितने जरूरी काम होते हैं, जायज होते हैं। एक तगादा ही ऐसा जरूरी उद्यम है, जो वाहियात है। बिना नागा जो तगादा किया जाता है, उसमें जल्दी सफलता मिलती है। तगादा अगर ठण्डा पड़ गया तो रुपया डूबते देर नहीं लगती। तगादगीर को कुछ कर्जखोर जरूरत से ज्यादा इतमीनान दिलाते

हैं कि ठीक अमुक तारीख को अमुक बजकर अमुक मिनट पर काम हो जायगा, पर न जाने कितने अमुक बजते हैं और अमुक मिनट आते हैं, पर काम नहीं होता। इतमीनान का पचड़ा जहाँ का तहाँ रखा रह जाता है।

हयादार को बार-बार तगादा करने में कठिनाई होती है। बेहया एक दो बार के तगादे में ही अपना पावना वसूल कर लेते हैं। आप तगादा करने में खुद बेहयायी न बरत सकें तो एक बेहया नौकर ही रख लीजिये। ऊँची आवाज में तगादा करने वाला, आँख तरेरकर बोलने वाला, भरे दरबार में रुपये माँगने वाला कुछ ढीठ हो तो आपका डूबा हुआ रुपया वापस लौट आयेगा। तगादा करनेवाला मोटे और मजबूत शरीर का हो तो बहुत अच्छा रहेगा, यदि दुहरा न होकर इकहरा शरीर का भी हो तब भी काम चल जायगा। हाँ, इकहरे शरीर वाले तगादगीर नौकर को घूँसा खाने और और घूँसा देने का अवश्य अभ्यास हो।

तगादा करनेवाले से मुँह छिपाने में नुकसान होता है। वह सबसे कहता फिरेगा, 'तगादा करने जाइये तो मुँह छिपाते हैं।' 'लेने को ले लिया, देने में नानी मरती है।' 'दरवाजे पर जाइये तो भीतर घुस कर चुप्पी साध लेते हैं और बीबीजी उत्तर देती हैं।' वगैरह वगैरह। मेरा खयाल तो ऐसा है कि तगादा करनेवाले को बहुत आवभगत के साथ बैठा लिया जाय। सिनेमा की, अखबार की, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान की, अड़ोस की पड़ोस की, अपनी पुरानी बीबी-बच्चों की खूब बातें करनी चाहिए। इस सारी बातचीत के दौरान में कभी भी असली बातचीत पर नहीं लौटना चाहिए। घंटा दो घंटा तीन घंटा जितनी देर तगादगीर रुक सके, अपनी ही बात फेंटते रहना चाहिए। यदि वह उठने की कोशिश

करे तो आग्रहपूर्वक पुनः उसे बैठा देना चाहिए। फिर वही अल्लम-गल्लम वार्ता शुरू कर देनी चाहिए। तगादगीर कितनी देर रुक सकेगा ? उसे भागना ही पड़ेगा। हाँ, बातचीत के दौरान यदि उसने तगादे की एक भी बात कर दी तब आपको सँभलना पड़ेगा। 'रुकिये अभी काम होता है। इतने दिनों बाद मिले हैं कुछ बातचीत कुशल मंगल तो हो।' तगादगीर को अन्ततः हार माननी पड़ेगी। इस उपाय से समय अवश्य खर्च होता है पर तगादगीर का पाँव उखड़ जायगा।

एक सेठ ने मुझे बताया, 'मैं तगादा को बुरा काम नहीं समझता।

'क्यों, साहब !' मैंने उनकी हिम्मत की तारीफ की।

बोले—'सत्रह रुपये की चीज मैं उधारी में ५१) में देता हूँ। अगर ४०) भी मिल गया तो भी लाभ में ही रहता हूँ। इस प्रकार तगादा करने वाले नौकरों का वेतन भी उधार लेने वाले से ही वसूलता हूँ। यह है तगादे का रोजगार। तगादा करनेवाले और तगादा सहनेवाले दोनों ही धन्य है !

# जुआ

इस लेख का शीर्षक पढ़कर आपका मुँह अच्छी तरह खुल गया होगा। 'जुआ' ऐसी चीज ही है। इसके चक्कर में जो भी पड़ा, उसका मुँह तो खुला ही, दिमाग भी खुला और यही क्यों, आँख भी खुल गयी। जुआ के चक्कर में पड़े युधिष्ठिर। सुई की नोंक भर भी उन्हें धरती नहीं मिली, बल्कि जंगल-निवास भी करना पड़ा। जुआ के चक्कर में नल राजा भी पड़े थे और उन्हें इस कला की सारी बारीकियाँ ज्ञात हो गयी थीं।

दीपावली का त्योहार भी हमारा, आपका, सबका मुँह खोल देता है। यही कारण है कि इस त्योहार पर जुआ खेलने की प्रथा चल पड़ी है। दीवाली के दिन लक्ष्मी-पूजन किया जाता है, फिर 'परम बुद्धिमान' लोग लक्ष्मी के साथ जुआ खेलते हैं। कहते तो यहाँ तक हैं कि दीवाली के दिन हर भले आदमी को जुआ खेलना चाहिये। अपनेराम की प्रति वर्ष एक इकन्नी काम आ जाती है।

जुआ खेलना बुद्धिमानी का काम माना जाता है। जो लोग जुआ नहीं खेलते, जुआड़ी लोग उन्हें औंधी-खोपड़ी का आदमी मानते हैं। जुआ में जो जम जाता है, दीवाली के दिन जो जुआ खेल कर बाजी मार ले जाता है, उसे साल भर तक 'चिड़ी-मार' के बदले बाजीमार कहते हैं। यदि आप जुआड़ियों के दल में चले जाइये और वहाँ जाकर जुआ मत खेलिये, तो निश्चित ही वे लोग आपको उजबक समझेंगे। एकाध जुआड़ी भाषण करते हुए कहेंगे कि—'श्रीमान् जी! बहुत बड़े-बड़े धरमात्मा-परमात्मा मैंने देखे हैं, पर आप-सा जुआ न खेलनेवाला बुद्धू सतयुगी आप ही को देखा है।' जुआड़ी लोग अपने को युधिष्ठिर और नल घोषित करेंगे और आपको दुर्योधन जैसा पापी।

जुआ कई प्रकार का होता है। एक जुआ वह होता है जो तास के पत्ते के साथ खेला जाता है; दूसरा जुआ वह होता है जो बैलों के कन्धे पर रखा जाता है। जुआ दोनों हैं और दोनों को खींचने से एक-सा आनन्द है। जार्ज-बर्नार्ड शा के एक विद्वान दोस्त ने लिखा है, 'बैल के कन्धे पर रखने वाली लकड़ी का नाम समझ बूझकर जुआ रखा गया है, क्योंकि जुआड़ी भी एक अच्छा खासा बैल होता है।' खैर, जो भी हो, वह सब अनुसंधान की बातें हैं। जुआड़ी, लबाड़ी और अनाड़ी में से कुछ भी न हो, तब भी वह 'कुछ न कुछ' अवश्य होता है।

एक जुआड़ी के बाप के, बाप के, बाप का कहना था कि उसकी खोपड़ी, जब वह मर जायेगा तो लाखों रुपये में बिकेगी। वह कौड़ी या तास से जुआ नहीं खेलता था, बल्कि वह अपनी खोपड़ी से जुआ खेलता था। अपनी अकेली और औंधी खोपड़ी की बदौलत उसने करोड़ों की रकम चीर कर रख दी थी। वह जुआ नहीं खेलता था, बल्कि वह जुआ खेलनेवालों को सिर्फ

राय दिया करता था और उसके पास मीलों दूर से, इस नगर से, उस नगर से जुआड़ी लोग सलाह लेने आया करते थे। इस जुआड़ी की खोपड़ी लाखों रुपया पैदा करने के लिये उसके नाती-पोतों के पास अभी भी सुरक्षित रखी हुई है। नाती-पोतों का कहना है कि जुआ एक कला है, विद्या है, आर्ट है, टेकनीक है, तिकड़म है। कहते हैं कि जो दीवाली के दिन जुआ नहीं खेलता, वह छुछून्दर होता है। आज कल लोगों के मकान में जितने छुछून्दर इधर-उधर घूमते दिखाई देते हैं, निश्चित है कि ये पूर्व जन्म में जुआ नहीं खेलते थे। इसीसे इनका छुछून्दर योनि में जन्म हो गया। यदि आपके मकान में कोई छुछून्दर दिखे तो आप उसपर एक सहानुभूति की दृष्टि फेंक दीजियेगा।

भारी-भरकम जुआ नालपर खेला जाता है। हलका-फुलका जुआ कौड़ी या तास पर। वेद में जुआ के लिये जो मन्त्र बतलाया गया है, उसका अर्थ है कि 'लगाओगे तो पाओगे।' जुआ में जो 'लगाता' है, वह पाता है। कुछ लोग ताल ठोंक कर लगाते हैं और कुछ लोग सिर्फ 'लग्घा' लगाते हैं। जो लोग तास पर तास फेंकते हैं, वे सच्चा जुआ खेलते हैं, तास पर जुआ खेलना पेड़ा छील कर खाने के समान है। जुआ एक ओखली है; इसमें जो लोग सिर डाल देते हैं, वे मूसलों से नहीं डरते।

तास का जुआ फल्लास कहा जाता है! रनिंग फल्लास में कोई जोकर खेलता है, कोई ब्रेक खेलता है। जो जैसा खेलता है, वैसा पाता है। यह रईसों का खेल है, और पेट के बल लेटकर खेला जाता है। पेट के बल लेटकर खेलने से खोपड़ी में बराबर मिनट-मिनट पर फुरहुरी छूटती रहती है। जो लेटकर फल्लास नहीं खेलता है, वह हार जाता है। रनिंग फल्लास के मालिक होते हैं पक्के। जोकर राजा-बाबू होता है, वह जिसके पास आ

जाय, उसकी चाँदी है। फल्लास के शौकीनों के पास जरा बैठ जाइये, अगर आप निरे बुद्धू हैं तो वह आपको खुशी-खुशी समझायेंगे—'यह देखिये, यह जो फेंका गया है, वोट है। यह भाई-चारा सिखलाता है। इसके बाद बिना पत्ता देखे, जिन्होंने पैसा फेंका वे ब्लाइण्ड हैं, शेर-जुआड़ी किस्मत के बुलन्द। विश्वास रखो; 'लगाओगे तो पाओगे'। अगर नहीं लगाओगे तो खड़े-खड़े पछताओगे।' थोड़ी देर तक तमाशा देखने के बाद आपकी भी तबीयत रनिंग फल्लास पर अवश्य आ जायगी।

'ट्रेल' और फल्लास की लड़ाई भी खूब होती है कि आनन्द आ जाता है। मुर्गे की लड़ाई में आनन्द आता है या ट्रेल फल्लास की। इसी आनन्द के चक्कर में दो-दो हाथ के लौंडे भी सड़क पर डिब्बे में कौड़ी डाल कर खड़खड़ाने लगते हैं। दीवाली के दिन सड़क पर चले जाइये, जिधर देखिये; जुआड़ी बालक आपका स्वागत करते दिखाई देंगे। लड़के चीखते मिलेंगे—'छोड़ो बाबू छोड़ो! एक का तीन! लगाओगे तो पाओगे! नहीं तो खड़े-खड़े पछताओगे! ईंट, चिड़ी, पान, हुकुम, झण्डा, मूरत, किसी पर लगाओ! ले देकर चल दो। खुला खेल फरुखाबादी है। जुआ खेल क्या है, हाथ की सफाई दिखाने का शीशा है और जेब साफ करने का साबुन है।

जुआड़ी को अच्छा मनोविज्ञान जानना चाहिये। जुआड़ी परले नम्बर का ज्योतिषी होता है। गणित का पण्डित तो होता ही है, टोटका और शकुन-अपशकुन का भी उसे अच्छा ज्ञान होता है। जादूगर की तरह हाथ की सफाई दिखानेवाला होता है और वैज्ञानिक की तरह कुशल। जुआड़ी का दिमाग ठण्डा होना चाहिये और ध्यान एकाग्र।

जुआड़ी साइत से उठता है। नाक की हवा देखकर घर से बाहर पाँव निकालता है। अपशकुन हुआ तो लौट आता है। और अपनी कौड़ी को चूमता है। यह कौड़ी नहीं है? यह भाग्य का वारा न्यारा करने वाली जादू की गोली है। कौड़ी मामूली चीज नहीं है। कौड़ी ठीक पड़ गयी तो घर में मोती बरस गया। कौड़ी खराब पड़ गयी तो घर का घर उजड़ गया। कौड़ी सर्वदा सोयी रहती है। जुआड़ी दीवाली के दिन कौड़ी जगाता है। कौड़ी को हजारों मिन्नतों के बाद जगाना पड़ता है। कौड़ी बोलती है। कौड़ी जब तक नहीं बोलती, उसे छूना गुनाह समझा जाता है।

जुआ जो खेलने जाता है, वह जमकर बैठता है। जो एक बार जमकर बैठता है, वह इस पार या उस पार करके उठता है। बड़े-बड़े योगी अपनी जगह से उठ जाते हैं, जुआड़ी नहीं उठता। जुआड़ी कुआसन से नहीं बैठता है। बगल में यदि कोई मनहूस आ बैठा; तो उसे तुरत धता बता देता है।

जुआ राजाओं का खेल है, क्योंकि इसीसे बड़े से बड़े राजा रंक बने हैं।

# जुआड़ी

❀

मैं जुआड़ी पर लेख लिखने बैठा हूँ, यदि किसी कवि को जुआड़ी पर कविता लिखने के लिए उत्प्रेरित किया जाय, तो उसका काम लेख लिखने से अधिक आसान हो जाय, जुआड़ी के तुक में मदाड़ी, कबाड़ी, लबाड़ी, अनाड़ी जैसे शब्द इकट्ठे करके वह जल्द छुट्टी पा ले, जुआड़ी शब्द अनाड़ी या लबाड़ी की जाति का ही है। जो लोग जुआड़ी को अनाड़ी नहीं मानते, वे निस्सन्देह बहुत बड़े लबाड़ी हैं। सरकार और उसकी मदाड़ी का-सा खेल दिखाने वाली पुलिस परीशान है तो जुआड़ी से। दीपावली के एक मास पहले से एक मास बाद तक जुआड़ियों पर ही नहीं, पुलिस पर भी शनि की साढ़ेसाती सवार हो जाती है।

जुआड़ी शब्द जुआ से बना है। जुआ एक प्रकार का लकड़ी का बोझ है जो बैलों के कंधे पर हल खींचने के लिए रखा जाता है। जुआड़ी के कंधे पर भी बोझ रखा जाता है, मगर वह हल बैल का जुआ नहीं होता, अपितु साव महाजनों का कर्ज होता है। आज तक ऐसे व्यक्ति को नहीं देखा जो असली जुआड़ी हो और

उसके कंधे पर कर्ज का बोझ न लदा हो। जुआड़ी मदाड़ी भी होता है। मदाड़ी डमरू बजाकर बंदर नचाता है, जुआड़ी चुटकी बजाकर बाल-बच्चों और बीबी को नचाता है। वह जुआड़ी हो नहीं सकता, जो दूसरों को नाच न नचा दे। दूसरों को नाच नचाने में वही व्यक्ति सफल होता है जो परले सिरे का झुट्ठा हो। इसलिए त्रैराशिक हिसाब-किताब के अनुसार जुआड़ी परम झुट्ठा भी होता है। मदाड़ी बाँस में रस्सी बाँधकर खेल खेलता है। जुआड़ी हाथ में हथकड़ी, पाँव में बेड़ी बाँधकर खेल खेलता है, जब वह ओखली में सिर रख देता है तब मूसलों से नहीं डरता।

अनुभवी लोगों का कहना है कि जुआड़ी का हाथ भर का कलेजा होता है। होता होगा, मगर अपना अनुभव तो यह है कि उसका कलेजा मुट्ठी भर से अधिक नहीं होता। कहते हैं, और व्यासदेवजी महाभारत नामक अपनी मोटी पोथी में लिख भी गये हैं कि युधिष्ठिर महाराज जुआड़ी थे। मुझे यकीन नहीं होता। उस जमाने जुआड़ी सिर्फ शकुनी नामक एक आदमी अवश्य था। उसने जुआ खेलने में ऐसा कमाल दिखाया कि बड़े-बड़े लोगों के छक्के छूट गये। उत्तर भारत में गंगा के किनारे काशी नामक एक नगर है। कहते हैं, आज भी शकुनी के बाल-बच्चे वहाँ पुश्तैनी कर्म से जी खा रहे हैं।

चतुर जुआड़ी तास के पत्ते को खूब फेटना जानता है जैसे स्कूली लड़के नोटबुक फेटते हैं। जुआड़ी तास के पत्ते को ही नहीं फेटता, वह कौड़ी भी उछालता है, जैसे फैशनेबुल लड़के बाप-दादों की इज्जत उछालते हैं। जुआड़ी की एक जेब में तास की गड्डी होती है, दूसरी जेब में आजकल के नौजवानों की आँख की तरह पीली-पीली कौड़ियाँ। जुआड़ी जब फड़ पर उतरता है तो उसके सम्मुख ऐरे गैरे नत्थू खैरे पड़ नहीं सकते। छट्ठी का

दूध जिसने पेट भर पीया हो, वही पड़ सकता है। चतुर जुआड़ी पहले हारता है और खेल खेलाता है जैसे चूहे को बिल्ली खेलाती है। बाद में सबकी लेई पूँजी समेट कर नौ दो ग्यारह नहीं, नौ चार तेरह हो जाता है। बुद्धू जुआड़ी वह है, जो पहले लपालप जीतता है और बाद में कर्जा करके भाग खड़ा होता है। बुद्धू जुआड़ियों का चेहरा देखने काबिल होता है। ऐसा जान पड़ता है कि अच्छी तरह किसी मशहूर कम्पनी का बना हुआ जूता खाने को मिला है।

कौड़ी से खेलने वाला हो या तास के पत्ते से, सभी जुआड़ियों के रक्त में एक सी कमी होती है। यह खान्दानी कमी पुश्त दर पुश्त चलती रहती है। कौड़ी से जो खेलता है वह नाल उतराई देता है, तास के पत्ते से जो खेलता है, वह आँख चढ़ाई देता है। नाल उतारने वाले जुआड़ियों की नाल ही नहीं उतारते, इज्जत और चमड़ा दोनों उतार लेते हैं, आँख चढ़ाने वाले लग्घा लगाते हैं और आँख के इशारे से अगल-बगल की हालत बताते हैं। जमाना था जब कौड़ी खेलनेवालों का बोलबाला था। अब तास खेलने वालों का है। कौड़ी का खेल छिपा हुआ था, तास का खुला खेल फरुख्शाबादी है। तास खेलनेवाले थाना पुलिस के पिछाड़ी नही खेलते, अगाड़ी खेलते हैं। एक प्रसिद्ध दार्शनिक का कहना है कि 'मनुष्य एक जबर्दस्त जुआड़ी है। वह निरन्तर अपने आपसे जुआ खेल रहा है।' और मेरी राय में एक दार्शनिक को भी मनुष्य मान लिया जाय तो वह अपने आपसे जुआ तो खेलता ही है, अपने बाप से भी जुआ खेलता है। पुराने जमाने में हनुमान नाम के एक बहुत बड़े राम भक्त कपि हो गये हैं। उनके पास बहुत भारी भरकम पूँछ थी। ये महाराजा रामचन्द्र के दोस्त भी थे। एक बार ऐसा मौका आया कि भीम को इनकी

पूँछ उठाकर सिर्फ दूसरी जगह रख देने की बात आ पड़ी। भीम से पूँछ नहीं उठी वे काँख कूँख कर चुप लगा गये। इस पर हनुमानजी को जब मालूम हुआ कि द्वापर चल रहा है और श्रीकृष्ण का अवतार हो चला है तो वे बहुत खुश हुए और भीम को आशीर्वाद दिया कि 'मैं तुम्हारे भाई के रथ के ध्वज पर बैठ कर सदैव मदद करूँगा। और इस दुनिया में जितने जुआड़ी हैं, तुम सबकी पूँछ उखाड़ कर फेंक दोगे।' इसी आशीर्वाद के भरोसे भीम ने दुःशासन, शकुनी, दुर्योधन और तमाम जुआड़ी कौरवों की पूँछ उखाड़ डाली। आजकल भीम के नाती पोते खतम हो गये। सरकार भीम के बदले कोतवाल रखती है। अच्छा और भीम की तरह नाम कमाने वाला कोतवाल दो चार जुआड़ियों की पोंछ जरूर उखाड़ लेता है। वह पुलिस अधिकारी कभी सफल कोतवाल नहीं बन सकता, जो दस-बीस जुआड़ियों की पोंछ उखाड़कर हुलिया न बदल दे। जुआड़ियों को हवा घोलकर पी जानी पड़ती है, चौबीस घंटे उनके कूँएँ में भाँग पड़ी रहती है। इसलिए उनके लाभ की बात उन्हें समझ में नहीं आती। किसी जुआड़ी के सामने सिद्धान्त बघारना और सब्जी बघारना दोनों बराबर है। जुआ खेलने से हानि हो या लाभ, जिसे जुआ खेलने की लत लग गयी है, वह लात खाने को तैयार हो जायगा, लत छोड़ने को तैयार न होगा। जुआ के बाद शराब का नाम आता है और शराब के बाद वेश्या का। इन तीनों का तोड़ा जहाँ जुटा कि नाश हुआ। वह जुए का अड्डा अड्डे के असली रूप में नहीं, जहाँ शराब की बोतलें न खुलती हों और उस शराब में स्वाद कहाँ, जो आधुनिक मेनका और उर्वशी के हाथ से उड़ेली न जाती हो। जुआड़ी को अनेक रंग बदलना पड़ता है। जब कभी उसके चेहरे पर कालिख पुत जाती है, तब वह काला दिखाई

पड़ता है। जब कभी पुलिस के थप्पड़ों से भेंट हो जाती है, तब वह लाल दिखाई देता है, जब कभी घंटे आध घंटे के भीतर हार जाता है, तब पीला दिखाई देता है और जब उसकी औरत के गहने कपड़े भी बिक जाते हैं तब वह सफेद दिखाई देता है।

जुआड़ियों का पहला बादशाह कौन हुआ, इस सम्बन्ध में अनुसंधान करने वालों में मतैक्य नहीं है, कुछ लोग दुर्योधन का नाम लेते हैं, कुछ दमयंती के पति नल को उजागर करते हैं। स्कूली लड़कों के लिए इतिहास की किताब लिखनेवाले न कभी एक राय प्रकट करते हैं और न कभी एक रास्ते पर चलते हैं, मेरी राय में जुआड़ियों का बादशाह न तो अबतक कोई पैदा हुआ और न पैदा होने का कोई सवाल उठता है। सच पूछा जाय तो सभी जुआड़ी बादशाह और राजाओं के भी राजा होते हैं। राजा सिर्फ देश और धरती हारता है, जुआड़ी लोग अपना सर्वस्व तक हार जाते हैं।

फीचर से जुआ खेलने वाले नम्बरी जुआड़ी होते हैं, इन्हें 'नम्बर' पकड़कर बिना तास-कौड़ी के जुआ खेलने आ जाता है। कोई नम्बर बोल दिया और इस पार या उस पार हो गये। लाख पचास हजार आया या चला गया। तिब्बत के उत्तर मंगोलिया नामक देश है। मंगोलिया नामक देश में टिम्बकटू नामक एक शहर है। जुआड़ियों का वश चले तो वे उन तमाम लोगों को जो जुआ नहीं खेलते, टिम्बकटू भेज दें। मेरा वश चले तो मैं तमाम जुआड़ियों को हवाई जहाज से कांगो के जंगलों या सहारा के रेगिस्तान में छोड़वा दूँ।

पुराणों में जुआड़ियों और द्यूत कर्म का बहुत जिक्र आया है। फुरसत के समय लोग अश्वमेध यज्ञ करते थे, युद्ध में लग जाते थे या जुआ खेलते थे। प्रचीन काल में सोमरस पीकर

जुआड़ी मैदान में उतरता था, इस जमाने में चाय न मिली तो लाज व हया पीकर। युधिष्ठिर ने जुआ खेलने में बहुत नाम पैदा किया था। द्वारिकापुरी का बना हुआ अच्छी क्वालिटी का तास मँगाते थे। उसकी पीठ पर आलपीन से खोद कर संकेत बना लेते थे। जब तास फेटने का अवसर आता था तो हाथ का कमाल दिखाते थे और तमाम जानदार पत्ते अपने पास कर लेते थे। देखते-देखते दूसरी तरफ के लोग अण्टाचित्त हो जाते थे, या लेई-पूँजी गँवा बैठते थे। यह सब पुराणों की बातें हैं। आजकल के लोग इन बातों को समझ नहीं सकते। राजा नल को कौड़ी सिद्ध हो गयी थी। सोरहिया खेलते समय उन्हें अपने आप ज्ञान हो जाता था कि कितनी कौड़ी 'चित्त' या कितनी पट्ट होगी। जिस दिन उसकी यह सिद्धि समाप्त हुई, राजपाट हार गये।

अभी ताजा खबर है। बम्बई में एक आदमी ऐसा पैदा हो गया है, जिसे अपने काले फ्रेम का चश्मा लगाते ही दूसरों के हाथ का अट्ठा, दहला, गुल्ला, बादशाह, एक्की दुक्की दिखाई पड़ने लगती है, इस तास खेलनेवाले ने सैकड़ों की बधिया बैठा दी। एक हैदराबादी ने कर्ण पिशाचिनी सिद्ध कर ली थी, किसके हाथ में कैसा तास है, उसे पता लग जाता था। थोड़े दिन में ही वह दूसरे जुआड़ियों की नजर में पिशाच दिखाई देने लगा।

जुआड़ियों को पुरस्कार में सजा देने के लिए विभिन्न काल में भिन्न-भिन्न सजाओं की ईजाद की गयी थी। कभी आँख निकाल ली जाती थी, कभी नाक काट ली जाती थी, कभी कालिख पोत-कर गधे पर बैठाकर नगर में घुमाया जाता था। आजकल दफा ३, दफा ४ और दफा १३ में दो सौ जुर्माना या ३ महीने की सजा या सिर्फ दो सौ रुपया जुर्माना होता है या कभी-कभी दोनों एक साथ भी होता है। जुआड़ी पुलिस की नस पहचानता है

और पुलिस जुआड़ी की। दोनों को एक दूसरे का गहरा सहयोग प्राप्त रहता है। जब कभी यह सहयोग खण्डित होता है, तो दारोगा जी खुद सजा देने बैठ जाते हैं। हमारे एक जानी-पहचानी दारोगाजी जब किसी जुआड़ी को सजा देना चाहते हैं तो गंदगी से लबालब भरी हुई हँड़िया जुआड़ी की गरदन में लटकाकर हाथ पाँव बाँध देते हैं। थोड़ी देर में जुआड़ी की आई-बाई पच जाती है और वह सारा भेद उगल देता है। कभी-कभी मिर्चे की बुकनी का भी इस्तेमाल किया जाता है। कुछ लोग कोड़े का भी इस्तेमाल करते हैं, मगर वह आधुनिक काल में बेकार है। नकली जुआड़ी पुलिस की हवालात से ही जमानत कराकर छूट जाता है। असली जुआड़ी जेल चला जाता है। जो परम जुआड़ी होता है, वह हवालात और जेल दोनों आता जाता रहता है।

अगर आपके घर में कोई जुआड़ी है तो आप की इज्जत खतरे में है। अगर आपका कोई मित्र जुआड़ी है, तो एक जमानतदार हर समय जुटाये रखिये। न जाने कब आपका मित्र हवालात में रहे और जमानतदार के अभाव में जेल चला जाय। आइये, हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह किसी को अनाड़ी, लबाड़ी और कबाड़ी चाहे जो बना दे, जुआड़ी कभी न बनावे।

# आपको हँसने नहीं आता

जिस प्रकार कुछ लोगों को रोने नहीं आता, ठीक उसी तरह बहुत से लोगों को हँसने भी नहीं आता। हँसना कोई बहुत साधारण बात नहीं है। ऐसे कम सौभाग्यशाली हैं जो ठीक से हँस पाते हैं। ज्यादातर लोग हँसते नहीं, दाँत निपोरते हैं। दाँत निपोरना एक बात है और ठीक से शुद्ध हँसी हँसना बिलकुल दूसरी बात। अगर आपको हँसने नहीं आता, तो सच मानिये कुछ नहीं आता। पर घबड़ाइये नहीं, यदि इसी प्रकार रोते रहे तो धीरे-धीरे आपको हँसना भी आ जायगा।

हँसने के लिए आवश्यक है कि आदमी प्रेम के साथ रोये। खुल कर रोये, और पुक्का फाड़कर रोये। जो पहले रोते हैं, वही बाद में हँसते हैं और उन्हीं का हँसना भी दूसरों को भला लगता है। उस आदमी का हँसना भी कोई हँसना है जो रोये ही नहीं। ऐसा आदमी कभी भी हँसी में तरक्की नहीं हासिल कर सकता।

एक बार अकबर ने बीरबल से पूछा—हँसना कौन जानता है बीरबल ? बीरबल रोकर बोले—यही हुजूर, जो रोना भी जानता हो। और बीरबल के यकाएक रोने की-सी शकल से तमाम दरबार के लोग हँसने लगे। बीरबल ने पुनः कहा—देखा, आपने ? यदि मैं रोया न होता तो किसी को हँसी आती ही नहीं। जिसे रोना आता है, वह हँसी आने पर जरा मजे में हँसता है। हँसता ही नहीं, अपनी हँसी से लाभ भी उठाता है। हँसना काफी कठिन काम है, इसीलिए वह साधारणतः सभी लोगों को आसानी से नहीं आ पाता। यदि आप चाहते हैं कि आपको हँसना आ जाय तो पहले इसकी उचित ट्रेनिंग लीजिये। ट्रेनिंग लेने के लिए बहुत दूर, लंदन या वाशिंगटन नहीं जाना पड़ेगा, आप सिर्फ बनारस चले आइयेगा। आपकी शिक्षा पूरी हो जायगी। यहाँ मनहूस रहने या बसने नहीं पाते। उन्हें या तो हँसोड़ बना लिया जाता है या फिर मारपीट कर भगा दिया जाता है। हँसी का ढंग सिखाने के यहाँ कदम-कदम पर विद्यालय हैं। पहले उनमें भरती होनेवाले को रोना पड़ता है, फिर वह हँसने लगता है।

हँसना सीखने के लिए जरूरी है कि आप अपने दाँतों को, जिन्हें खींस कहते हैं, निपोरना सीखें। पहले कुछ हलके निपोरें फिर धीरे-धीरे। बाद में धड़ाधड़ अभ्यास बढ़ाते जाइये। हँसने आ जायगा। सिर्फ खींस निपोरने से ही काम नहीं चलेगा, ठहाका भी लगाना होगा। सबेरे उठकर आलाप लिया करिये या थोड़ा रोया कीजिये। यह रुदन धीरे-धीरे फेफड़े को इतना मजबूत कर देगा कि आप ठहाका लगाने में बाजी मार ले जायँगे। एक बार ठहाका मार कर दो सेकेण्ड रुक जाइये। फिर जोर से ठहाका मारिये। इसी प्रकार दस बार रुक कर दस ठहाका मारिये, तब खींचकर एक साँस लीजिये। जहाँ दो-चार बार आपने ऐसी

तगड़ी हँसी हँसा कि लोग आपका लोहा मान लेंगे और घूम-घूम कर कहेंगे कि 'वह तो बहुत भयंकर हँसी हँसता है।' खाने-पीने में जब हम आप कोई रू रियायत नहीं करते, तो हँसने में ढील देने से क्या लाभ ?

कुछ लोगों को चाहे जब आप देखिये, हें हें की मुद्रा में दिखाई देंगे। ऐसे भले लोगों से आप दूर रहिये। यदि वे चिपकना भी चाहें तो आप जरा सरक कर बैठिये। इन दाँत-निपोर लोगों का काम ही होता है लोगों को रोना सिखाना या रुलाना। जो लोग हर समय हँसने की मुद्रा बनाये रखें, आप सच समझिये, उन्हें सिर्फ रोने ही आता है। भला हर समय खीस को फैलाये रखना कोई अच्छा करतब है ? हँसने वाले जो चैम्पियन होते हैं, जरा समझ-बूझकर हँसा करते हैं। यह नहीं कि आव देखा न ताव, किसी की गाली भी सुनी, बजाय उलटकर गाली देने के हँसने लगे—हें हें हें। जो 'मास्टर ऑफ ह्यूमर' होते हैं उनकी नाक पर हँसी हर क्षण बैठी रहती है। उसने मौका देखा कि नाक से उतर कर होंठ पर चली आयी और आसानी से मुँह खुल गया।

कुछ लोग हँसने में काफी बेहया होते हैं। बात-बात पर हँसते हैं। जो हँसी के राजा होते हैं वे तो उस समय ऐसा बकलोल बन जाते हैं, गोया उनके सामने बैठे लोग व्यर्थ ही उनकी बात पर हँस रहे हैं। और उन्होंने जो बात कही है, कोई खास हँसने की बात नहीं है। ऐसे लोग हास्यरस के पंडित होते हैं और भली-भाँति हँसना जानते हैं। इनको दूसरों को हँसाने में ही आनन्द आता है।

हँसी एक दवा का नाम है। बहुत सस्ती दवा है, इसलिए लोग इसे दुरदुरा देते हैं। यदि आपको हँसी नहीं आती हो,

आप तब भी अपनी दवा कराइये। मगर तब कोई दूसरी दवा कराइये, अक्सर क्षय के आसन्न रोगियों को हँसी नहीं आया करती। हँसी कई प्रकार की होती है, एक हँसी में दाँत नहीं दिखाई देता, जरा-सी नाक और भौंके बीच रेख-सी खिंच जाती है। यह कामचलाऊ हँसी है। दूसरी हँसी में बत्तीसों दाँत ही नहीं, गले की घण्टी तक दिखाई पड़ने लगती है। इसे व्यर्थ की हँसी या ठहाकामार हँसी कहते हैं।

तीसरी हँसी, हँसी नहीं, मुसकान कहलाती है। इसपर लोग कुरबान होते हैं, निछावर होते हैं, और कभी-कभी पागल तक हो जाते हैं। नायिका की मुसकान बहुत खराब समझी जाती है। पुराने कवियों की नायिकायें मुसकाती हैं और आजकल के कवियों की नायिकाएँ खिलखिलाती हैं। खिलखिलाकर हँसना अशिष्ट समझा जाता है। शिष्ट वैद्यों का कहना है कि खुल कर हँसना और खुलकर छींकना दोनों लाभप्रद होता है। जिन्हें खुल-कर छींक न आती हो, उन्हें सुँघनी लेनी चाहिये। और जिन्हें खुलकर हँसी न आती हो, हास्यरस की कविता सुननी चाहिये। सबको चटपट हँसी नहीं आ जाती, वातावरण बनाना पड़ता है। कुछ लोगों को दूसरों को हँसते हुए देखकर हँसी आती है।

समझ-बूझकर हँसना चाहिये। बिना समझे-बूझे हँसने से रोना पड़ जाता है। जहाँ देखिये कि मनहूसों की संख्या अधिक हो, सँभलकर और मौका देखकर हँसिये। मनहूसों को हँसी अच्छी नहीं लगती। दूसरों को हँसते देखकर उनकी छाती फटने लगती है। खुद तो हँसी के सुख से कोसों दूर, दूसरों को भी सुख नहीं लूटने देते, ये पाजी लोग।

दो मित्रों में हँसने की बाजी लगी। एक मित्र सिर्फ मुसकराता और तीन-चार दाँत दिखाता रहा। काफी देर तक उसकी यह

क्रिया चलती रही। दूसरे ने लगातार तीन-चार ठहाके लगाये और उसकी हँसी समाप्त हो गयी। इसी प्रकार कुछ देर तक ठहाका लगाते-लगाते, वह अपने आप थककर बोल गया। मुस्कराकर हँसनेवाले की जीत हुई। इसलिए थोड़ा-थोड़ा हँसना चाहिये। इस प्रकार हँसी का स्टाक बचा रह जाता है।

सबको हँसना सीखना चाहिये। सच कहता हूँ, आपको तो बिलकुल हँसना नहीं आता, आप इसी लेख के पठन-पाठन से हँसना सीखिये।

# आदमी बनो आदमी

'आदमी बनो यार आदमी' कहते हुए जब मेरी पीठ पर पीछे से मेरे मित्र ने एक धौल दी तो मुझे अचानक पड़नेवाली मार ने चिहुँका दिया। मैं नहीं समझ पाया कि आखिर मैं आदमी क्यों नहीं हूँ। और यह एक भले आदमी द्वारा मार क्यों पड़ रही है?

'जरा समय से उठा करो और हाथ-मुँह धोकर ठण्डे-ठण्डे कुछ काम कर लिया करो। आज मुझे बाबू साहब के यहाँ दावत में जाना है।' मित्र ने आवेश के स्वर में बोलते हुए कहा।

'मैं तो नहीं जाता। ६ बजे पार्टी है। ६ बजकर १ मिनट पर भी पहुँचने में बेइज्जत हो जाने का डर है। फिर पार्टी में जाइये तो सीधे बैठिये, नाक सीधी रखिये, बात सँभल-सँभल कर कीजिये, दो रूमाल रखिये तब कहीं आप शरीफ आदमी कहे जायँगे, अन्यथा आप की आदमियत में बट्टा लग जायगा।' मैंने दोस्त को उत्तर दिया कि यह सब खटराग मुझसे नहीं होने का।

मित्र हँसने लगा। बोला—भला आदमी बनने के लिए जरूरी है कि जिसके यहाँ दावत में जाइये, समय से जाइये। माननीय बाबूजी के यहाँ दावत खाने वाले अधिकतर इसी संकट के कारण नहीं जाते कि वे समय की पाबंदी चाहते हैं। शराफत

इसमें है कि किसी सभ्य सोसाइटी में बैठिये तो आप नाक साफ करके टेबुल-क्लाथ गन्दा न करने लगें। अन्यथा भले आदमियों की नाक सिकुड़ जायगी।

हमारे नगर के एक प्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्री जो एक प्रतिष्ठित कालेज के प्रिंसिपल हैं, नाक से गन्दगी निकाल कर घण्टों तक उसे उँगलियों के बीच लिये रहते हैं। उन्हें इस क्रिया में न जाने कैसा आनंद मिलता है। ठीक इसी तरह की गंदी आदत है—नाखूनों को बढ़ाने और उनको लम्बा करने की। नाखूनों में गन्दगी भरी रहती है और लोग साफ नहीं करते। उसी हाथ से खाना खाते हैं। शिष्ट और भले आदमी के दरबार में बैठकर नाखूनों को काटना और दाँतों से उन्हें काट-काटकर अलग करना भी भले आदमियों की निशानी नहीं है। हमें सर्वदा ऐसी गंदी हरकतों से बचना चाहिये।

मुझमें यह बहुत दिनों तक आदत बनी रही कि जब परिवार में कोई आता था तो मैं चाहता था कि वह जल्द से जल्द वापस लौट जाय। इसका कारण यह था कि मैं खुद न तो रिश्तेदारों के यहाँ जाता था और न किसी इष्ट मित्र के यहाँ। मेरे एक मित्र ने मुझे इस यात्रा के सुख से परिचित किया और मैं अब लोगों का आदर करता हूँ।

मेरे मित्र ने ही एक गुण मुझे यह भी सिखाया कि खुद का मकान हो या किसी दूसरे का, जहाँ भी जूते उतारिये एक कतार में लगाकर रख छोड़िये। इस आदत के अभाव में मैं अपने कई जोड़े जूते गायब कर चुका हूँ। भूसे की तरह जूतों के ढेर में अपने जूते का पता नहीं चलता और आदमी जूता खोकर चला जाता है।

'चलो यार, मेरे यहाँ जलपान कर लेना।' रविवार को मेरे मित्र ने मुझे टोका। मैंने स्वीकार कर लिया। धीरे-धीरे उसने

हर रविवार को सिनेमा चलने का भी निमंत्रण देना प्रारम्भ कर दिया और सिनेमा देखने का आदी हो गया। कुछ दिनों में ही मुझे मित्रों के ही घर चाय-जलपान करने में स्वाद मिलने लगा और मैं उन्हीं के पैसे पर सिनेमा देखने लगा। जिस दिन कोई मित्र नहीं मिलता और सिनेमा नहीं देख पाता तो मुझे झल्लाहट होती। फल यह निकला कि मैं परमुखापेक्षी बन गया और अब तक कई मित्रों की मित्रता से वंचित हो चुका। ये दूर हो जाने वाले सभी मित्र मुझे कोसते हैं कि मैं आदमी नहीं हूँ, शैतान हूँ।

आदमी बनने के लिए सिर्फ शरीर और कपड़ा ही स्वच्छ नहीं रखना होता, मन भी साफ रखना पड़ता है। एक मेरे मित्र प्रोफेसर हैं और धीरे-धीरे अपने अध्यवसाय से नाम भी पैदा कर चुके हैं। जब हम लोग उनके साथ घूमने-टहलने निकलते हैं तो वे हम लोगों की रंग-बिरंगी पोशाकें, शूट और कमीजें देखकर मुस्करा भर देते हैं। खुद सादा साफ धवल कुरता—पायजामा ही पहनते हैं। जब मैं उनके घर पर एक दिन पहुँचा, देखकर दंग रह गया कि उनका मकान चमक रहा है और करीने तथा सादे ढंग से खूब अच्छी तरह सजा रखा गया है। प्रोफेसर साहब का कमरा किताबों से सजा हुआ था और वे खुद भी काफी सजावट पसन्द करते थे। उनके कमरे में पहुँचते ही मन प्रसन्न हो गया। महापुरुषों के चित्रों से कमरा खिल रहा था। उन्हें लोग घर और बाहर भला आदमी ही कहते हैं।

इसलिये मेरे जो भले मित्र हैं, अक्सर राय दिया करते हैं, यार, आदमी बनो आदमी। क्योंकि उनकी समझ में मैं अभी अधूरा आदमी हूँ और पूर्ण आदमी बनने के लिए मुझे अभी काफी कोशिश करनी है।

❀

# अखबार पढ़िये

पिछले साल भर से दो काम मैं बहुत प्रेम से करता हूँ, पहला दोपहर का दिव्य भोजन, दूसरा सुबह-शाम के अखबार का अवलोकन ! मैं उन लोगों में से नहीं हूँ जो अखबार पढ़ते हैं। मैं उन लोगों में से हूँ जो अखबार चाट जाते हैं। पढ़ते हैं वे लोग, जिनकी आँख कमजोर होती है। मेरी आँख इतनी कमजोर नहीं है।

एक साल पहले मैं अखबार को सिर्फ पढ़ लेता था, तब मैं बेकार नहीं था। मुझे बहुत व्यस्त रहना पड़ता था। सुबह हुई नहीं कि हाय तोबा आफिस जाने की मच जाती। नहाओ धोओ, खाओ, पीओ, कपड़ा बदलो, आफिस पहुँचो। ६ बजते-बजते लौटो भी तो दफ्तर की फाइलों पर 'आटोग्राफ' देने बैठ जाओ— आप ही सोचिये, ऐसी हालत में अखबार पढ़ने को कैसे मिलेगा ? और अब ? अब जब कि मैं दफ्तर से हटा दिया गया हूँ, सिर्फ अखबार पढ़ता हूँ। पढ़ता ही नहीं, उसे चाट कर तब दम लेता हूँ।

आप सोचते होंगे, मैं जीभ लगाकर चाटता होऊँगा ? जी नहीं। मैं आँख से चाट जाता हूँ। अखबार मिलने पर पहले

अखबार का नाम नहीं पढ़ता। उसके ऊपर लिखी रजिस्ट्री संख्या, फिर टेलीफोन नम्बर पढ़ता हूँ, तब नाम पढ़ता हूँ। फिर नाम के नीचे सम्पादक का नाम पढ़ता हूँ। उनके नाम के नीचे दो मोटी लकीरों के बीच तारीखें लिखी रहती हैं। फिर उनको पढ़ता हूँ और यह इतमीनान कर लेने के बाद कि ताजा अखबार है, उसमें छपे समाचार पढ़ता हूँ। पहले सबसे मोटी 'हेडिंग' देखता हूँ, फिर उससे पतली, फिर उससे पतली और तब सबसे पतले अक्षरों में लिखी खबरें। इस प्रकार पढ़ते-पढ़ते, नहीं-नहीं जनाब, चाटते-चाटते कहिये, मैं दूसरा पन्ना उलटता हूँ, तीसरा उलटता हूँ, चौथा उलटता हूँ, पाँचवाँ, छठाँ, सातवाँ, आठवाँ। इस प्रकार जब सब एक-एक लाइन पढ़ जाता हूँ, प्रिंट लाइन पढ़ता हूँ और मुद्रक-प्रकाशक के नाम के साथ-साथ उस, प्रेस का नाम भी पढ़ जाता हूँ, जिसमें वह अखबार छपा होता है। जब अखबार में पढ़ने को कुछ नहीं बचता, तब पहले पेज से विज्ञापन पढ़ना शुरू करता हूँ। इस पढ़ाई में कुछ अभिनेत्रियों की तस्वीरें भी देखने को मिल जाती हैं। विज्ञापन भी जब पूरी तरह देख जाता हूँ, तब एक बार उस अखबार की मोटी-मोटी 'हेडिंगों' को कोसता हूँ। सच, यदि ये न होतीं, तो आधा घण्टा का मैटर और पढ़ने को मिल जाता।.....सच कहता हूँ, अब तक कई हजार बार सम्पादक का नाम पढ़ गया हूँ और कई हजार बार टेलीफोन का नम्बर! पर आप इसमें से कुछ पूछियेगा तो बतलाने में असमर्थ रहूँगा। मुझे यह सब याद नहीं रहता और न याद रखने के लिए मैं यह सब पढ़ता ही हूँ।

मेरे एक मित्र हैं वह भी अखबार पढ़ते हैं। पर वह अखबार खरीद कर नहीं पढ़ते। उनका कहना है कि खरीद कर अखबार पढ़ते हैं वे, जिन्हें अखबार पढ़ने नहीं आता। उनका कहना है कि

उनको अच्छी तरह अखबार पढ़ने आता है। वे पान पर दिन भर में तीन रुपये खर्च करते हैं। बाप-दादों का माल दबोचे बैठे हैं, इसलिए उनका खयाल है कि दोस्तों को पान-पत्ता खिलाने में कोई कोर कसर नहीं करनी चाहिये। पर वे अखबार कभी नहीं खरीदते? माँग कर पढ़ लेते हैं। कहते हैं, अखबार क्या खरीदा जाय? अखबार भी कोई खरीदने की चीज़ है? अखबार खरीदते हैं वे, जिनके पास इफरात पैसा है। दोस्त का कहना है कि वे सब कुछ बने, पर फिजूल खर्च नहीं बने।

मैंने अपने दोस्त से एक बार कहा—'यार, तुम सिर्फ़ अखबार के लिए दूसरों के सम्मुख क्यों दाँत निपोर देते हो? कोई हाकर पकड़ लो, सुबह शाम दे जाया करेगा।' बोले—'वाह, गोया अखबार माँगना कोई जुर्म है! अखबार देने में किसको झिझक हो सकती है।' मैंने कहा—'लेकिन कितनी अपनी 'इन्सल्ट' (अपमान) है। तुम अखबार पढ़ने के लिए रामखेलावन तमोली की दुकान तक चले जाते हो।' हँसकर बोले—'बुद्धू हो बुद्धू। यार, उसकी दुकान पर जाता हूँ। थोड़ी देर बैठता हूँ। यार-दोस्तों से सलामी दगवाता हूँ, उनके कुशल लेता हूँ, अपने देता हूँ। दस-पाँच आने का पान खाता खिलाता हूँ। अखबार भी पढ़ लेता हूँ। और साला इधर कोई अपनी गली में मँगवाता भी तो नहीं। तमोली है तो क्या? आजकल तमोली, ठाकुर, बाभन सब बराबर हैं।'

और दोस्त महाशय, बरसों से कई हजार रुपये पान-पत्ते पर खर्च कर चुके हैं, पर उन्होंने कभी एक पैसा भी अखबार पर नहीं खर्च किया। पहले मुझे भी ऐसा ही रोग था। मैं अखबार खरीदता नहीं था। ठीक वक्त पर अखबार के दफ्तर के सम्मुख पहुँच जाता था और बोर्ड पर चिपके ताजा अखबार की एक-एक पंक्ति

प्रेम से चाट जाता था। जब पाँव दुख जाते तो बगल में बैठे चपरासी से बात होने लगती और दो मिनट में उसकी बेंच पर बैठकर पाँव हलका करने लगता। जब पाँव ठीक हो जाते, दुबारा बोर्ड के सम्मुख खड़ा हो जाता। बोर्ड पर चिपके अखबार को पढ़ने के लिए कई तरह के लोग आते। कुछ सन्यासी व कुछ छात्र होते, दो प्रोफेसर भी नियमित आते। किसी दुकानदार को बोर्ड पर चिपके अखबार को पढ़ते नहीं देखा। देखा भी तो उन्हीं लोगों को, जो विक्टोरिया पार्क से आकर अखबार पढ़ते या अखबार पढ़कर विक्टोरिया पार्क जाते। इन लोगों के पास दूसरा धन्धा नहीं होता था। ये मेरी ही तरह बिलकुल बेकार होते थे और शायद इनके पास पैसा भी नहीं होता था।

मैं कुछ दिन दुख-भंजन पुस्तकालय में 'लाइब्रेरियन' था। वाचनालय भी चलाना पड़ता था। मेरे टेबुल के सम्मुख ६० गज लम्बे में कई सौ आदमी बैठकर अखबार, देखते, पढ़ते और चाटते थे। उनमें से कुछ लोगों को बड़ी निराशा होती थी कि ताजा अखबार पहले उन्हें नहीं मिलता, अपितु मैं पढ़ने लगता था। ये अखबार के प्रेमी काफी देर तक मेरी तरफ टुकुर-टुकुर ताकते रहते थे, जब मैं पुस्तकालय की मुहर लगाने के बाद टेबुल-पर अखबार फेंकता था, तब ये लोग उसपर बाज की तरह टूटते थे।

प्रोफेसर सहदेव सहाय भी अखबार के ऐसे ही पाठक हैं। घर पर सुबह अखबार पढ़ने प्रतिदिन आ धमकते हैं। 'क्या हो तिवाड़ी, कहाँ हो भाई? अभी सोये ही हो क्या?'—आते ही आवाज लगाते हैं!

'सुना मुहल्ले में रात में पुलिस आई थी?'

'क्यों?' मैं पहुँचकर पूछता। वे भी मेरे साथ ही बैठ जाते।

'यही तो नहीं मालूम ! अभी अखबार आया था नहीं, उसमें जरूर होगा ? यह समाचार तो होगा ही ?'

और मैं अखबार खुद देखने की इच्छा को बलि देखकर, ताजा अखबार उनके हाथ पर रख देता। वे बहुत शाइस्तगी और शांति से उसे चाट जाते। जब मैं दो घंटे बाद नहाने की तैयारी में लगता, तब वे बोलते—'आज तो अखबार में कुछ नहीं है ! यार तिवाड़ी मैं चला। 'अच्छा भई' कह भी देता हूँ पर वे उठते-उठते आध घण्टा लगा देते हैं। मेरा घर वाचनालय बन गया है। कुछ दिन तक राम न्यौछावर चोपड़ा, जिनका दफ्तर का नाम आर० एन० चोपड़ा है, अपने नाम से दफ्तर का अखबार मँगाते रहे। शाम की डाक में अखबार भी उनके घर पहुँच जाता था। कुछ दिनों तक मैं अपने एक पड़ोसी के अखबार-प्रेम से बहुत परीशान था। उनके ७ लड़के हैं। घर पर अखबार पहुँचाने वाले की साइकिल पहुँची कि उनका कोई न कोई प्रतिनिधि आ पहुँचा। और तब तक वह प्रतिनिधि न टलता, जब तक उसे अखबार प्राप्त न हो जाता। किन्तु उनकी एक भी संतान अखबार को वापस नहीं ले आती। मेरा अखबार मेरे घर तभी पहुँचता, जब मैं खुद उनके घर जाता और आध घण्टा गप्प करने के बाद फटे-चिथे अखबार के साथ लौट आता।

मैं एक ऐसे सम्पादक को जानता हूँ जो अपने घर अखबार से चूल्हे जलाने का काम लिया करते थे। अखबार के दफ्तर में काम करनेवाले एक प्रूफरीडर को जानता हूँ जो घर पर अखबार उलटने को कौन कहे, उसे छूते भी नहीं थे। जब अखबार का ढेर लग जाता था, तो दस आना सेर के भाव से बेच देते थे। कहते थे—अखबार में इतनी गलतियाँ रहती हैं कि उसे पढ़ने का जी नहीं होता।

उन लोगों के लिए अखबार बड़े काम की चीज है, जो उसमें 'बाण्टेड' का कालम पढ़ने के लिए उन्हें खरीदते हैं। मेरा भतीजा पूरे एक साल तक दूसरे के घर से बासी अखबार उठा ले आता था, और दो-दो घण्टे तक दुहरा-तिहराकर 'बाण्टेड' पढ़ा करता था, तब भी उसे मरजी के मुताबिक एक भी 'बाण्टेड' नहीं मिला। भाव पढ़ने के लिए भी अखबार पढ़ा जाता है, पर सोना, चाँदी या व्यापार का पृष्ठ देखने के बाद उसमें कोई खास वस्तु देखने को नहीं बच जाती। मेरे चाचाजी सिर्फ राशिफल देखकर अखबार रख देते हैं, उनके कथनानुसार दुनिया भर की खुराफात देखकर क्यों दिमाग गन्दा किया जाय। खेलाड़ी सिर्फ खेलों की खबरें पढ़ते हैं, कवि लोग दूसरों की कविताएँ पहले देखते हैं, और सिनेमा प्रेमी फिल्मों के विज्ञापन।

आपको जानकर अचरज होगा कि १०० पाठकों में से ९० पाठक मुफ्त पढ़ते हैं, ८ पैसा लगाते हैं। २ हाकरों से दो पैसे में पढ़कर फिर लौटा देते हैं। कुछ लोग अखबार खरीदकर पढ़ लेते हैं, फिर यदि सफर में हुए तो ट्रेन के डब्बे में, घर पर हुए तो बैठक में, सड़क पर हुए तो दूसरों के हाथ में अपना अखबार बेतकल्लुफी से छोड़ देते हैं। अखबारों में सबसे अधिक छींटे पढ़े जाते हैं, फिर बलात्कार, हत्या, चोरी, प्रेम की खबरें, तत्पश्चात युद्ध के समाचार। सबसे कम भाषण और उससे भी कम अग्रलेख पढ़ा जाता है। अपनेराम अखबार प्रेमियों को बार-बार सलाह देंगे कि सीना उतान रखने के लिए आप कुछ पढ़िये या मत पढ़िये, अखबार जरूर पढ़िये, और चाहे जैसे भी पढ़िये।

# नकलची

नकलची यद्यपि मशालची का तुक है, पर सच बात यह है कि नकलची मशालची नहीं होता। दुनिया में बहुत कम लोग हैं जो मशालची होते हैं, पर सभी लोग नकलची अवश्य होते हैं। जन्म लेते ही बच्चा माता-पिता की नकल शुरू कर देता है। वह दूसरों का मुँह चिढ़ाने से लेकर सलाम बजाने तक की नकल करता है। बच्चा यदि नकल करना न सीखे तो वह कुछ भी नहीं कर सकता, न तो अपना नाम रोशन कर सकता है और न अपने वालिद का।

नकल करना एक कला है। जो लोग इस कला को बला समझते हैं, उनका बहुत कम भला होता है। कला को आनन्द की वस्तु समझना चाहिये। इसलिए नकल करने में भी आनन्द का अनुभव करते रहना चाहिये। कलाओं की संख्या ६४ है पर यह नकल करने की कला ६५ वाँ स्थान रखती है। जो लोग नकल करना नहीं जानते, वे कला-विहीन होते हैं।

जीवन में नकल करना असल काम करने से अधिक अच्छा और आसान होता है। कुछ लोग दवाओं की नकल करते हैं। असल वस्तु को गायब कर नकल भर देते हैं। कुछ लोग तो इतने अधिक बुद्धिमान होते हैं कि असल नकल के चक्कर में न पड़ कर, कुछ ऐसा काम अवश्य करते हैं, ताकि नकल भी न हो और असल भी न रहे। ऐसे लोग जीवन में जल्दी सफल हो जाते हैं।

अध्यापक दीक्षा में नकल करते हैं, लड़के परीक्षा में। नकल करते हैं सभी लोग। कोई छुप-छुप कर नकल करता है, कोई दिन दहाड़े ललकार कर। सम्पादक अखबार की नकल करते हैं, लेखक किताब की। जो लेखक जितनी भली प्रकार नकल करेगा, साहित्य में उसका उतना ही दखल होगा। शौकीन लोग फैशन की नकल करते हैं। तस्वीर मार्का छींट पहननेवाले युवक युवतियों की नकल करने लगे हैं और युवतियाँ हैं कि बाल कटाकर बुशशर्ट पहनकर युवकों की नकल कर रही हैं। जो लोग कचाई के साथ नकल करते हैं, उन्हें नकलची कहा जाता है, जो ठीक-ठीक नकल करते हैं, उन्हें कहनेवाले मशालची कहते हैं।

परीक्षा में जो लोग नकल करते हुए पकड़ लिये जाते हैं, वे अधकचरे नकलची होते हैं, जो नकल करने की कोशिश में पकड़े जाते हैं, वे परम खूसट नकलची होते हैं! नकल करते समय जो इतने तल्लीन हो जाते हैं कि नकल करने का ध्यान ही नहीं रहता, वे मूर्खता-पूर्ण नकल करते हैं। नकलची हिरण की तरह चौकन्ना रहता है, सभापति की तरह गरूर में। नकल कम करनी चाहिये, पकड़े न जाने का प्रयत्न अधिक। प्रोफेसर वही सफल होता है और उसी को प्रसिद्धि भी मिलती है, जो विद्यार्थी जीवन में तगड़ा नकलची होता है। भूतपूर्व नकलची प्रोफेसर नकलची छात्र को जरूर पकड़ता है। परीक्षा में नकल करने के लिए

न लिखे कि वह नकल कर रहा था। निरीक्षक लाख चिल्लाता रहे, परीक्षार्थी यदि वह अच्छा नकलची है, बराबर कहता रहेगा, 'जनाब मैंने नकल नहीं की।'

नकलची मनोविज्ञान का पण्डित होता है। नकलची लड़कियाँ साहसी होती हैं। इसीलिये पक्का नकलची वही होता है, जो थोड़ा उद्दण्ड और दृढ़ हो। साथ ही मनोवैज्ञानिक भी। लड़कियाँ नकल करती हैं तो सुन्दर लगता है। लड़के नकल करते हैं तो बहुत बुरा लगता है। लड़कों का नकल करना बुरा माना जाता है, लड़कियों का नकल करना आवश्यक।

नकल का अर्थ 'स्वांग' होता है। समाज मे वे लोग पैसा काटते हैं, साथ ही इज्जत भी; जो नकलची होते हैं या भलीभाँति स्वांग करते हैं। नकलची की खोपड़ी सीधी होती है, जो नकल करना नहीं जानता, उसकी खोपड़ी औंधी हो जाती है। यदि आप पक्के नकलची हैं और नकल करना अपना परम कर्तव्य समझते है तो निश्चित ही आप मूर्ख नहीं हैं। और यदि आप मूर्ख नहीं हैं तो आप पर इतना लम्बा लेख लिख कर मैंने कुछ बुरा काम नहीं किया है। सच-सच बतला दूँ, मैं भी पक्का नकलची हूँ, क्योंकि मैंने यह लेख एक दूसरे लेख से नकल करके लिखा है।

# जाड़ा

महीना में फागुन, वारों में रविवार और मौसम में जाड़ा की तारीफ की जाती है। जिन्हें पहाड़ की हवा पसन्द है वे गरमी की छुट्टी पसन्द करते हैं। जिन्हें बादल, बिजली, वर्षा पर शायरी करनी पड़ती है, वे बरसात को मौसम की रानी कहते हैं। मुझे तो जाड़ा पसन्द है। अव्वल, गरमी-बरसात स्त्रीलिंग हैं, जाड़ा व्याकरण से पुलिंग है। दोयम, जाड़ा शब्द 'ज' से शुरू होता है और जलेबी का पहला अक्षर 'ज' है। सोयम, जाड़ा जब तक नहीं शुरू होता, मुझे कुछ लिखने-पढ़ने की इच्छा नहीं जागती।

सही बात यह है कि आपका लीवर खराब न हो तो आप जाड़ा में खूब खा-पी सकते हैं। शरीर अष्टावक्र की भाँति न हो तो अच्छा पहन-ओढ़ सकते हैं और हाथ-पाँव माकूल ढंग से काम कर सकते हों तो खेल-कूद सकते हैं, तास-पत्ता खेल सकते हैं, बाग-बगीचा घूम सकते हैं। जाड़ा में ससुराल जाने पर पेट खराब होने का भय नहीं रहता। जाड़ा में सिर्फ ३ बार क्यों, तेरह बार मुँह जूठा किया जा सकता है। हर समय मुँह जूठा रहे तब भी कोई खराब बात नहीं है। जाड़ा में जानवर की तरह आदमी भी १८ घंटे पागुर कर सकता है।

मेरे एक पड़ोसी हैं। हैं तो कई, मगर जिनके बारे में लिख रहा हूँ उनका मकान मेरे मकान की पीठ के भरोसे खड़ा है। आपको सिर्फ जाड़ा का मौसम पसंद है। आपके घर आठ महीने तरह-तरह के भोजन का चर्चा चलता है, सिर्फ चार महीना लोग खाते-पीते हैं। चने का शोरवा, गाजर का हलवा, पिस्ते की बरफी, काजू का कलेवा, मलाई की पूड़ी, प्याज की पकौड़ी, सूरन का अचार, आलू के पापड़, गोभी की सब्जी, परवल की कलौंजी, गरी की गिलौरी वगैरह-वगैरह बनती रहती है। जिस दिन जो चीज बननेवाली होती है, चार रोज पहले से उसका चर्चा शुरू हो जाता है। अगर मेरे पड़ोसी के घर आप किसी जरूरी काम से चले गये तो जब तक आप धीरज के साथ उनकी भोजन-प्रियता की बाबत उन्हीं की जबानी पूरी बात न सुन लेंगे, आपका काम नहीं होगा। अगर कहीं आपने कह दिया कि मैं तो 'जाड़े में दो-चार फुलके और मूँग की दाल लेता हूँ', बस आपका बना काम भी बिगड़ जायगा। आधा घंटा तक आपको खाने-पीने की बाबत उपदेश सुनना पड़ेगा। अगर आपने 'हाँ' में 'हाँ' मिला दी तो शाम के भोजन पर भी बुलाये जा सकते हैं।

कुछ लोगों को खाने-खिलाने का ही शौक होता है। डँटकर खाया, और दूसरे को खिलाने का मौका मिला तो तब तक खिलाते रहे, जब तक वह टें न बोल दे। रही हजम करने की बात; सो कुछ लोगों का पेट तो ऐसा होता है कि जाड़ा की कौन कहे, बारह महीने दूसरे का कुछ भी हजम कर सकते हैं। मगर अपनेराम सिर्फ जाड़े में मनपसंद चीज मिली तो हिंगाष्टक चूर्ण के सहारे कुछ न कुछ जरूर हजम करने का विश्वास दिलाते हैं।

कभी-कभी ऐसे लोग भी मिल जाते हैं जो खिलाने-पिलाने का शौक रखनेवालों को पस्त कर देते हैं। ऐसा कमरतोड़ भोजन

करते हैं कि चौका साफ हो जाता है। रसोई घर में चूहे दण्ड बैठकी करने लगते हैं। जाड़ा में ऐसे लोगों को भूलकर भी निमंत्रण नहीं देना चाहिये। ३६ पूड़ी और ६३ लड्डू खाने के बाद भी रायता के पुरवे पर पुरवे उलटनेवाले भुक्खड़ भारत में अनेक हैं।

कुछ लोगों का खयाल है कि जाड़ा में कुछ भी खाया और पचाया जा सकता है। अपनेराम का खयाल भी कुछ ऐसा ही है। पर किसी आरोग्य शास्त्री की जुबान पकड़ने के लिए पत्थर खाकर नहीं पचाया जा सकता। कड़ी से कड़ी चीज़ जाड़े में पच जाती है। प्राकृतिक चिकित्सक गाजर खिलाकर पचा सकते हैं। वैद्यजी प्रातःकाल मूली खिलाकर पचा जाने को बाध्य कर सकते हैं। डाक्टर अमरूद के बीज भी पचा लेने का प्रबंध कर सकते हैं। जाड़ा अच्छी तरह पड़ रहा हो तो आदमी गरमागरम समूसे, पकौड़ी, छोले, दही-बड़े, दालमोठ और दलबेसन के लड्डू तह पर तह पेट में रखकर बखूबी डकार ले जा सकता है।

जाड़ा दूसरे मौसम और महीनों का राजा है। जो लोग आलसी और जी चोर हैं, उन्हें इस मौसम में अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़ता। दिन इतना छोटा होता है कि काम के घंटे अधिक नहीं निकल पाते। जाड़ा में पतला आदमी भी चार महीने तक मोटा हो जाता है। ऊनी कपड़े उसके शरीर की नाप-जोख करते हैं। जाड़ा कंजूसों के लिए नहीं है। जिनका कलेजा एक हाथ का हो, वही जाड़ा का खर्च सँभाल सकते हैं। जाड़ा लगा और खर्च बढ़ा। कपड़ा, जूता, ओढ़ना, स्वेटर, कंबल, रजाई मँगानी ही पड़ती है। अगर जाड़ा न आता तो घर में इतनी जरूरी चीजें न आ पातीं।

गरमी में लोग सूँघते हैं, बरसात में चखते हैं, जाड़ा में खाते हैं। गरमी में सिर्फ देखते हैं, बरसात में देखते भी हैं और देख-देखकर तरसते हैं, जाड़ा में देखते हैं, देखते-देखते पी जाते हैं। जाड़ा पीने का मौसम है। जो कभी नहीं पीते, जाड़ा में जरूर पीते हैं। अपनेराम जाड़ा में सुबह से शाम तक पीते हैं। कभी गरमागरम पीते हैं, कभी कुछ ठण्डा करके। कभी चाय पीते हैं और कभी चाय मिलाकर दूध।

जाड़ा में गाँववाले ईख के रस का शरबत पीते हैं। कस्बा-वाले ईख के रस में भैंस के दूध का दही मिलाकर पीते हैं। शहर वाले ईख का रस भी पीते हैं, भैंस का दूध भी पीते हैं, दूध का दही भी पीते हैं। दही से बनाकर लस्सी पीते हैं। दूध से बनाकर चाय पीते हैं। दोनों में ईख के रस से बनी हुई चीनी छोड़ते हैं। गाँववाले जाड़ा में मटर की छीमियाँ खाते हैं। कस्बावाले छीमियों के छोले खाते हैं। शहरवाले छींमियों की पूड़ी खाते हैं। जाड़ा में धान कटता है, धान से चूड़ा बनता है, चूड़ा में दही छोड़ देने पर चूड़ा-दही हो जाता है। जो चूड़ा-दही खाते हैं, वे कच्ची-पक्की कुछ नहीं खाते। मिथिला में दिन में कच्ची खाते हैं, रात में चूड़ा-दही खाते हैं।

जाड़ा में लोग च्यवनप्राश खाते हैं। बकरी का दूध पीते हैं और एक साँस में १७६० गज दौड़ते हैं। अगर जाड़ा का मौसम हाथ न लगे तो आयुर्वेदाचार्यों का योग और भस्म उनकी झोली में ही रखा रह जाय। जाड़ा में जिनके शरीर पर काशी-शिल्क या तानजेब का कुरता देखिये, समझ लीजिये, किसी न किसी भस्म का सेवन हो रहा है। जाड़ा में अगर आपको जाड़ा लगने लगा तो जाड़े को आपने व्यर्थ खो दिया। मेरे चाचा के चाचा जाड़ा में शिल्क का चदरा ओढ़े रहते थे। कम्बल बिछाते थे और

गमछा ओढ़ते थे। जब गरम होने लगता था तो रात दो बजे उठकर खेत-खलिहान में टहल आते थे। उनका सिद्धान्त था कि पाँव गरम रखो, दिमाग ठण्डा। जब हम लोग काँपते हुए आठ बजे धूप में बैठते थे और 'सी-सी' करते हुए ईश्वर प्रार्थना में लग जाते थे—'दैव-दैव घाम करो, सुग्गा सलाम करो, तुम्हारे बालकों को जाड़ा लग रहा'—तो चाचाजी हँसने लगते थे और कहते थे कि 'सन १८५७ में मैं तीन भैंसों का दूध अकेले पी जाता था। जब मेरे घर में हथियार ढूँढ़ने के लिए तलाशी के सिलसिले में एक अंग्रेज आया और उसने मेरे दूध पीने की बाबत सुना तो बहुत खुश हुआ। उसने अपना घोड़ा मुझे दे दिया और मेरी दो भैंसें खुद लेता गया। तब से मैं एक भैंस का दूध पीने लगा। पाँच सेर सुबह और पाँच सेर शाम दूध से क्या होता था? मुझे कुछ-कुछ जाड़ा लगने लगा। मगर जब से मैंने कसरत और दण्ड-बैठकी शुरू की, मेरा जाड़ा भाग गया। घोड़े की सवारी के बाद माघ-पूस के जाड़े में मैं पसीने से तर हो जाता था।'

अवलेह, प्राश और भस्म जिन्हें नहीं मिलते, उन्हें गरमागरम बाजरे की रोटी और नया-नया गुड़ मिल सकता है। गरमागरम बाजरे की रोटी गुड़ के साथ मलीदे को पीछे छोड़ देती है। जिन्हें मलीदा खाने का शौक है, वे बाजरा गुड़-घी के साथ खाकर देख सकते हैं। मलीदा खाना बंद कर देंगे। महँगी चीज से छुटकारा मिल जायगा। जाड़ा जब तक न आये, बाजरे और गुड़ का संयोग संभव नहीं। जाड़ा बहुत जरूरी है।

जाड़ा में जलसे होते हैं, तिलक-विवाह होते हैं, मेले-प्रदर्शनी की भीड़भाड़ होती है। और तो और·····कवि-सम्मेलन भी जाड़ा में ही होते हैं। मुशायरे में तब तक जान नहीं आ सकती, जब तक वे जाड़े में न किये जायें। श्रीराम ने रावण का बध जाड़ा

आने की खुशी में किया। जाड़ा लगते ही भरत-मिलाप करा दिया जाता है। दीपावली और उसके पहले धन-तेरस, बाद में गोवर्धन पूजा, अन्नकूट, गोपाष्टमी, अक्षयनवमी, कार्तिकी पूर्णिमा, भैरवाष्टमी, मकर संक्रांति, मौनी अमावस्या, बसंतपंचमी, माघ पूर्णिमा, महाशिवरात्रि, जैसे पुण्य पर्व जाड़ा में आते हैं। गुरु गोविंद सिंह और नेताजी सुभाषचंद्र बोस जाड़ा में पैदा हुए। स्वाधीनता दिवस २६ जनवरी को जाड़ा में ही मनाते हैं। इतना ही क्यों, हमारे मुहल्ले में नकटैया जाड़ा में होती है। सूपर्णखा की नाक महाराज रामचंद्र के भाई लक्ष्मण ने जाड़ा में ही काटी। इस बात का उन्हें पूरा खयाल था कि जाड़ा में नाक काटने से उसके पकने-फूटने का खतरा नहीं रहेगा—और 'ऐण्टी सेप्टिक' कोई इन्जेक्शन नहीं देना पड़ेगा।

जाड़ा एक उपयोगी मौसम है। आप भी उसकी इज्जत और उपयोग कीजिये।

# फिल्म-उद्योग बंद हो जाए, तो...!

### अभिनेत्री नवीन कुत्तों का व्यापार करेगी

नवीन ने कहा कि अगर फिल्म उद्योग अचानक बन्द हो जाये और फिल्में तथा फिल्म-निर्माता दोनों ही अतीत की बातें बन जाएँ तो मैं घर में उन फिल्म-निर्माताओं को मुँह चिढ़ाया करूँगी, जिनकी फिल्मों में मैं काम कर चुकी हूँ और अभी तक पूरा मुआवजा नहीं मिला! इसके अतिरिक्त मैं कुत्तों का नियमित व्यापार शुरू कर दूँगी। इससे फायदे होंगे—आय के अतिरिक्त मेरे मौजूदा १५ कुत्ते भी वहाँ रह सकेंगे।

### दलीप गुल्ली-डंडा खेलेगा

दलीपकुमार ने कहा कि मैं सन्तोष की साँस लूँगा; क्योंकि मेरे जैसे व्यस्त व्यक्ति के लिए आनन्द का समय इसके अतिरिक्त और हो भी क्या सकता है? पहले तो मैं सारे स्टूडियो का चक्कर लगाऊँगा। उद्योग के प्रमुख व्यक्तियों से मिलूँगा, यह जानने के लिए कि अब दुबारा फिल्म-उद्योग के शुरू हो जाने का तो खतरा नहीं है!

फिर मैं नाई के पास जाकर सिर के बाल कटवा दूँगा और उससे कह दूँगा कि बालों का वह दलीप-फैशन, जिसने उनका बिजनेस खत्म कर दिया था, अब खत्म हो गया है। इसके बाद मै खेलना शुरू कर दूँगा—पूर्व तथा पश्चिम के सभी खेल खेलूँगा—गुल्ली-डंडा भी !

### हिन्दभूषण पत्रकारी करेगा

हिन्दभूषण ने कहा कि मेरे दिल में पत्रकार बनने की अभिलाषा है और मैं कई बार सोचा करता हूँ कि यदि मैं चेहरे पर पेंट लगाने के बजाय कलम लेकर लिखा करता तो कितना अच्छा होता ! चुनांचे जब फिल्म-उद्योग बन्द हो जाएगा, तो मै पत्रकार बन जाऊँगा। यदि पत्रकार अच्छे कलाकार और निर्देशक बन सकते हैं, तो क्यों फिल्म-स्टार अच्छे पत्रकार नहीं बन सकते ?

### बलराज रिक्शा चलाएगा

बलराज साहनी ने कहा कि जब मुझे फिल्म-उद्योग के बन्द होने की सूचना मिलेगी, तो मैं सारे स्टुडियो का चक्कर लगाऊँगा कि क्या यह सब परमाणुबम से तो नहीं हुआ है ? यदि यह किसी बाह्य कारण से हुआ होगा, तो इसमें हैरानी की कोई बात न होगी। मुझे इस बात का विश्वास हो जाएगा, तो मैं फिल्म-उद्योग से सम्बन्धित ऐसे लोगों की एक सूची तैयार करूँगा, जो दर्जी या नाई की नौकरी कर सकते हैं। सबसे पहले तो मैं वे पुस्तकें पढ़ूँगा, जो मै चाहकर भी समयाभाव में पढ़ नहीं सका। फिर मै रिक्शा चलाना शुरू कर दूँगा। फिल्म 'दो बीघा जमीन' में मुझे इसका अनुभव हो चुका है।

### सरूपाराय नर्स बनेगी

सरूपाराय ने कहा कि फिल्म उद्योग का अचानक बन्द हो जाना मेरी जैसी तारिकाओं के लिए एक बहुत बड़ा समाचार

होगा, क्योंकि इस तरह हमें उन सारे कामों का अवसर मिल जाएगा, जिनके करने की हमारे दिलों में अभिलाषा है; लेकिन जिनके लिए हमें समय नहीं मिलता। मेरे दिल में नर्स बनकर सेवा करने का शौक है, अतः मैं नर्स बन जाऊँगी, यद्यपि बहुत से फिल्मदर्शक रात ही रात में बीमार हो जाएँगे और मैं उनकी नर्सिंग न कर सकूँगी, लेकिन यह रुकावट भी मुझे नर्स बनने से रोक न सकेगी।

### देवआनन्द टैक्सी ड्राइवर बनेगा

देवआनन्द ने कहा कि मैं एक अखबार निकाल लूँगा और सभी बेकार पत्रकारों को उसमें काम दूँगा।···किन्तु, फिर सोचकर वह कहने लगा—नहीं, मैं टैक्सी ड्राइवर बन जाऊँगा। फिल्म में टैक्सी ड्राइवरों के जीवन से लगाव हो गया है। मुझे उनके सम्बन्ध में काफी अनुभव हो गया है और मैं उन्हें मशीनें नहीं, बल्कि इंसान समझने लगा हूँ। मैं टैक्सी चलाना शुरू कर दूँ; लेकिन मुझे डर है कि बहुत कम लोग मुझे सवारी करने के बाद मजदूरी देंगे।

### कामिनी मन्त्रिणी बनेगी

कामिनी कौशल ने कहा कि फिल्म-उद्योग उन लोगों के हाथ में है, जो सरकार का काम बन्द कर देंगे; लेकिन इस उद्योग को बन्द न होने देंगे। लेकिन, यदि ऐसा हो जाए, तो हमारी आय खत्म हो जाएगी और इसके साथ ही इनकम टैक्स अफसर भी बेकार हो जाएँगे। फिल्म उद्योग से सम्बन्धित व्यक्ति तथा इनकमटैक्स अफसर खुशहाल लोग हैं, जब वे बेकार हो जाएँगे, तो निश्चित ही उनकी पत्नियाँ उन्हें तंग करेंगी और वे राजनीति में दिलचस्पी लेना शुरू कर देंगे। आजकल के राजनीतिज्ञ पुराने ढंग के हैं। वे नए चालाक लोगों का मुकाबला न कर सकेंगे। अतः

नये राजनीतिज्ञ छा जाएँगे और नई सरकारें बनेंगी। आज के बहुत से राजनीतिज्ञ जेलों में चले जाएँगे, जहाँ से वे आये हैं। चूँकि मैं 'इम्पा' (इण्डियन मोशन पिक्चर्स एसोसिएशन) की सदस्य हूँ, अतः मुझे राजनीति के नए दौर से अवश्य ही मन्त्री बनने का अवसर मिल जायगा और इस बात का सबसे अधिक लाभ मेरे बच्चों को होगा, जिनकी माता मन्त्रिणी होगी।

# युद्ध...यानी लड़ाई...यानी मुँहचुथौवल

युद्ध।

यानी लड़ाई।

यानी मुँहचुथौवल।

तीनों शब्द एक दूसरे के अड़ोस-पड़ोस में ही रहते हैं। बिरादरी भी एक ही है। सभी बाभन हैं। सभी गोरे और चिकने मुँहवाले हैं।

युद्ध शब्द मे एक धमाचौकड़ी का-सा आनन्द आता है। लड़ाई में कुछ मुर्दापन अधिक है। हाँ, मुँहचुथौवल में अवश्य 'थ' का बोध होता है और थ से थप्पड़ का निर्माण हुआ है।

युद्ध जिस देश में न हो, समझ लीजिये, उस देश में खून में गरमी नहीं है। गरमी होगी भी तो चाय की तरह। चाय की गरमी से शरीर में पाँच मिनट के लिए गरमी भले आ जाय, जोश नहीं आ सकता।

जिस देश में युद्ध न हो, बस लड़ाई होती रहे तो समझना चाहिए कि वहाँ के लोगों में दम नहीं है। युद्ध करने के लिए ताकत चाहिए। लड़ाई तो हम आप सड़क पर चलते हुए भी कर लेते हैं।

जिस देश में सिर्फ मुँहचुथौवल होती है, वहाँ के लोग लखनऊ के पहलवानों जैसे होते हैं। धोती ढीली करके पसीना-पसीना हो जाते हैं, पर 'रँडहो-पुतहो' बन्द नहीं करते। मुँह चुथौवल से अच्छी लड़ाई है, लड़ाई से अच्छा युद्ध।

वह जाति कभी वीर जाति नहीं कही जा सकती, जिसमें युद्ध करने की शक्ति न हो। एक बार तिब्बत में कई सौ बरस तक युद्ध न हुआ, जब टिम्बकटू के बादशाह ने तिब्बत पर चढ़ाई की, तब लोग मानसरोवर में जा डूबे। वह तो कहिये पास ही में कैलाश पर शंकर भगवान थे, नहीं तो पूरी जाति का ही लोप हो जाता, और टिम्बकटू के राजा से शंकर भगवान ने युद्ध किया। युद्ध में शंकर भगवान विजयी हुए और राजा को गणेशजी के लिए अपनी लड़की देनी पड़ी। यह कथा प्रामाणिक है और बम्बई म्युजियम के श्री परमेश्वरीलाल गुप्त ने एक बार इसे मुझे बतलाया था।

घर में युद्ध नहीं होता, अधिकतर मुँहचुथौवल होती है। बात आगे बढ़ी और पतिपत्नी में अधिक जोश आया तो एक हलकी-फुलकी लड़ाई हो जाती है।

युद्ध करने की जगह मैदान है। घास का मैदान हो तो अधिक अच्छा। मगर वह सर्वत्र इफरात मिलता नहीं। इसलिए लोग पथरीली जमीन पर भी युद्ध कर लेते हैं। ज्यादातर युद्ध रेगिस्तान में हुए हैं। इसलिए सिद्ध यही होता है कि युद्ध के लिए आबहवा उष्ण, धरती रेतीली और भूमि समतल हो तो बढ़िया।

लड़ाई के लिए विशेष प्रतिबन्ध नहीं है। सब जगह हो सकती है। शास्त्रों में मना किया है कि लोगों को पानी में कभी लड़ाई न करनी चाहिये। पानी के बाहर आप सर्वत्र लड़ाई कर सकते हैं। दफ्तर में बड़े बाबू से, घर पर श्रीमतीजी से, सिनेमा हाल में टिकट चेकर से, क्लास में मास्टर से और राजनीति में सरकार से।

बड़े बाबू से, अफसर से या ऊँचे अधिकारी से मुँहचुथौवल आपने की नहीं कि गये। बस लड़ाई कीजिये। एकान्त में दो चार घूँसे दीजिये। आप देखेंगे कि आपका सम्मान पहले से अधिक बढ़ गया है।

घर पर श्रीमतीजी से लड़िये मत। यहाँ लड़ाई मना है। फिर केस हाथ से निकल जायगा। सिर्फ जरूरत पड़ने पर मुँहचुथौवल कीजिये। आनन्द भी आयेगा और शारीरिक नुकसान भी न होगा। पर आफत तो यह है कि कुछ चँड़बाक किस्म की श्रीमतियाँ लड़ाई अधिक पसन्द करती हैं और आव देखती हैं न ताव, पतियों की नाक तोड़ कर रख देती हैं।

रेल के डिब्बे में, खेल के हाल में ज्यादातर लड़ाई ही काम देती है। वहाँ वक्त इफरात रहता ही नहीं। चट जाँघों में हाथ डाला और धड़ाम से धोबियापाठ पर ले बीते। ऐसी जगहों में लड़ाई खत्म होने पर रुकना सरासर गलती है। नौ दो ग्यारह हो जाना चाहिये।

क्लास में भलीभाँति न लड़ाई ही चल सकती है न मुँहचुथौवल ही। दोनों हालत में आप स्टूल पर खड़े कर दिये जायँगे। इसलिए मनचाहा करने के लिए लम्बी भोथरी धारवाली छूरी रखनी चाहिये। राह में एकान्त में मास्टर को दिखा दीजिये, सारा काम बन जायगा। वह आपसे इस जन्म की कौन कहे, उस जन्म में भी नहीं बोलेगा।

युद्ध में भाग लेनेवाले को वीरगति मिलती है। इसलिए वीरगति प्राप्त करने के लिए यह जरूरी है, कि हर पट्ठा नवजवान युद्ध में अवश्य जाय। अमेरिका ने अभी हाल में ही ऐसे लाखों नवजवानों को वीरगति प्राप्त करने के लिए युद्ध में भेजा था, वीरगति प्राप्त करने के लिये आजकल बहुत उपाय करना पड़ता है। चील

और चिरई की तरह आसमान में उड़-उड़ कर बम गिरानेवाले जहाज तैयार कराने पड़ते हैं और उन्हें आदमियों की देह पर दौड़ाना पड़ता है। सभी देश चाहें कि ऐसी वीरगति प्राप्त कर लें, तो उनके लिये सम्भव नहीं है।

रूस धर्म नहीं मानता, इसलिए उसका वीरगति पर भी कोई विश्वास नहीं है। वह इसीलिए युद्ध के पक्ष में नहीं है। पर अमेरिका के लिए वीरगति प्राप्त करना जरूरी जान पड़ता है। वह युद्ध की माँग कर रहा है और दूसरे देश ऐसे हैं कि तैयार नहीं होते।

युद्ध ने बुद्ध जैसा महात्मा पैदा किया। जो युद्ध नहीं चाहता वह बुद्ध हो जाता है। न चाहने पर बहुत थोड़े से परिवर्तन से वह आदमी बुद्ध हो जाता है। यानी पहले जहाँ 'य' लिखा होता है, 'ब' लिख दिया जाता है।

लड़ाई चाहने से गांधी जैसा महात्मा पैदा हुआ। यदि लड़ाई न चलायी गयी होती तो गांधी जैसा महात्मा न पैदा हुआ होता। इसलिए कभी-कभी लड़ाई का महत्व बढ़ जाता है। मुँहचुथौवल से जिन्ना पैदा हुए। मुँहचुथौवल में कम ताकत नहीं है, पर महात्मा नहीं पैदा हो सकते। हाँ, दस-बीस मिस्टर अवश्य पैदा हो सकते हैं।

इसलिए हे पाठको, जिन्ना बनना चाहते हो तो मुँहचुथौवल करो, गांधी बनना चाहते हो तो लड़ाई और बुद्ध बनना चाहते हो तो युद्ध से सौ योजन दूर भागो। आज की दुनिया बुद्धिहीन बहुत पैदा कर रही है, बुद्ध एक भी नहीं। और यही कारण है कि युद्ध होते जा रहे हैं। बोलो तो एक बार जोर से महात्मा बुद्ध की जय।

❀

# होली के तीन मनहूस

होली का अवसर है। आदमी बदलने लग गया है। सुन्दर-असुन्दर का खयाल वह भूल गया है। अपनी शकल ऐनक में देखकर होली मनानेवाले को टिम्बकटू भेज देना उचित समझा जाने लगा है। होली में हरेक 'पोलिटकल मैन' अपने व्यक्तित्व को अनोखा बनाने में लग गया है। होली के अवसर पर एक साधारण कम्युनिस्ट क्या करता है, कैसा होता है, यों समझिये—

## कम्युनिस्ट

वह दूसरे दिनों से औसत कम खतरनाक होता है। उसकी आँखें कम तेज, कम चमकदार और कम कटीली होती हैं। वह होली में आँखों को लाल नहीं काली कर लेता है। वैसे एक कम्युनिस्ट आँख न दिखाता है, न मारता है, न लड़ाता है, मगर उसकी आँखों से शीतलता की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। कम्युनिस्ट की आँखें एक कौवे की आँख से कम तेज नहीं होतीं। ढेला उठाइये, वह अपनी जगह से नहीं टलेगा, पर ढेला छोड़िये, वह रफूचक्कर हो जायेगा। कम्युनिस्ट दूसरे जन्म में खरगोश

होता है। आप उसके पीछे दौड़िये, कभी नहीं पकड़ सकेंगे, वह आपके पाँव के नीचे से साफ निकल जायेगा। आपको शायद पता भी न चले। एक कम्युनिस्ट के पास दो कुरते फटे-फटाये, एक गंजी उड़ी-उड़ी-सी, दो पायजामा चौड़ी मोहरीवाला, एक जोड़ी चप्पल मरम्मतशुदा, जब चाहे बाद तलाशी निकाल लीजिये। वह दिन के २४ घण्टों से १४ घण्टों में चौकी ८ घण्टे धरती और २ घण्टे आसमान का इस्तेमाल करता है। कम्युनिस्ट यदि वह फटकधारी कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर हुआ, निश्चित चन्द बरसों में ही चश्मा लगा लेता है। मेड इन यू० एस० ए० का दो रुपये-वाला चश्मा किसी भी कामरेड की आँख पर चिपका रहता है। चश्मे की आड़ से फ्रायड के मनोविज्ञान का अध्ययन तो होता ही है, वह अतृप्त 'सेक्स' की कमी भी पूरी करता है। यदि काम-रेड के साथ कामरेडा न दिखें तो समझ लीजिये कि वह कामरेड सच्चा कामरेड नहीं है। कामरेड नहीं, कामरेद है। कामर्द नामर्द का दूसरा स्वरूप है।

एक कम्युनिस्ट होली के अवसर पर साबुन के एक फुट लम्बे-लम्बे डण्डे एक नहीं एक दर्जन खर्च करता है। लम्बी चप्पल पायजामा कुरता जितना उजला रहता है, उसका दिमाग उतना 'ब्राइट' रहता है। दिन में दो बार व हफ्ते में १० बार दाढ़ी बनाता है। परदेशी ब्लेड जब नहीं मिलता, वह देशी ब्लेड इस्तेमाल करता है। एक कम्युनिस्ट जितना खाता है, उसका चारगुनी मेहनत करता है। वह खाता कम, खाने की चर्चा अधिक करता है। वह एक दिन में, राशन की व्यवस्था की कदर करता है, इसलिए ३ छटाँक ३ तोला अन्न, एक अण्डा, एक पेग लाल शरबत नियम से लेता है। एक पैकेट कैप्स्टन और तीन पैसे की एक डिबिया सलाई, वह नित्य खर्च करता है।

होली में जो घण्टे भर में चार बार खाँसे, तीन बार हँसे, दो बार मुँह बिचकाये, तो समझ लीजिये कि वह कम्युनिस्ट है। एक कामरेड २४ घण्टे में ८ बार भाषण के मूड में आता है, मगर भाषण सिर्फ एक बार कर सकता है। १४ बार चिढ़ता है। २४ बार गाली देता है। एक तोंद पर तीन बार, लांग बूट पर दो बार और तोंद-सेवियों के ऊपर ४ बार विचार करता है। जो ५० बार काकुल ठीक करे, जेबे में कंघी रखे, दिन में दस पाँच बार सिर्फ पानी से धोकर बाल ठीक करे, तो समझ लीजिये कि वह होली मनानेवाला कम्युनिस्ट है। होली में एक कम्युनिस्ट साधारण कामरेड न बनकर असाधारण लीडर बन जाता है। लीडर को यदि कम्युयिस्ट बनना हो तो उसे होली में असाधारण बन जाना चाहिये।

## सोशलिस्ट

होली में कम्युनिस्ट के बाद उल्लेखनीय कार्य करनेवाला सोशलिस्ट होता है। जिस सोशलिस्ट को होली में रात में अधिक दिखायी दे और वह दिन में आँख बन्द रखे तो समझ लीजिये कि उस पर होली का पूरा रंग चढ़ गया है। सोशलिस्ट कम निरीह और कम खतरनाक होता है। इसलिए उसकी शकल कुछ भोली-भोली-सी प्रतीत होती है। सोशलिस्ट का चेहरा पीला होता है। मगर टी० बी० के रोगी उसका मुकाबला नहीं कर सकते। वह कौवा नहीं, पर एक लगड़े गिद्ध की-सी आँख जरूर रखता है। जिस सभा सोसाइटी को एक कौवा काँव-काँव करके भी नहीं देख सकता, एक गिद्ध ४ हजार फीट की ऊँचाई से भी देख लेता है। उस पर एकाएक हमला बोल देता है और होली में उन योजनाओं पर अमल भी करना चाहता है, मगर उसी प्रकार असफल होता है जिस तरह बारहसिंघा जंगल की झाड़ियों

में दौड़ते समय, अपनी सींग से। क्योंकि झाड़ियाँ उसे आगे नहीं बढ़ने देतीं।

सोशलिस्ट होली के अवसर पर बहुत मुखर हो उठता है। प्रत्येक सोशलिस्ट पूर्व जन्म का खर होता है, इसलिए उसे खर+गोश न कह कर खर+दूषण कहा जाता है। वह विभीषण भी होता है और कुम्भकरण भी। जब कि होली में दूसरे 'पोलिट-कलमैन' केवल गान्धी मैदान और टाउनहाल में सभाएँ करते हैं, एक सोशलिस्ट सिर्फ चौराहों पर अपनी लघु सभाएँ बुला कर कोमल गले को खरादता है।

होली में सोशलिस्ट रंग के छींटे से भींग जाने के बाद खुश होता है। वह आधा भारतीय और आधा कच्चा रूसी होता है। रूस का नकशा देख लेने के बाद आँख धोकर पवित्र करता है। एक सोशलिस्ट के पास साधारणतः ३ सफेद टोपियाँ, ६ लाल-टोपियाँ, २ जवाहर जैकेट २ जयप्रकाश जैकेट, दो खद्दर की दो मिलकी फाइन धोतियाँ और एक विलायती शिल्क की कोट, शोलापुर की मिल की कमीजें, गान्धीआश्रमी कोटें और एक जोड़ा बाटा तीन जोड़ा नागपुरी चप्पलें जरूर रहती हैं।

सोशलिस्ट सर्वदा इस बात का प्रचार करता पाया जाता है कि वह सांस्कृतिक है, होली में उसकी संस्कृति मनहूसी का रूप ग्रहण कर लेती है। सोशलिस्ट सप्ताह में ३ दिन आचार्य नरेन्द्र-देव को अपना नेता मानता है, ३ दिन जयप्रकाश को, १ दिन डा० लोहिया को। होली में वह अपना नेता किसी को नहीं मानता। यदि वह एक बार मार्क्स की फोटो निहारता है तो ३ बार गान्धीजी का चित्र देखता है। औसत सोशलिस्ट सर्वदा एक कांग्रेसी को लालच भरी नजर से देखता है और एक कम्युनिस्ट को भयभरी नजर से।

होली में सोशलिस्ट की 'सेक्स' की भूख बढ़ जाती है, किन्तु वह मार्क्सवादी होता है, इसलिए अपनी इस भूख की दवा करते हुए भी ब्रह्मचारी बना रहता है। औसत सोशलिस्ट अनव्याहा होता है। मगर शादी करना अपना पहला फर्ज समझता है। सोशलिस्ट के लिए यह आवश्यक होता है कि वह १० या १२ मजदूरों का नाम याद रखे। वह मजदूरों की इच्छा न होते हुए भी उनकी नेतागिरी बहुत स्नेह से करता है। एक सोशलिस्ट की यह आदत होती है कि उतनी सिगरेट अवश्य खर्च करे जितनी सिगरेट वह फूँक कर आकाश गन्दा कर सके।

औसत सोशलिस्ट दिन में १० घण्टे लाल टोपी, १२ घण्टे सफेद टोपी लगाता है और २ घण्टे सोते समय सिर नंगा रखता है।

होली में जो सोशलिस्ट दिन में ५६ बार जयप्रकाश का नाम नहीं लेता, वह गद्दार समझा जाने लगता है। समझदार सोशलिस्ट प्रत्येक बात में यह कहना अपना फर्ज समझता है कि उसे बाबू जयप्रकाशजी जानते हैं। सोशलिस्ट जब कि राशन ४ छटाँक मिलता है, दिन में ५ छटाँक ३ तोला अन्न अवश्य खाता है। भारतीयता का पुट अधिक होने के कारण वह साग सब्जियाँ खूब खाता है। सोशलिस्ट के लिए जरूरी होता है कि वह चप्पल चटखाता फिरे। चप्पल चटखानेवाला जूता नहीं खाता। होली में ६० प्रतिशत सोशलिस्ट काकुल नहीं रखते। जो काकुल रखता है वह नेताओं के पास नहीं जाता।

एक सोशलिस्ट में ३३ प्रतिशत हया अवश्य होती है, मगर एक कांग्रेसी के सम्मुख वह शत-प्रतिशत बेहया हो जाता है। होली के अवसर पर उसकी यह बेहयायी और भी बढ़ जाती है।

## कांग्रेसी

कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट 'पोलिटकल मैनों' के बाद यदि कोई उल्लेखनीय 'पोलिटकल मैन' हमारी-आपकी नजर में आता है तो वह है—कांग्रेसी। होली में एक कांग्रेसी दर्शनीय हो जाता है। वह होली ही नहीं, दूसरे अवसरों पर भी कम खतरनाक सिद्ध होता है। अहिंसक संस्कार होने के कारण खतरनाक काम करने में सबका मुकाबला नहीं कर सकता। कांग्रेसी ७५ प्रतिशत अबोध होता है। उसका 'बोध' उस समय देखने योग्य होता है, जब वह किसी परमिट या लैसंस का मालिक हो जाता है। तब उसकी बुद्धि देखने परखने योग्य हो जाती है। एक कांग्रेसी होली के अवसर पर अपने शत्रु-मित्र की पहचान कठिनाई से कर पाता है। वह आम की फाँकों जैसी आँखोंवाला तथा तरबूज की भाँति शीतल तोंदवाला होता है, इसलिए एक कांग्रेसी के भाग्य पर कम्युनिस्ट व सोशलिस्ट तरस खाते हैं और उसे लालच की नजर से देखते हैं। कांग्रेसी को कुछ लेखक हंस की उपमा देते हैं और कहते हैं कि दूध का दूध और पानी का पानी अलग कर देता है। मगर मेरे खयाल से एक कांग्रेसी कोआपरेटिव सोसाइटी के दूध में पानी और पानी में दूध मिलाने में अधिक सफलता प्राप्त कर लेता है। एक कांग्रेसी को साधारणतः खूँटे में बाँध कर नहीं रखा जा सकता। वह पगहा तुड़ा लेता है। लेकिन चूँकि वह पूर्व जन्म का गौ-वंशी होता है, इसलिए उसे नेता लोग पुचकारते रहते हैं, पीटते नहीं। ऐसा गौ-वंशी कांग्रेसी दूसरे की नाँद में भी मुँह डाल देता है। कुछ कांग्रेसियों को कांग्रेस से केवल इसलिए निकाल दिया गया है, कि उन्होंने दूसरे खेत में भी चरने की कोशिश की है।

जिस कांग्रेसी के पास एक जोड़ा चमरौधा जगतगंजी जूता न हो, तीन खद्दर की धोतियाँ न हों, ४ खद्दर के कुरते न हों, तीन टोपियाँ धुली-धुलाई रखी न हों, एक जोड़ी रणीवा मार्का चप्पल न हो, तो निश्चत जानिए कि वह इस जीवन में कुछ नहीं कर सकता। एम० एल० ए० की चौड़ी सड़क पर पहुँचने के लिए जरूरी है कि कांग्रेसी के पास वेशभूषा सँवारने के लिए आवश्यक सभी सामग्री मौजूद हो। प्रत्येक कांग्रेसी विधिवत शादी करता है। इसलिए आधी दर्जन लड़कियाँ और एक दर्जन लड़के अवश्य होते हैं, जो बाद में कम्युनिस्ट बन जाते हैं। चूँकि कांग्रेसी जेल में कुछ दिन बिता चुका रहता है, इसलिए लोग उसे आदर की नजर से देखने का अभ्यास जारी रखते हैं। कांग्रेसी सिद्धांततः जमीन पर सोने के पक्ष में रहता है, मगर अब, जब कि उसे राजगद्दी मिल गयी है, अपने घरपर भी वह ९ इञ्च मोटे गद्दे पर ही सोता है। कांग्रेसी की आँखों से निरीहता टपकती है, इसलिए वह हृदय का काला नहीं, सफेद होता है। कांग्रेसी सिर पर टोपी लगाता नहीं, बल्कि उसे हलके हाथों उठाकर रख लेता है। ऐसी जगहों में जहाँ काफी मन-सायन होता है, वह अपनी टोपी को जरा तिरछी कर लेता है। उसके कंधे पर चाहे जाड़ा हो या गर्मी, एक गांधी-आश्रमी चादर अवश्य होती है।

जबसे गद्दी मिली है, कांग्रेसी ७५ प्रतिशत बनिया हो गया है। बड़े-बड़े बनिया उसके दोस्त हैं। जिगरी दोस्त। गद्दी के बाद उसने देश का व्यवसाय सँभालने के लिए अपने हाथ में ले लिया है। वह कालाबाजार में दिन में दूसरों की भाँति कभी नहीं झाँकता। उसका समय बँधा रहता है। २५ प्रतिशत कांग्रेसी अभी भी फक्कड़ हैं। आशीश देकर देश-सेवा करते हैं। अब कुछ कांग्रेसी अपने को कांग्रेसी, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट कुछ भी

कहलाना पसन्द नहीं कर रहे हैं। होली पर कांग्रेसी अकसर शिष्ट हो जाता है, लेकिन वह संसद् में अपने साथियों को भी साहस के साथ गाली दे लेता है।

१० प्रतिशत कांग्रेसी खेतिहर हैं, जिन्होंने तिरंगे को अपनी हल की मुठिया में बाँध रखा है, १५ प्रतिशत शहरों और देहातों में कोआपरेटिव सोसाइटियों के सेक्रेटरी हैं, १० प्रतिशत किरासिन के तेल की दूकान आज भी करते हैं। १० प्रतिशत मंत्रियों के सहायक (फूहड़ नाम दलाल) होते हैं। ५५ प्रतिशत कांग्रेसी निठल्लू होते हैं और अपनी पुरानी कमाई पर जीते हैं। कुछ अखबार पढ़ते हैं, कुछ देखते हैं, कुछ आँख उठाकर अखबार की ओर देखते भी नहीं। जिसका जैसा नशा और स्वार्थ।

प्रत्येक कांग्रेसी तभी चिढ़ता है जब वह परमिट नहीं पाता, चिढ़ाने का काम भी वह भलीभाँति नहीं कर सकता, क्योंकि इससे उसका हित कम, चकाचक अनहित ही अधिक होता है। जो लोग चिढ़कर जाते हैं, वे अनुल्लेखनीय 'प्रशंसा' करते हैं। कांग्रेसी तभी हँसता है जब उसे अपने आप पर हँसी आती है, अन्यथा वह मनहूस मुद्रा में ही अधिक रहता है। उसे सोशलिस्टों और कम्युनिस्टों पर भी कम हँसी नहीं आती, लेकिन वह क्या करे, उसे ये दोनों हँसते हुए देखना पसन्द ही नहीं करते।

कांग्रेसी मूँछ-दाढ़ी सफाचट रखता है। होली में वह पूरा एक महीना छैला बना फिरता है। जब कि राशन चार छटाँक मिल रहा है, वह बिना राशनकार्ड सेर भर खा जाता है। चूँकि वह गांधी जी की जाति बिरादरी का होता है, इसलिए शाक-सब्जी खूब झोंकता है। प्राकृतिक चिकित्सा का प्रेमी होता है और शरीर शुद्ध करने के लिए 'टब-बाथ' लेता है, दिगम्बर होकर। कांग्रेसी जैनी नहीं होता, लेकिन उसे श्वेतांबर भी कहा जा सकता

है, क्योंकि उसके सिर से लेकर पाँव तक बगुले की पाँखों-सा उज्जर कपड़ा लिपटा रहता है। जिस कांग्रेसी के सिरपर सफेद टोपी नहीं होती, उसकी चाल-चलन के बारे में शक किया जाता है।

जो कांग्रसी कर्मठ सदस्य होते हैं वे घरपर मिल का कपड़ा पहनते हैं, घर के बाहर खद्दर। ऐसे लोगों का काम थोड़े कपड़े से भी चल जाता है, यही कारण है कि गांधी आश्रम को घाटा हो रहा है। प्रत्येक 'सरकारी मार्का' कांग्रेसी एक डिब्बा पान अपने झोले में अवश्य रखता है। गालों की चिकनाई को कम करने की कोशिश करता है, मगर प्रयत्न के बावजूद भी गालों की चिकनाई नहीं घटती। कुछ कांग्रेसी मिनिस्टरी के सग्गड़ को ठेलते हैं, कुछ उसपर बैठकर उसे हुमचते हैं, कुछ गांधीजी के याद-गार में स्मारक बनवाते हैं, कुछ चेयरमैनी करते हैं, कुछ होली आते ही अपना पुराना रूप भूलभालकर साधु बन जाते हैं और लोगों के गाल पर गुलाब रगड़ते हैं।

होली के सन्निकट कुछ कांग्रेसी जलसा-जुलूस करते हैं, कुछ प्रदर्शिनी। कुछ गांधीजी का नाम लेकर कबीर गाते हैं, कुछ अपनी जय-जयकार बोलने में तल्लीन हो जाते हैं। कुछ मुसलमानों को मिला कर वार्ड कमेटी में घुस जाते हैं, कुछ मुसलमानों को डरा धमका कर अपना दोस्त बना लेते हैं।

प्रत्येक कांग्रेसी एक कम्युनिस्ट की छाया से भी बचने की कोशिश करता है। सोशलिस्ट को घृणा की नजर से देखता है। यदि इनमें कोई भी छू जाता है तो वह प्रायश्चित करता है, नहाता है, जाप करता है। ज्यादातर कांग्रेसी सनातनी होते हैं और प्रेम से हिन्दू धर्म की 'छै' बोलते हैं, अँग्रेजों के साथ चाय पीते हैं। गान्धीजी का नाम सबसे अधिक लेते हैं।

जिस कांग्रेसी को हरजाना मिल गया है, वह आजकल सुख की नींद लेता है और होली में दूसरों की नींद हराम करता है। कण्ट्रोल के कायम हो जाने से ३० प्रतिशत कांग्रेसी अर्थ-संकटों से मुक्त हैं। जिन कांग्रेसियों को अब भी गाली सुन कर मुसकाने नहीं आया है, उन्हें होली के अवसर पर गुदगुदा कर हँसाया जाता है। कुछ गाली सुनकर सिर्फ मुस्करा भर देते हैं। लाठी का असर उन्हें हो जाता है, लेकिन उनपर गाली का कत्तई असर नहीं होता।

जिस कांग्रेसी के घर दो चार तकलियाँ, दो चार गुंडी सूत और एकाध टूटा-फूटा चरखा न दिखे, उसके घर कांग्रेसी होली खेलने कभी नहीं घुसता। होली का आगमन जानकर कांग्रेसी एक कांग्रेसी को ही गाली देने लगता है। इस प्रकार वह गाली देने का अभ्यास बढ़ाता है। ५ प्रतिशत घरों में चर्खा अब भी चलता है, २ प्रतिशत चरखे की आज भी पूजा करते हैं। ६० प्रतिशत चरखे की शकल भी नहीं देखना चाहते। १०० में ६० कांग्रेसी घरके ठलुआ होते हैं, इसलिए बाप को डरते हैं। होली में निर्द्वंद हो जाते हैं। जिस कांग्रेसी का किसी मिनिस्टर से आज तक परिचय नहीं हुआ, वह होली को घर की मालकिन के साथ ही बिताता है। कभी बाहर नहीं आता।

इस प्रकार ये रहे होली के ३ पोलिटकल मैन—कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट और कांग्रेसी!

# जयन्ती

जयन्ती और जैजवन्ती दो शब्द बहुत प्रसिद्ध हैं। क्यों प्रसिद्ध हैं, इसकी निस्बत अपनेराम को अधिक जानकारी नहीं है, पर जितनी है, वही इन शब्दों की महत्ता समझने के लिए काफी है। जयन्ती शब्द का टुकड़ा करके अर्थ निकालने में आसानी होगी, पर भाषा विज्ञानवेत्ता इसका कैसे टुकड़ा करते हैं, यह तो वही जान सकते हैं। हाँ, अपनेराम ने जो टुकड़ा किया है वह किसी भी भाषाशास्त्री को दंग कर देने के लिए काफी है। जैजवन्ती एक रागिनी का नाम है, तबला और हारमोनियम बजानेवाले ऐसा बतलाते हैं। जयन्ती शब्द का टुकड़ा करने पर दो शब्द पैदा हो जाते हैं—जय + अंती। जय का अर्थ है उन्नति या तरक्की। अंती अंत (नाश) से बना है। इसलिए अंती का अर्थ है समाप्ति। जब उन्नति का अंत हो जाता है तब जयन्ती मनायी जाती है। प्रश्न विचारणीय है कि किसी भी उद्भिज, अंडज की उन्नति का अन्त कब-कब होता है। उत्तर है जब-जब वह अपनी वर्षगाँठ पूरी करे। कुछ लोगों की वार्षिक जयन्ती मनायी जाती है, कुछ लोगों की दस वर्ष पर, कुछ लोगों की २५ या ५० या १०० या १००० वर्ष पर। यदि वह वस्तु जीवात्मा है तो उसकी जयन्ती उसकी बिरादरी के लोग मनावेंगे। यदि वह

जड़ है या अप्रत्यक्ष है तो ऐसी वस्तु की जयन्ती ऐसे ही लोग मनाते हैं, जो जड़ हैं या विनष्ट हैं।

कभी-कभी जयन्ती बहुत धूमधाम से मनायी जाती है। कभी-कभी वह बहुत आसानी से या हलके-फुलके रूप में मना ली जाती है। दोस्त की जयन्ती मनाते समय दोस्त खूब खा-पीकर जयन्ती मनाते हैं। यदि रसगुल्ले, चमचम और समोसे मजेदार हुए तो दोस्त को कुछ दिन और जीने के लिए कहा जाता है या निवेदन किया जाता है। यदि जयन्ती में प्रयुक्त सामग्री कुछ कम जायके की है तो दोस्त को सर्वदा के लिए छुट्टी दे दी जाती है।

बड़े-बूढ़ों, कलाकारों और नेताओं का जयन्ती मनाने का अच्छा रवाज चल निकला है। ये लोग गजरा पहनकर अपने बीते हुए ५० साल या १०० साल पर तरस खाते हैं। क्योंकि बड़े बूढ़े देखते हैं कि नवजवान अब उनकी जगह छीनकर सिर्फ गजरा पहना कर फुसला रहे हैं। सभा-संस्थाओं की भी जयन्ती मनायी जाती है। पर सभा-संस्थाओं की जयन्ती में जैजवन्ती राग का अधिक जोर रहता है। जितने का बजट होता है, उसी हिसाब से उछलना-कूदना होता है। यदि बजट गम्भीर है तो उछल-कूद, भाषण, कथा सब बढ़ जाता है और ऐसी संस्था की स्वयंसेवकी करने में भी आनन्द आता है। यदि बजट मलेरिया के मरीज की तरह दुर्बल है तो 'चतुर' लोग ऐसी सभा-संस्था से दूर ही रहते हैं। अपनेराम उद्भिज, अण्डज नहीं बल्कि पिण्डज हैं, पर वे कत्तई नहीं चाहते कि यार लोग अपनेराम का छमाही, वार्षिक या किसी प्रकार की जयन्ती मनावें और पिण्ड पकड़ें। क्योंकि अपनेराम भूखे पेट जैजवन्ती मनाना अधिक पसन्द करते हैं, पर रसगुल्ले और चमचम के साथ जयन्ती मनाना नहीं पसन्द करते।

❁

# संपादकजी, रचना जरूर छाप दें !

लेखक उस जन्तु विशेष का नाम है, जो स्वयं जड़-मूर्ख होता है तथा विश्व के अन्य अभागे प्राणियों को भी मूर्ख ही समझता है।

उपरोक्त व्याख्या किसी बड़े दार्शनिक ने की है, जिसे एक छोटा दार्शनिक यहाँ दुहराने जा रहा है। प्रमाण साथ ही प्रस्तुत है।

किसी भी अखबार में दिमाग में अथवा जबान में घूमने, पैदा होने तथा चक्कर काटने वाले लेख (उनके विविध अंगों का जिक्र करना आवश्यक नहीं है) एक भूमिका रखते हैं। प्रस्तुत 'कोटेशन' उन्हीं भूमिकाओं में से चुरा कर यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं। ये भूमिकाएँ एक संपादक की उस आलमारी में बन्द थीं, जिसका पिछला अंश चूहों की कृपा से 'टू-लेट' की स्थिति में आ गया था। भूतपूर्व संपादक होने के कारण, मुझे विश्वास है कि इस चोरी के लिए उन्हें दुःख नहीं होगा तथा लेखों के साथ आने वाले इन 'आग्रह-पत्रों' का भी सदुपयोग हो जायेगा।

ऊपर जो बात घुमा-फिरा कर दार्शनिक रूप में अथवा रहस्यवादी ढंग से कही गयी है, उसका स्पष्ट खुलासा इस प्रकार है कि संपादक के नाम भेजी जानेवाली, रचनाओं के साथ जो लेखकों के पत्र होते हैं, सभी पत्र इस समय मेरे पास हैं, और उन्हें उपरोक्त भूमिका के साथ आपके सामने सादर, सस्नेह, साभार यहाँ प्रकट करता हूँ।

उज्जैन के एक महोदय लिखते हैं—

'वृहत्तर भारत में वृहत्तर मुद्राएँ' नामक रचना आपके पत्र में छप गयी है, उसके लिए किसी प्रकार की मुद्रा नहीं मिली, इसलिये कृपया शीघ्र ही 'मुद्रा-प्रदान-आज्ञा' (मनी-आर्डर) द्वारा सम्बन्धित सम्पत्ति मेरे पते पर भेज दी जाय। (पते में उज्जैन के अतिरिक्त कुछ नहीं है।)

वर्धा के एक सज्जन का कहना है—

'आज मैं भयंकर मनःस्थिति के द्वन्द्व के बीच से गुजर रहा हूँ, मैंने आपकी सेवा में 'आह' तथा 'व्यथा' कविताएँ भेजी हैं, वे ६ महीने के बाद भी क्यों नहीं छपीं? इस सम्बन्ध में आपको आगे भी करीब ८-१० पोस्टकार्ड लिख चुका हूँ। अब रचना लौटाने के लिये पोस्टेज भेजना नामुमकिन है।'

पंचवटी, नासिक के एक सज्जन का पोस्टकार्ड इस प्रकार है—

'आपने ७) रुपये का जो मनीआर्डर भेजा, वह इतना कम है कि उससे मैं अपने बेबी के लिये कोई छोटा-मोटा उपहार भी नहीं खरीद सकता, कुछ रुपये और भेज दें।'

पूना के एक सज्जन का सुझाव है—

'मुझे अपने ८ कालम के लेख के केवल १०) प्राप्त हुए हैं। वे बहुत कम हैं। मैं समझता हूँ, यह आपकी नहीं, हिसाब वाले क्लार्क की भूल होगी। मैंने मैथेमेटिक्स के साथ इण्टर पास किया

है, यदि मैं आपके पत्र में रहकर लेखकों की सेवा कर सकूँ, तो मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी।'

जबलपुर के एक महोदय को इस प्रकार का 'उत्तर' दिया गया—

'आपके मूल अधिकार तथा वैयक्तिक स्वाधीनता के रुपये भेजे जा चुके हैं, हमें अत्यन्त खेद है कि वे आपको प्राप्त नहीं हो सके। अन्दरूनी जाँच करने पर पता चला है वैयक्तिक अधिकारों का उपयोग करके किसी 'शान्ति' नामक महिला ने उन रुपयों को आज से तीन माह पूर्व प्राप्त कर लिया है। हमें आपके विचारों, और खास कर उसकी प्रतिक्रिया के कठोर अनुभव के प्रति हार्दिक सहानुभूति है।'

इन्दौर के एक सज्जन का मार्मिक पत्र इस प्रकार है—

'आपकी सेवा में मैंने एक लेख—'महापुरुषों की भाषण नीति' भेजा है, वह काफी लम्बा हो गया है, कृपया उसे ठीक करके अपने समाचार-पत्र में दूसरे पृष्ठ के तीसरे कालम में छाप दें। यह कष्ट जल्दी करें। फिर मैं दूसरा लेख भेजूँगा।'

इन्दौर के ही एक और सज्जन की सज्जनता अभिनन्दनीय है—

'इतने दिनों मैं घोर बीमार था, इसलिये आपके पत्र के लिये कुछ नहीं लिख सका, अब मैं ठीक हो गया हूँ। धुँआधार लिखने की सोच रहा हूँ। आप कृपया सबको छापते चले जाइये, फिर देखिये आपके पत्र का और आपके साथ मेरा कितना नाम होता है। साथ ही एक लेख भेज रहा हूँ शीर्षक है, 'बीमारों के पत्र।'

देहरादून का खत इस प्रकार है—

'इस पत्र के साथ अपनी ४० रचनाएँ भेज रहा हूँ। कृपया पढ़ लें। हिन्दी को नये रक्त की आवश्यकता है। आशा है, आप हिन्दी की प्रगति के लिये आवश्यक सहानुभूति-पूर्ण खयाल

रखेंगे। पोस्टेज साथ में भेज रहे हैं। रजिस्ट्री द्वारा प्रकाशित रचनायुक्त पत्र के अंक भेज दें।'

जबलपुर के प्रमुख कालेज के प्रोफेसर लिखते हैं—

'गान्धीजी की पुण्य तिथि ( मृत्यु अथवा जन्म, यह ज्ञात नहीं हो सका है ) के अवसर पर 'गांधीजी मर गये' एक लेख भेज रहा हूँ। यह लेख कहानी भी है, लेख भी है, और कवि होने के नाते किसी न किसी अंश तक काव्य का नवीन प्रयोग भी इसमें शामिल है।'

भेलसा, मध्यभारत का एक पत्र—

'अभी इण्टर की परीक्षा दे रहा था, इसलिये आपके पत्र में कई दिनों से कुछ नहीं लिख सका, साथ ही 'होली मनायें कैसे मजनी' कविता भेजी जा रही है। अवश्य प्रकाशित कर दें। जिस अंक में यह कविता प्रकाशित हो, उसकी एक प्रति हमारे कालेज के पते से कुमारी लज्जारानी खंडेलवाल को भी भेज दें। आप ठीक होंगे ?'

बोईसर, बम्बई से—

'भारत में अणु-बम की प्राचीन खोज' शीर्षक लेख भेज रहे हैं। छाप दें। आपका पत्र भगवान के आशीर्वाद से फले फूले।'

देहरादून का एक रिमाइण्डर—

आपकी सेवा में ३० रचनाएँ भेजी गयी थीं। ऐसा लगता है कि आपने उसे बिना पढ़े ही लौटा दी। ( यह उन्हें पता नहीं कैसे मालूम हो गया ) हम आपके पत्र से ऐसी आशा नहीं करते थे। अमेरिका में तो.....( इसके पश्चात् के अक्षर पढ़ने के लिये किसी रिसर्च स्कालर की जरूरत होगी। )

करेली, मध्य-प्रदेश—

मान्य भ्रातृत्वनाथजी, ( यह उन्होंने स्नेह सम्बोधन लिखा है ) होलिकांक के लिये 'चम चम दीप जले हैं' कविता भेज रहा हूँ। यदि आप, जहाँ से पत्र प्रकाशित हो रहा है, वहाँ कुछ दिनों से रह रहे हों तो आप मुझे कवि के रूप में अवश्य जानते होंगे। क्योंकि मेरी कविताएँ कई पत्रों में छपी हैं। मैंने कई कवि सम्मेलनों में कविताएँ पढ़ी भी हैं। आप ठीक सम्पादन कर रहे हैं, इसलिये सोचता हूँ कि आपके पत्र के लिये भी कविताएँ लिखूँ। आप अपने भ्रातृमंडल में शामिल कर लीजिये। स्नेह याचक,'मैं'।

बड़ौदा का नमूना—

तीन लेख सेवा में भेज चुकी हूँ। कोई उत्तर नहीं। ऐसा करना कहाँ तक ठीक है ? मैंने जिस विषय पर अपने लेख लिखे हैं, उन पर अभी रेडियो पर भाषण भी हुए हैं। आप रेडियो सुना कीजिये।

बम्बई की विभूति—

एक गद्यगीत भेजा था। उत्तर की प्रतीक्षा करती रही। यदि आप उसको नहीं छाप सकते तो मुझे टेलीफोन करके कह सकते थे। टेलीफोन के नंबर तो मैं अपने पत्र के ऊपर ही लिख देती हूँ।

सेलाना, मध्य-भारत—

आज से एक माह पूर्व आपकी सेवा में एक लेख भेजा था, उसे कृपया 'कमलकिशोरी' के नाम से छाप दें।

अम्बाला कैन्ट से—

गौरवपूर्ण नमस्ते। आपने अपने अखबार में नेहरूजी को १७ तोपों की सलामी छापी है, यह उर्दू शब्द है। भारतीय नहीं। और आप तो भारतीय हैं। सलामी की जगह, राम-राम, नमस्कार, जयहिन्द आदि छापा करें।

दिल्ली से—

हमारी शादी इसी अगस्त को हुई है। ७ तारीख को। हम फोटो भेज रहे हैं। अखबार के ठीक ऊपर छाप दें। नीचे हमारा नाम लिख दें। हमारी घरवाली का नाम लक्ष्मी है। एक कविता भी भेज रहे हैं। इसकी तर्ज हमारी अपनी है। खबरदार, किसी ने जो नकल की, मुकदमा चलेगा। जयहिन्द।

पूना से—

मैं आपके पत्र के लिये लिखना चाहता हूँ, कृपया सूचित करें कि क्या लिखूँ ? और कैसे लिख कर, कैसे भेजूँ ?

बीकानेर से—

मैंने तुलसीकृत रामायण को आधुनिक भाषा में २०० पेजों में लिखा है, यदि आप एक पेज रोज छापें तो ३-४ माह में खतम हो जायगी। मुझे पैसा-वैसा कुछ नहीं चाहिये। मेरा काम तो भगवत-भक्ति करना है। उत्तर के लिये तीन पैसे का टिकट भेज रहा हूँ। पोस्टकार्ड भेजिये, मुझे मिल जायगा।

# टाल



टाल दो अक्षरों का एक नफीस और हलका फुलका शब्द है। टट्टूवाले 'ट' पर 'आ' की मात्रा रखकर उसके आगे लट्टू वाला 'ल' लिख दिया जाता है। इस प्रकार टट्टू और लट्टू मिलकर एक सुन्दर शब्द का निर्माण करते हैं। यों तो ट और ल से कई शब्दों का निर्माण होता है, पर टाल इनमें सबसे अधिक अर्थगर्भ और जानमारू है। ट और ल से खटमल सिर्फ खून चूसते हैं। टाल तो जान तक ले लेता है।

भाषा-विज्ञान-वेत्ता भी टाल शब्द की उत्पत्ति के सम्बन्ध में बहुत कम जानते हैं। अभी हाल में ही ये लोग वाराणसी आये थे, केवल इसी सम्बन्ध में आवश्यक अन्वेषण के लिए। ये लोग पहले यहाँ के एक मशहूर टाल पर गये और वहाँ उन्होंने एक मशहूर टाल को बुलाया। टाल से उन्होंने काफी बातें कीं और बहुत-सी जानकारी प्राप्त की। उन्हें यह भी ज्ञात हुआ कि वाराणसी महानगरपालिका में भी कई टाल हैं। दूसरी नगरपालिकाओं में भी टाल होते हैं, पर वाराणसी नगरपालिका का टाल बहुत भारी है। भाषा-विज्ञान-वेत्ताओं का कहना है कि टाल शब्द 'जमालगोटा' शब्द में से चुराकर निकाल लिया गया है। इसी से जिस भी सज्जन को एक बार जमालगोटा दे दिया जाता है, वह टाल भी कहलाने लगता है।

वाराणसी में टाल को दलाल, बम्बई में टाल को दुकान, इलाहाबाद में टाल को मूर्ख, लखनऊ में टाल को भड़वा, दिल्ली में टाल को भुलावा के रूप में प्रयोग करते हैं। हम लोग भी 'टाल' को अक्सर टालमटोल के रूप में ही प्रयुक्त करते हैं।

टाल कविता का शब्द है और टालमटोल गद्य का। जो लोग टाल होते हैं वे कविता में टाल ढूँढ़ते हैं और जो टाल नहीं होते वे गद्य में टालमटोल ढूँढ़ते हैं। हम ऐसे सम्पादक हैं कि लोग टाल का अर्थ नहीं समझते, पर हम टाल पर लिखने का काम नहीं टालते। टाल एक प्रकार का टैक्स होता है, उसे जो जनता पर लगाता है, उसे प्रशासक कहते हैं। टाल नगरपालिका के भीतर लगाया जाता है। टाल जिसने नहीं दिया, वह असली नागरिक नहीं होता। टाल लगाना माल लगाने से कहीं अच्छा है। कुछ नगरपालिकाएँ माल नहीं काटती हैं। अपनेराम माल कम पसन्द करते हैं, यदि कामचलाऊ टाल भी रहे तो उसी से काम चला लेते हैं।

टाल मारनेवालों को माल मारने के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिये। टाल का सटीक तुक गाल है। इसलिए जो टाल होते हैं, उनका गाल बहुत बजता रहता है। 'टाल' में थोड़ी पूँछ लगा देने से 'दाल' बन जाती है। जिनकी टाल में दाल न गलती हो, अपनेराम उन्हें सलाह देंगे कि वे कत्तई जाल में न फसें और न गाल बजावें।

टाल बनने का बहाना किस लिए ?
क्या मुझे है टालना बस इसलिए ?
माल चीरो टाल से हँसते रहो
मुझे गुरु घंटाल ही रखो अहो !

❀

# हमारे गांधीजी पूरे मजाकिया थे

## मूरखराज

जिन दिनों महात्माजी अपनी आत्म-कथा गुजराती में लिख रहे थे, उन्हीं दिनों उसका अंग्रेजी अनुवाद भी धारावाहिक रूप से 'यंग-इण्डिया' में प्रकाशित होता जा रहा था। उस समय लन्दन में अध्ययनकाल की घटनाएँ प्रकाशित हो रही थीं, उन्हें पढ़कर उत्तरप्रदेश के एक बैरिस्टर ने गान्धीजी के पास एक पत्र भेजा—'आपको तो याद ही होगा कि हम दोनों ( बैरिस्टर और गान्धीजी ) 'मिसेज' के यहाँ मिले थे, इसका उल्लेख भी अपनी 'आत्मकथा' में कहीं कर दीजिये।'

पत्र पढ़कर गान्धीजी ने हँस कर कहा—पूरा 'मूरखराज' है। उसे अमर होना है ! पर यह नहीं जानता कि 'आत्मकथा' तो ममी बाई जैसे बिलकुल अज्ञात व्यक्तियों को अमर करने के लिए लिखी जाती है।

## शत्रु को हृदय में कैद करो

दिल्ली में गान्धीजी ने अपनी प्रार्थना-सभा में उदाहरण के रूप में एक घटना का वर्णन करते हुए कहा—'मीरआलम नामक एक व्यक्ति था। वह सरहदी गान्धी के देश का था। जैसे ये पहाड़-से हैं ( श्रोताओं में हँसी ) वह इनसे भी ऊँचा था। पहले वह मेरा मित्र था। पठान भोले होते हैं और इसी कारण वे बादशाह हैं। मीरआलम को किसी ने बहका दिया कि गान्धी ने पन्द्रह हजार पौंड जनरल स्मट्स से ले लिये हैं और कौम को बेच डाला है। बस, एक दिन वह मेरा दुश्मन बनकर आया। उसके हाथ में बड़ी-सी लाठी थी, और उस पर शीशे की मूठ लगी थी। उसने मेरी गर्दन पर वह लाठी मारी। मैं गिर पड़ा। नीचे पत्थर का फर्श था। मेरे दाँत टूट गये। पर ईश्वर की इच्छा थी इसलिए मैं मरा नहीं, बच गया। मीरआलम को दो तीन अंग्रेजों ने जो उसी रास्ते से जा रहे थे, पकड़ लिया। लेकिन मैंने यह कह कर उसे छुड़वा दिया कि 'वह बेचारा बहकावे में आ गया है कि मैं लालची हूँ, यह सुनकर इस फौजी पठान का खून खौल उठा और यह मुझे मारने को उद्यत हो गया तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।' और इस तरह मीरआलम को मैंने सदा के लिए अपने हृदय में कैद कर लिया। वह फिर मेरा मित्र बन गया।

## माता की सीख

सरदार वल्लभभाई पटेल ने गान्धीजी से कहा—अखबारों में छपा है कि लार्ड लिनलिथगो ने अपने भाषण की नकल भाषण के पहले ही आपके पास भेज दी थी। वह केवल देखने के लिए थी या परिवर्तन के लिए।

गान्धीजी ने जवाब दिया—यह बिलकुल झूठी बात है। उसमें सुधार या परिवर्तन की आवश्यकता नहीं, उसे तो फाड़ कर फेंक देना चाहिये।

सरदार ने मुस्कुरा कर कहा—पर आपको तो सभी देवों को एक साथ राजी करना भी अच्छी तरह आता है। अगर किसी लेख में आपने वायसराय के भाषण का कुछ अंशों में समर्थन किया है तो उसी में श्रीजयप्रकाश और सोशलिस्टों की प्रशंसा भी की है।

गान्धीजी ने हँसकर जवाब दिया—ठीक है। यह बात मुझे माँ ने सिखाई है। वह मुझे वैष्णव और शैव दोनों मन्दिरों में जाने के लिए कहती थीं; और जब मेरा विवाह हुआ, उस समय तो हिन्दू मन्दिरों के साथ ही एक फकीर की दर्गाह पर भी जाना पड़ा था।

## मैं बनिया होते हुए भी नहीं डरता

पहली जून को दिल्ली की प्रार्थना-सभा में गान्धीजी ने विनय का उदाहरण देते हुए बतलाया कि प्रार्थना के लिए जब बादशाह खान को बुलाने 'मनु' गयी तो उन्होंने कहा—मुझे प्रार्थना-सभा में देखकर किसी हिन्दू के दिल पर चोट पहुँच सकती है, इसलिए मैं वहाँ नहीं जाऊँगा। यह सुनकर मैंने उनसे कहलाया—आप तो पहाड़ जैसे हैं। मैं बनियाँ होकर नहीं डरता, तो आपको क्या डर है?

यह सुनते ही सारी सभा खिलखिला कर हँस पड़ी।

# दाढ़ी और मूँछ

संसार में बहुत दिनों तक मूँछ और दाढ़ी का राज रहा, और आज भी उनका बोलबाला है। पर दुःख के साथ यह कहना पड़ रहा है कि उनका यह राज घटने लगा है। दाढ़ी के अनगिनित ढंगों और रंगों का वर्णन करने के लिए पोथे के पोथे चाहिए। इस छोटे से लेख में उनकी बात उठाना, गागर में सागर भरने के समान व्यर्थ होगी। दुर्भाग्य से दाढ़ी के दिन अब लद चले हैं।

कुछ लोगों को दाढ़ी रखने के लिए मजहब मजबूर करता है। कुछ लोगों को राजा की आज्ञा से दाढ़ी रखनी पड़ती है। विदेशों के नाविकों में भी दाढ़ी रखने का चलन है। कभी फौजी सैनिकों को भी दाढ़ी रखनी पड़ती थी, लेकिन अब सैनिकों के लिए दाढ़ी रखने की जो आज्ञा थी, वह उठा ली गयी है। बेदाढ़ी के सैनिक और दाढ़ी वाले नाविक भूतकाल और वर्तमान के निशानों को अपने-अपने सूर्यमुखों पर (यदि औरतें चन्द्रमुखी होती हैं तो पुरुष सूर्यमुखी क्यों न कहे जायँ) लगाये सड़कों पर दिखाई देते हैं। दिल्ली के बाजारों में दाढ़ी की रंग-बिरंगी छटाओं को बिना पैसा दिये देखने का अवसर सबके लिए सुलभ है। महरौली मेले में भी दाढ़ियों का जमघट था। तरह-तरह की दाढ़ियाँ वहाँ दिखी

की पुरानी तहजीब को फिर से सजीव कर रही थीं। लेकिन दुःख के साथ यह कहना पड़ता है कि मजहबी क्षेत्र में भी दाढ़ी के खिलाफ बगावत करने वालों की संख्या दिन पर दिन बढ़ने लगी है। इस बगावत की तह में है हमारी सभ्यता और संस्कृति, हमारी तहजीब और तरीके पर अंगरेजियत का जहरीला असर। जिस पर उनकी छाया पड़ी, उसी को उसने बरबाद करके छोड़ा, अगर इसमें कुछ आपको शक हो, तो भारत के काले साहबों को देख लीजिए जो कण्ठ में लंगोटी लगाये दिन दहाड़े सड़कों पर घूमने में कुछ भी नहीं लजाते। एक जमाना था जब भारतीय कमर में लंगोटी बाँधते थे। अब वही लंगोटी कमर से खिसककर गरदन तक पहुँच गयी है।

दाढ़ी के नूर कम होते देख किसे दुःख न होगा? इसी दाढ़ी की बदौलत हिन्दी भाषा के भण्डार में कुछ ऐसे मुहाविरे आ गये हैं, जिनके प्रयोग से बड़ों की जबान में भी एक अनूठा रंग आ जाता है। 'दाढ़ीजार' किसने नहीं सुना या एक बार सुनने के बाद उसे भुला दिया? 'पकड़ो तो इनकी दाढ़ी' को गाँव गोहार को सुनाते ही बदमाश नौ-दो-ग्यारह हो जाते हैं। 'दाढ़ी में आग' लगाने की हविश बहुतों को होती है, पर उसे पूरा शायद ही कोई कभी कर पाता हो। न जाने कितनी कहावतों या कहानियों में दाढ़ी की करामात का उल्लेख मिलता है; लेकिन समय के प्रवाह में पुराने जमाने की यह निशानी भी अब बह चली। संजीदगी, बुजुर्गी और शान्ति का जो रस उससे बरसता था, वह भी थोड़े दिनों में ढूँढ़े न मिलेगा। अब सब बचकानी सूरत लिए नजर आयेंगे। इन सूरतों पर भला दाढ़ीवाली वह शान कहाँ; बुजुर्गों का वह अरमान कहाँ; छोटी उम्र वालों को बड़ी उम्र का समझ लेने का वह गुमान कहाँ?

इसी दाढ़ी ने सेठ गोविन्ददास को एक बार ऐसा चकमा दिया कि आमरण वह इसे न भूलेंगे। हैदराबाद के सम्मेलन में सेठ जी बोल पड़े कि जब वह (सेठजी) बालक थे तब उन्होंने सम्मेलन के मनोनीत सभापति की लिखी किताबें पढ़ीं थीं। मनोनीत सभापति सेठजी से उम्र में कम हैं, लेकिन इनके दाढ़ी है। बस, इस दाढ़ी को देखकर सेठ जी ऐसी उलटी बात कह गये। दाढ़ी क्या हुई, मानो वह बुजुर्गी की तख्ती है!

जिस राह दाढ़ी गयी, दिखाई देता है, वही राह मूँछों को भी विवश होकर पकड़नी पड़ेगी। सेफ्टीरेजरों की कृपा से मर्द भी अब औरतों की तरह अपने चेहरे को सफाचट रख सकते हैं। रोज प्रातःकाल दो-चार मिनट दे देने से दिनभर के लिए चेहरा लकदक हो जाता है। पहले बाप के मरने पर लोग मूँछें मुड़ाते थे। अब बाप के जीते ही प्रतिदिन धड़ल्ले से मूँछों पर हाथ साफ करने लगे हैं।

अब तक मूँछें मरदानगी की निशानी मानी जाती थीं। किसी की 'मूँछ पकड़ना' एक ऐसा अपराध समझा जाता था, जिसका शोध तभी संभव था, जब अपराधी के रक्त से धरती लाल हो जाये। मूँछ बहादुरी का प्रतीक मानी जाती रही है। बहादुर लोग 'मूँछों पर ताव' दिया करते थे। जिसकी मूँछ नीची हो जाती या कर दी जाती थी, वह बिना मारे ही मर जाता था। इससे बढ़कर किसी की हेठी कोई कर नहीं सकता। न जाने कितने सुभटों ने इसी 'मूँछ की आन' की रक्षा में न जाने कितनों की जान ले ली या अपनी जान दे दी। हिंदी कवियों ने भी मूँछ की तारीफ में बड़ी सुंदर कविताएँ की हैं; करते क्यों नहीं? अब मनुष्य की सारी बहादुरी सिमट कर मूँछों में आ बसी है। लेकिन सबके दिन एक-से नहीं होते और अब मूँछों की बहार की जगह सफा-

चट चेहरों ने ले ली। कौन कह सकता है कि इस इन-क्लाब, इस क्रान्ति से समाज का हित होगा या नहीं ? हाँ, हमारे 'कवि' और 'कवा' इस उलटफेर के कारण चिन्तित हो उठेंगे और कविता की रचना में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

विधु वदनी अभी तक तो औरतें होती थीं और भगवान की कृपा से वे आगे भी चन्द्रमुखी कहलायेंगी, लेकिन अब खूसट-मल को भी चन्द्रानन या चन्द्रमुख कहने के लिए कविता करने-वालियों या वालों को विवश होना पड़ेगा। नभ में अभी तक एक ही चन्द्र था। थोड़े दिन के बाद इस धरातल पर चन्द्रमा ही चन्द्रमा नजर आयेंगे। दिनेश-नन्दिनी भी चन्द्र और दिनेश कुमार भी चन्द्र ! इस समानता को देखकर भारतीय संविधान के रचयिता और प्रजा सत्ता के पुजारी गदगद हो जायेंगे। इस अर्थ में मूँछों का न रहना ही समाज के लिए हितकर मालूम होता है।

दाढ़ी और मूँछवाले आदमियों को देखने के लिए भविष्य में बच्चों और बूढ़ों को अजायब घर जाना पड़ेगा। वहीं मूँछें और दाढ़ियाँ सुरक्षित मिलेंगी। घरों के बाहर चन्द्र प्रकाश का ही एकाधिपत्य रहेगा। लेकिन दाढ़ी मूँछ के इस दुखदायी विलोपन पर दो बूँद आँसू भी हममें से कोई बहायेगा या नहीं।

# जिद्दी भाषा-भाषी

एक पानी के जहाज में चार मुसाफिर, जो बड़े जिद्दी थे, इङ्गलैण्ड के रास्ते चले जा रहे थे। सबने यह कसम खा ली थी कि वे किसी की बात का उत्तर न देंगे और सब अपनी अपनी भाषा में बात करते जायँगे। सबका मतलब एक ही था, पर किसी के प्रश्न का उत्तर कोई नहीं देता था, सब जिद्दवश एक ही बात दुहराते थे। हिन्दी सभी समझते थे, पर बोलते अपनी मातृभाषा में थे। सब एक दूसरे से एक ही बात पूछते एवं बोलते थे। उनकी इस मूर्खता पर सुनने वाले हँस रहे थे।

हिन्दी के भक्त ने पूछा—आपका इरादा कब जाने का है?

गुजराती लड़की ने भी बात दुहराई—तमारो विचार क्यारे जवानो छे?

मराठी बुड्ढे ने तुरत अनुवाद किया—आपला कधीं जाण्यांचा विचार आहे?

जब अंग्रेजी के भक्त ने बात समझी तो तुरत अनुवाद सुनाया—ह्वेन डू यू इनटेण्ड गोइङ्ग?

हिन्दी भक्त—मुझे दस पच्चीस की गाड़ी पकड़नी है।

गुजराती लड़की—म्हारे १०—२५ नी गाड़ी पकडवी छे।
मराठी बुड्ढा—मला दहापंचवीसची गाडी पकडायची आहे।
अंग्रेजी भक्त—आइ हैव टू कैच द टेन ट्वेन्टीफाइव ट्रेन।

हिन्दी भक्त—जल्दी कीजिये वरना आपकी गाड़ी छूट जायगी।
गुजराती लड़की—जल्दी जाव नहीं तो गाडी ऊपडी जशे।
मराठी बुड्ढा—जल्दी करा नाहीं तर गाडी निघून जाइल।
अंग्रेजी भक्त—मेकहेस्ट आर एल्स यू विल मिस द ट्रेन।

हिन्दी भक्त—गाड़ी छूटनेवाली है।
गुजराती लड़की—गाडी उपडवानी तैयारी छे।
मराठी बुड्ढा—गाडी सुटणार आहे।
अंग्रेजी भक्त—द ट्रेन इज एबाउट टू लीव।

हिन्दी भक्त—हम रास्ता भूल गये।
गुजराती लड़की—अमे रस्तो भूली गया।
मराठी बुड्ढा—आम्ही रस्ता चुक लों।
अंग्रेजी भक्त—वी हैव लास्ट आवर वे।

हिन्दी भक्त—आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई।
गुजराती लड़की—तमने मलीने घणो आनन्द थयो।
मराठी बुड्ढा—आपल्या भेटीनें फार आनन्द झाला।
अंग्रेजी भक्त—आई एम वेरी डीलाइटेड टू मीट यू।

हिन्दी भक्त—जरा जोर से बोलिये।
गुजराती लड़की—जरा जोरथी बोलो।
मराठी बुड्ढा—जरा मोठ्याने बोला।

अंग्रेजी भक्त—स्पीक ए लिटिल लाउडर प्लीज।

हिन्दी भक्त ऊँची आवाज में बोलने ही वाला था कि जहाज के साइरन ने इस बात की सूचना दी कि वह अदन के बन्दरगाह पर खड़ा हो गया है, जहाँ न तो मराठी काम आ सकती थी और न गुजराती। चारों जब बाजार में घूमने निकले तो उन्हें अपने उर्दू-भाषी ऐसे यात्री को साथ लेना पड़ा जो अरबी-फारसी भी जानता था। इन लोगों की भाषा की जिद्द टूट चुकी थी और हिन्दी-अंग्रेजी की ऐंठ भी खत्म हो चुकी थी।

सबने एक स्वर से निश्चय कर लिया था कि वे दुनिया में जहाँ जायँगे, वहीं की भाषा सीखेंगे।

# अखण्ड ब्रह्मचारियों के देश में

आप लोगों ने शायद ही अखण्ड ब्रह्मचारियों के देश का नाम सुना हो। दुनिया के नकशे में यह देश कहीं भी नहीं दिखाया गया है। यह गलती वस्तुतः नकशा-नवीस की है। एक समय आयेगा जब इस देश का नकशा सब राष्ट्रों के मध्य में होगा, जैसे आज यहूदियों का राष्ट्र इसराइल है। ठीक ऐसे ही इस देश का भी जन्म होगा। अभी इस देश के लोग दुनिया के हर कोने में फैले हुए हैं। एक दिन इनका भी संगठन होगा, इनकी आवाज बुलन्द होगी और संयुक्त राष्ट्रसंघ को इन्हें मान्यता देनी होगी। इनका प्रतिनिधि संयुक्त राष्ट्रसंघ में बैठेगा। उसकी स्वतन्त्र नीति होगी, वह किसी गुट में शामिल नहीं होगा।

एक जमाना इनका भी था। बादशाही हरमों में इनकी चलती थी। बेगमें अपने आशिकों से मिलने के लिए इनके तलवे सहलाती थीं। खुदा ने क्या खूब बाँके जवान बनाये? आँखों में काजल, सिर पर जरदोजी की टोपी, चाल में बाँकपन, जो भी देखता, देखता ही रह जाता था, लखनऊ के बाँके मशहूर हैं। मगर खुदा ने वे दिन छीन लिये।

बहादुर ऐसे थे कि ऋषि-मुनियों की तरह आँखों के इशारे से ही दूसरों को पामाल कर देते थे। धन्य हैं, ये लोग—अहिंसा के पुजारी, गान्धीयुग के अनुयायी। कभी इन्होंने दूसरों पर हाथ नहीं छोड़ा। कभी किसी को कटु वचन नहीं कहे। दूसरों की माँ बहनों पर कुदृष्टि नहीं डाली। आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करनेवाले, मधुर-भाषी, सदा प्रसन्न रहनेवाले, निर्लेप, अपने ही राग-रंग में मस्त रहनेवाले इन भलेमानुसों को दुनिया के नकशे में कहीं जगह न प्राप्त हो, निस्सन्देह यह एक अचरज की बात है।

स्त्री हो या पुरुष, जो भी इन बाल-ब्रह्मचारियों को देखता है, मधुर मुस्कान से इनका स्वागत करता है। ये भी इतने सहृदय हैं कि प्राणीमात्र से घुलमिल कर बातें कर लेते हैं। आज के जमाने में रास्ते में बहन-भाई का आपस में बात करना लोगों की दृष्टि में सन्देहास्पद है, परन्तु स्त्रियाँ बेधड़क इनके उपदेश सुनती हैं। उनके मर्दों को कोई इतराज नहीं। व जानते हैं कि यह बाल ब्रह्मचारी हैं। इनमें बातों की शक्ति है, पौरुष की नहीं। जन्म, मरण, शादी, मुण्डन सबमें हर समय तैयार रहते हैं। आप बुलावा दें या न दें, इन्हें मालूम होने की देर है। अपनी ढोलक लेकर तीर की तरह पहुँच जाते हैं। नारदजी के अनुयायी हैं। दूसरों की भलाई में ही अपना जीवन उत्सर्ग कर देते हैं। सच पूछिये तो नारदजी इनके कुल-गुरु हैं। उनके उपदेश पर चलनेवाले इन निस्वार्थी जीवों का देश नकशे में न हो, यह एक खटकनेवाली बात है।

लचीलापन देखना हो तो इन्हें देखिये। ब्रह्मा ने इनमें कूट-कूट कर भरा है। इनकी चाल में एक निराली अदा है। जन्मजात कवियों ने इन्हीं से हाव-भाव लेकर अपनी सुन्दर कविताओं की रचना की, इन्हीं के गुण लेकर नेतागण स्वराज लेने में सफल हुए। इन्हीं के सुन्दर मुख की प्रेरणा से आजकल आम जनता

दाढ़ी-मूँछ का सफाया कर रही है। ये अनुशासन में रहनेवाले, दूसरों को अपना गुण देनेवाले, अहिंसा के पुजारी, स्त्रियों के प्रिय, होते हैं। ऐसे लोगों का देश नकशे में न हो, हम नहीं मान सकते। हालाँकि नकशा-नवीस ने गलती की है, परन्तु आप चश्मे के भीतर से देखिये और राष्ट्रसंघ से पूछिये तो आपको उनके देश का पूरा पता लग जायगा। ज्योतिषी से उनकी ग्रह-दिशा पूछिये। किस दिशा में, किस रेखा पर, कितने अक्षांश पर उनका देश है?

जिस देश का नाम सुनते ही लोग मुस्करा देते हैं, भला उस देश को देखने की लालसा किस मानव में नहीं होगी? स्वर्ग का नाम तो आप लोगों ने भी सुना होगा, देखा नहीं होगा। ऐसे ही हम उस देश का नाम सुनते रहे हैं, देखा नहीं है। जन-खों का देश स्वर्ग से भी महान और श्रेष्ठ है, क्योंकि उस देश में कोई मर्द किसी की औरत को नहीं ले भागता। भागे भी क्या? वहाँ औरतें भी तो नहीं हैं। वहाँ तो सब चिर कुमार, आजन्म ब्रह्मचारी, नारदमुनि के चेले, गान्धीबाबा के अनुयायी, राग-द्वेष से परे रहने-वाले मिलेंगे। ऐसे गुण देवताओं में भी नहीं हैं। अबाधगति से विचरण करनेवाले इन सनातन सनत्कुमारों के चेलों का देश स्वर्गलोक से भी महान है। इस देश को देखने की लालसा किस मानव में नहीं होगी?

एक सिद्ध ज्योतिषी ने जन-खों का देश मकर और कर्क रेखा के मध्य बताया है, जो यहाँ से १९ अक्षांश के ऊपर स्थित है। उत्तर और दक्षिण के बीच में पड़ता है। यही उस देश की चौहद्दी है। दूसरे दिन हमने सरकार को पासपोर्ट के लिये अर्जी दे दी। वाहरी हमारी सरकार! तीन महीने बाद जवाब आया कि इस देश से कोई राजनयिक सम्बन्ध नहीं और न इस देश को ही

नकशे में कहीं दिखाया गया है, लिहाजा आपको पारपत्र नहीं मिल सकता।

चूँकि मैंने दृढ़ निश्चय कर रखा था कि इस देश की खबर जरूर ले आऊँगा। अतः रेलगाड़ी एवं मोटर की मदद से एक दिन उस देश की सीमा पर भी पहुँच गया। पहरेदारों ने तालियाँ बजा-बजा कर सबको सचेत करना शुरू किया कि कोई गैर मुल्की अपने मुल्क की सीमा पर आ गया है। एक सिपाही कमर पर हाथ रखकर नाजुक अदा से खड़ा हो मुझे सीमा से देख रहा था। मैंने दूर से सिपाहीजी को सलाम किया। सिपाहीजी ने हाथ बजाकर मधुर मुस्कान के साथ मुझे बुलाया।

मैंने कहा—मैं आपका देश देखने आया हूँ। मेरे पास पारपत्र नहीं है। कृपया मुझे घुसने की इजाजत मिलनी चाहिये।

इस पर सिपाहीजी हँसे और कहा कि हमारे मुल्क के लिये पारपत्र की जरूरत नहीं है। यहाँ सबके लिये दरवाजा खुला हुआ है, परन्तु एक शर्त है।

मैंने कहा—वह क्या है?

सिपाही ने कहा—जैसे त्रियाराज में मर्द नहीं जा सकते थे, वैसे हमारे राज में भी जाना मना है। किन्तु हमारी सरकार सहृदय है। हमारे कानून के अनुसार आपको रोज दाढ़ी-मूँछ चिमटी से मुँड़वानी पड़ेगी, ताकि दुबारा दाढ़ी, मूँछ पर बाल न आ जाये। मैं मूँछवाला मर्द था, इसलिए सोच में पड़ गया। मैंने सीमा सिपाही को एक सुगन्धित सिगरेट पेश की, जो उन्हीं के अनुरूप थी। सिगरेट का सुगन्धित धुआँ नास-गृह में लगते ही सिपाहीजी प्रसन्न हो गये। गर्दन झटकाकर कमर में बल डाल बड़ी प्रसन्न मुद्रा से सिगरेट पीनी शुरू की। मैंने मौका देखा और सिपाहीजी से प्रार्थना की—'महाशयजी, अगर आप आज्ञा

दें तो मैं सेफ्टीरेजर से दाढ़ी-मूँछ का सफाया कर दूँ। चिमटी से बड़ा दर्द होगा। सिपाहीजी प्रसन्न थे। उन्होंने तत्काल मंजूरी दे दी। बोले-आपकी दाढ़ी-मूँछ के बाल तब तक दिखने नहीं चाहिये, जब तक आप यहाँ रहें। मैंने स्वीकार कर लिया। सिपाहीजी ने एक कागज सही करके मुझे दे दिया। कागज पर लिखा था कि इनकी दाढ़ी-मूँछ के बाल चिमटी से सफा किये गये हैं। हेल्थ अफसर की उस पर मोहर लगा दी गयी। सिपाहीजी रजिस्टर लेकर खानापूरी करने लगे।

सिपाही—आप कहाँ से आ रहे हैं ?

'मैं श्रीकृष्ण के देश गोलोक से आ रहा हूँ।'

सिपाही—तो आप साँड़ हैं !

मैंने कहा—जी !

सिपाही ने कहा—हमारे धन्य भाग्य, हमारे कुलगुरु हमेशा इसी लोक का गुणगान करते रहते हैं। श्रीकृष्णजी आनन्द में हैं न ? खूब दूध-मलाई उड़ा रहे होंगे।

मैंने कहा—सिपाहीजी, आजकल ऐसी बात नहीं है। ये तो बहुत पुरानी बातें हो गयीं। आजकल विज्ञान-युग में दूध मलाई खानेवालों को लोग पेटू कहते हैं। आजकल विटामिन ए बी सी डी चल रहा है। श्रीकृष्ण को यही भोग लगता है।

सिपाही—साँड़जी, यह विटामिन ए बी सी डी क्या है ?

मैंने कहा—आप नहीं जानते तो सुनिये। विटामिन ए डी चिकनाहट से भरपूर है, आज के युग में उसे वनस्पति घी कहते हैं। विटामिन बी सी इ एफ टमाटर, आलू, मखनिया खोवा, मखनिया दूध दही, आमलेट, चाय, काफी, तम्बाकू में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। आजकल श्रीकृष्णजी यही सब सेवन कर रहे हैं। उन्होंने पुराने भोजन को जीर्ण कपड़े की तरह त्याग दिया है।

इतने में क्या देखता हूँ कि बहुत से हवाई जहाज आकाश में मँडला रहे हैं। वे जहाज चुप्पा ( साइलेन्सर ) थे।

सिपाही ने ताली बजा कर कहा—साँड़जी ! तैयार हो जाइये, आपके लिये विमान आ गये।

मैंने कहा—इतनी जल्दी ? यह सब जादू की तरह कैसे हो गया।

सिपाही—मैंने आपकी पहुँचने की खबर वायरलेस से दे दी थी और टेलीविजन से आपका नकशा भी वहाँ चला गया था, इसलिए आपके स्वागत में हमारी सरकार ने यह आधुनिक विमान भेजे हैं, इनमें आवाज नहीं होती। चाहे जहाँ यह सीधे उतर सकते हैं और उड़ सकते हैं, चाहे जितने लोग इसमें बैठ सकते हैं। ये विमान छोटे-बड़े हो सकते हैं। यह सब श्रीरामजी कृपा है। मैं सिपाही की बात सुनकर भौंचक्का हो गया, सोचने लगा, यह त्रेतायुग है क्या ?

इतने में ही एक जहाज मेरे से दस कदम के फासले पर आकर रुक गया। उसमें गाने की मधुर ध्वनि आ रही थी, मानो इन्द्र का अखाड़ा हो। उस विमान से नाजुक अदा से कमर में बल डालते हुये एक जनखा सरदार ने ताली बजाकर मेरा स्वागत किया और अर्जी पेश की कि आपको हमारी सरकार ने याद किया है। आपके स्वागत में यह विमानों का दस्ता भेजा है। कृपया आप चलने का कष्ट करें।

मैं विमान पर सवार हुआ, लेकिन विमान को देखकर मेरी कल्पना साकार हो गयी। सतयुग की घटना दिमाग में चक्कर खाने लगी। इतना सुन्दर बगैर बिना आवाज, सब सुखों को देने-वाला, दानवों के त्रिपुर को भी मात करनेवाला यह विमान वास्तव में अलौकिक था।

खैर साहब, दस मिनट में हमारा विमान बीच बाजार में उतर गया। वहाँ मुंड ही मुंड दिखायी पड़ रहे थे, कहीं भी तिल रखने की जगह नहीं थी, परन्तु हमारे विमान को उतारने के लिए एक छोटा साफ मैदान बना दिया गया था।

जब मैं विमान से बाहर निकला तो साढ़ेसाती तोपों की सलामी दी गयी और तीन हजार घँघरिया पलटन ने ढोलकों की धमधमाहट और तालियों की गड़गड़ाहट से मेरा स्वागत किया। ऐसा स्वागत शायद ही किसी का हुआ होगा। किसी रूसी और अमेरिकी नेता का भी ऐसा स्वागत शायद हुआ हो। इतने में क्या देखता हूँ कि वीणा हाथ में लिये श्रीनारदजी चले आ रहे हैं। बड़ी जोरों की तालियों की गड़गड़ाहट से नारदजी का स्वागत किया गया। मैंने नमस्कार किया और ब्रह्मचारियों के राष्ट्रपति के साथ भूयान पर बैठा ही था कि वह धरती पर रेंगने लगा।

राष्ट्रपति की झाँकी अजीबोगरीब थी। आँखों में काजल की पलकों के बाहर तक रेखा खिंची हुई थी। जगह-जगह फाटक बने हुए थे। फूल-माला और गुलदस्ते इतने भेंट में आये कि हमारा भूयान फूलों से लद गया। अन्त में हमारा भूयान वहाँ पहुँचा, जहाँ उस शहर की तमाम जनता मेरे स्वागत में एक लंबे-चौड़े मैदान में बैठी थी। स्वागत-मंच बड़ा आलीशान बना था, गोया मास्को विश्वविद्यालय की इमारत हो। राष्ट्रपति मंच पर आये तो लाखों जनता ने ताली बजा कर हमारा स्वागत किया। अखंड ब्रह्मचारी जनगण के राष्ट्रपति ने मंच पर मेरा स्वागत करते हुए कहा—भाइयो, हम परम हर्ष के साथ श्रीकृष्णदेशीय गोलोक-वासी श्री साँड़ महोदय का हार्दिक स्वागत करते हैं। उन्हें हम

अपनी शुभकामनाएँ समर्पित करते हैं। ( तालियों की भयानक गड़गड़ाहट होती है। )

मेरा भी कर्तव्य हो जाता था कि मैं भी कुछ स्वागत-भाषण का उत्तर दूँ।

राष्ट्रपति की काकुलें बलखाती हुई हवा में लहरा रही थीं। अब्रुओं पर भी काजल की लकीर धनुषाकार शोभित थी। बालों की वेणी जरी के तारों के साथ गुँथी हुई थी, उस पर पारिजात के फूलों की वेणी पड़ी हुई थी। नाक में नौ इञ्च का नथ हीरे पन्ने से जड़ा हुआ अपनी अलग ही शोभा बढ़ा रहा था। जरी के तारों से कसी कंचुकी शरीर में शोभायमान हो रही थी। कमर में हीरे की करधनी और पैर में ऊँची एड़ी की जरदोजी की चप्पल की छवि देखने योग्य थी। गालों पर सेब की तरह कोई यूनानी रंग पोता गया था। होंठ अमरीकन लिपस्टिक से सुर्ख हो रहे थे। हाथ की अँगुलियाँ नागिन की तरह फन फैलाये बार-बार हवा में बल खा रही थीं। कमर तो इतनी बल खा रही थी कि सभा-मंच पर शायद ही वे टिक कर बैठ पाये हों, ऐसे थे उस देश के राष्ट्रपति! जो अपनी माधुरी अदा से सबके प्यारे बने हुये थे।

मैंने भी खड़े हो कुछ कहना शुरू किया। प्रारम्भ में अजीब पशोपेश में पड़ गया था कि इनको क्या सम्बोधन करूँ, ताकि इनका मान बढ़े। किन्तु दूर-ध्वनि प्रसारक यन्त्र पर खखारने के बाद ही सूझ आ गयी और मैंने कहना शुरू किया।

श्रीमान महामहिम राष्ट्रपति और इस राष्ट्र के मंगलामुखियो, आपने जो मेरा हार्दिक स्वागत किया है, उसका किस मुँह से वर्णन करूँ? आप सबको मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। आप लोगों ने जैसी तरक्की की है, शायद ही किसी मुल्क ने की हो। मुझे आप सबसे मिलकर बहुत ही प्रसन्नता हुई है। आपके मुल्क की

सहकारिता देखकर तो मैं बागबाग हो गया हूँ। यहाँ अन्य देशों की तरह पार्टी-बाजी नहीं है, लोग एक दूसरे की आलोचना नहीं करते, सब राग-रंग में मस्त रहते हैं। ऐसा क्यों न हो? जिनके कुलगुरु देवऋषि नारदजी हों, वहाँ सदैव आनन्द ही आनन्द रहेगा। ( तालियाँ बजती हैं। )

बृहन्नलाओ, महाबीर अर्जुन ने आपका ही स्वरूप धारण कर कौरवों पर जीत प्राप्त की थी और अपने रूप को छुपाने में सफल हुए थे। ऐसे मंगलामुखियों के देश में आकर मैं कृत-कृत्य हो गया हूँ। ( तालियाँ बजती हैं। ) शास्त्र कहता है—जिसने काम जीता, उसने जगत जीता। यह खूबी प्रत्यक्ष देख रहा हूँ। आपका लचीला शरीर देखकर जितना आनन्द प्राप्त हो रहा है, उतना देव स्वरूप देखने से भी नहीं। ( होठों पर हँसी आ जाती है ) ऐसे महान दिलवालों के देश में आकर मैं निहाल हो गया।

अहिंसा के पुजारियो, इतिहास, पुराण, वेद, श्रुतियाँ गवाह हैं। भगवान विष्णु की तरह आप लोगों ने किसी दूसरे का बुरा नहीं चाहा, न किसी देश को हड़पने की चेष्टा की, न किसी देश के भीतरी मामले में हस्तक्षेप किया। ऐसी महान आत्मावालों के देश में आकर अपने को गौरवान्वित समझता हूँ। महात्माओ, आपका देश दुनिया के नक्शे में स्वार्थी राष्ट्रों ने अंकित नहीं किया. लेकिन अब मुझे इसका खेद नहीं। क्योंकि जब स्वर्ग-नर्क लोक भी नक्शे से गायब हैं तो फिर आपका देश नक्शे में कैसे छिप सकता है? आजकल के स्वार्थी प्राणी स्वर्ग नरक को कोरी कल्पना का देश मानते हैं, वैसे ही आपके देश को भी मानते हों तो क्या अचरज? परन्तु मेरी कल्पना साकार हो गयी। त्रिशंकु स्वर्ग सदेह चला गया था। पारपत्र न होने से वापस लौटा दिया गया था, सच पूछिये तो स्वर्ग में भी राग-द्वेष, काम-क्रोध है।

लेकिन आपका देश तो दुर्गुणों से बहुत ही परे है। आप लोग सहृदय हैं। आपके यहाँ पारपत्र का झमेला नहीं है, ऐसे सज्जनों के बीच में आकर अपने को धन्य समझता हूँ। ( तालियाँ बजीं ) मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ आप लोगों के साथ हैं। भगवान अर्धनारीश्वर आपके उपास्यदेव हैं। देवऋषि नारदजी, आपके कुलगुरु हैं, अहिंसा में आपको पूर्ण विश्वास है, विज्ञान में मयदानव के लघु मामा आपके सहयोगी हैं, ऐसे देश की उन्नति में राहु केतु भी बाधक नहीं हो सकते, क्योंकि कन्या राशि की आप पर सदैव कृपा रही है। अतः आप सब महानुभावों को मैं शत्-शत् प्रणाम करता हूँ।

भाषण खत्म करने के बाद मैं राष्ट्रपति के साथ उनके भवन में ही ठहराया गया।

दूसरे दिन सबेरे भगवान अर्धनारीश्वर के मन्दिर में ले जाया गया, वहाँ प्रसाद फूल-माला पुष्प समर्पित कर लौटा तो पुनः विकास कार्य देखने रवाना हो गया।

विकास-मन्त्रीजी मुझे पहले उड़न-कार्यालय में ले गये। वहाँ की प्रगति देखकर मैं भौंचक रह गया। हमारे देश में बड़ा होहल्ला मचा हुआ है कि यह तश्तरियाँ किस मुल्क की हैं? कौन प्राणी किस देश से इनका संचालन कर रहे हैं, यह अभी तक अन्य राष्ट्र नहीं जान पाये हैं। उड़न तश्तरियाँ इसी मुल्क की हैं, इनका संचालन मनसे होता है। इनमें किसी तरह की ईंधन की जरूरत नहीं है। यह अग्नि-निरोधक हैं, वेल्ट प्रूफ हैं, उद्जन, अणुबम भी इनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। इनके अन्दर अन्तर्दृष्टि मशीनें हैं। आप जिस मुल्क को भी चाहें, देख सकते हैं। वहाँ से खबर भेज सकते हैं और खबर ले सकते हैं। यह तश्तरियाँ मयदानव के भाई ने निर्मित की हैं, जो जन-खों के देश के मुख्य

अभियन्ता हैं। खाद्य-समस्या का हल इस राष्ट्र ने अद्भुत ढंग से कर रखा है। सबको एक अद्भुत फल दिया जाता है। यह जादुई सेब खाने से बारह महीने तक भूख नहीं लगती, हर वक्त पेट भरा रहता है। इसलिए खेती-बाड़ी नहीं होती। नाजुक अदावाले लोगों को कृषिकार्य में लचक पड़ जाने का हर वक्त डर बना रहता है। सर्वत्र रास्ते इतने साफ और सुथरे हैं कि शायद ही किसी दूसरे मुल्क में हों।

राष्ट्र के चारो तरफ दीवाल खिंची हुई है, दीवाल में वातानुकूलित यन्त्र लगे हुये हैं। राष्ट्र की गन्दी हवा बाहर फेंकते हैं और इच्छा के अनुकूल गर्म और सर्द हवा ग्रहण करते हैं। ऊँचे-ऊँचे पनचक्की की तरह यन्त्र चारो ओर लगे हुए हैं जो बाहर की दूषित हवा राष्ट्र में आने से रोकते हैं। यही कारण है कि वहाँ के निवासी स्वस्थ रहते हैं। उड़न तश्तरियों से दोनों वक्त सुगन्धित पानी सड़कों पर छिड़का जाता है, ताकि जनता सदैव प्रफुल्लित रहे। मैं इनका विकास-कार्य देखकर गद्गद् हो गया। मेरी इच्छा हुई कि यहाँ की नागरिकता मुझे मिल जाय। लेकिन बाद में नारदजी से मालूम हुआ कि यहाँ की नागरिकता लेने में एक शर्त है—पुरुष बन्ध्य होकर ही यहाँ रह सकता है। अतः मैंने नागरिक अधिकार लेने का विचार त्याग दिया। जब कोई पुरुष वहाँ की नागरिकता लेता है, तब तमाम राष्ट्र में घोषणा की जाती है, और बहुत भारी उत्सव होता है। कई दिनों तक जश्न मनाया जाता है।

रात्रि में मेरे स्वागत में सांस्कृतिक समारोह किया गया। इस समारोह में श्री नारद जी विराजमान थे। रात के १ बजे तक नाच-गाने होते रहे, ढोलक और तालियाँ बजती रहीं, अजीबोगरीब स्वाँग दिखाये गये। समारोह काफी मनोरंजक रहा।

भोज देने का सवाल ही नहीं रहा, क्योंकि मुझे उसी दिन भूखहरण सेब खिला दिया गया, ताकि भूख ही न लगे।

शाम को श्री नारद जी महाराज के यहाँ प्रणाम करने गया, उन्होंने बड़े आदर से मेरा स्वागत किया और कुशल-क्षेम पूछी।

मेरे मन में बहुत-सी बातें थीं, जो श्री नारद जी से पूछ कर निर्णय चाहता था, अतः मैंने प्रार्थना की कि मेरा संशय दूर करें।

श्री नारद जी मुस्काये, बोले—आप जो प्रश्न करेंगे वह मुझे विदित है, आपकी शंका समाधान करूँगा।

नारद जी बोले कि हे साँड़जी, मैं पौराणिक युग का प्राणी हूँ। मैं तो शास्त्र मतानुसार ही प्रश्नों का विवेचना करूँगा। आप ठहरे आधुनिक युग के, सो मेरी बात का बुरा नहीं मानना। आज-कल के मनुष्य मुझे दकियानूसी विचारों वाला कहते हैं। अतः आपकी आत्मा को कष्ट पहुँचाने का मेरा इरादा नहीं, मैं पहले से ही आपसे क्षमा चाहता हूँ।

मैंने कहा—देवऋषि जी, यही तो आपका बड़प्पन है, हम आपके दर्शन के अभिलाषी हैं, आपके श्रीमुख से अमृत की धारा बहती है फिर हम क्यों वंचित रहें?

श्री तुलसीदासजी ने कहा है कि संगत साधुओं की कीजिये।

आप ब्रह्मज्ञानी हैं चारों युगों की बात जानते हैं। शंका समाधान आपके सिवा दूसरा कभी नहीं कर सकता।

नारद जी मधुर मुस्कान के साथ बोले—साँड़जी, आप बड़े हठी हैं। खैर, जब आप पूछ ही रहे हैं तो मैं जरूर समाधान करूँगा।

मैंने पूछा—ब्रह्मपुत्र, सब लोकों का वर्णन महाभारत, पुराण आदि में आता है परन्तु जनखा-लोक का नाम कहीं नहीं सुनाई पड़ता। अतएव इसी लोक के बारे में समाधान कीजिए।

नारदजी बोले—हे साँड़जी, इस लोक की कथा बड़ी मनोहारिणी है, सब सुखों को देनेवाली है अतः आप ध्यान से सुनें।

इस देश की गाथा पुराणों और इतिहासों में नहीं है। यह देश भी अन्य देशों की तरह अति आधुनिक है। तीनों युगों में इसका कहीं भी गुण-गान नहीं है परन्तु यहाँ के प्राणी आधुनिक नहीं हैं, यह मंगलामुखी लोग त्रेता में भी थे और भगवान राम के अनन्य भक्त थे। श्री रामजी ने इनको वरदान दिया था कि कलयुग याने यन्त्रयुग में तुम्हारा राज्य होगा।

मैंने विनीत होकर श्री नारद जी से पूछा—महाराज, यह तो बतलाने की कृपा करें कि श्रीराम जी ने क्यों और कैसे इतनी कृपा इन पर की। कलयुग में इनको राज्य करने का वरदान दे दिया?

नारद जी बोले—साँड़जी, यह कथा गोपनीय है, आपका इन वृहन्नलाओं में प्रेम देखकर यह गोप्य कथा आपको सुना रहा हूँ। अतः आप प्रेमपूर्वक सुनें।

नारद जी बोले—यह रामायण काल की कथा है। जब श्री राम जी को उनके पिता दशरथ जी ने १२ वर्ष का बनवास दे दिया और श्री राम जी वनगमन करने लगे। तब अयोध्या के तमाम नागरिक दुःखी मन से उनको पहुँचाने के लिए श्री रामजी के पीछे-पीछे चले, जब सरयू का किनारा आ गया, तब श्री राम चन्द्र जी अयोध्या के नागरिकों से दुखी मन सप्रेम बोले—हे अयोध्या के नरनारियो, अब आप लोग अयोध्या लौट जाइये। मेरे दुखी माता-पिता को धीरज दीजिए। हम वनवास का समय बीतने पर अवश्य आयेंगे। इतना वचन कह श्री राम जी लक्ष्मण सीता सहित नौका में बैठकर सरयू के उस पार चले।

अयोध्या के नागरिकों में यह वृहन्नलाएँ भी थीं। इन्होंने निश्चय किया कि श्री राम जी ने अयोध्या के नर-नारियों को जाने

की आज्ञा प्रदान की है, हम मंगलामुखियों को कुछ नहीं कहा। इसलिए जब तक श्री राम जी घर तक वापस नहीं आयें, तब तक हम अयोध्या में लौटकर नहीं जायेंगे और उनके वियोग में हम सब सरयू के किनारे १२ वर्ष तक निवास करेंगे।

सो, हे साँड़ जी! मंगलामुखी लोग जिनकी गणना नर-नारियों में नहीं थी, वहीं झोंपड़ी बनाकर रहने लगे। कंदमूल फल खाकर अपना जीवन-यापन करते रहे। जब बारह वर्ष पूरे हुए और श्री राम अयोध्या से लौटे तब क्या देखते हैं कि सरयू के किनारे ढोलकें बज रही हैं, तालियाँ पीटी जा रही हैं, श्री राम के गुणगान हो रहे हैं।

श्री राम जी ने पुष्पक विमान को नीचे उतरने की आज्ञा प्रदान की। जब विमान नीचे उतरा तो यह लोग डर के मारे और भी जोर-जोर से श्रीराम, सीताराम कहकर चिल्लाने लगे। श्री रामजी विमान से नीचे उतरे तो अखण्ड ब्रह्मचारियों ने पहचान कर उन्हें दौड़-दौड़ कर नमस्कार किया, हाथ बाँधकर खड़े हो गये।

श्री रामजी ने कहा—हे मंगलामुखियो, मैंने तो अयोध्या-वासियों को अयोध्या जाने की आज्ञा प्रदान की थी, फिर भी आप लोग मेरे वियोग में यहीं निवास कर रहे हैं।

बृहन्नलाओं के मुखिया ने कहा—महाराज, आपकी जै हो। आपने अयोध्या के नरनारियों को जाने की आज्ञा दी थी, हमें नहीं। हम न नर में हैं न नारी में। जब तक आप हमें आज्ञा प्रदान नहीं करेंगे, हम अयोध्या में नहीं जायेंगे।

श्रीरामजी उनकी मधुर वाणी सुनकर परम प्रसन्न हुए। अपने प्रति उनकी अनन्य भक्ति देखकर बोले—मैं तुम सबको वरदान देता हूँ कि कलयुग ( यन्त्रयुग ) के उत्तरार्ध में तुम्हारा ही राज्य होगा। अब सब लोग हमारे साथ विमान में अयोध्या चलें।

सो हे साँड़जी, श्रीराम जी के वरदान से इस कलयुग में इन्हीं का तमाम देशों में शासन स्थापित है। यही वह गोपनीय कथा थी जो मैंने आपको सुनायी है। यह कथा सबको सुख देने वाली है।

जो इस कथा को सुनता है, भगवान अर्धनारीश्वर उसको मोटर-विमान प्रदान करते हैं।

मेरे मन में फिर शंका उठी और मैंने श्री नारद जी से पूछा—भगवन्! आप कहते हैं कि दुनिया में आजकल इन्हीं का शासन चल रहा है सो कैसे, जरा कृपा करके साफ-साफ बतलाइये।

श्रीनारदजी बोले—साँड़जी, यह सत्य है। इस वक्त दुनिया में वृहन्नलाओं का ही शासन है। श्रीरामजी के वरदान से यह सौभाग्य इनको प्राप्त हुआ है। इसमें शंका नहीं करनी चाहिये।

मैंने पूछा—देवऋषिजी, आपके पास क्या सबूत है, जो आप इतना जोर देकर कह रहे हैं कि वृहन्नलाओं का शासन है? कृपया शंका दूर कीजिये। मैं तो भारत की बात जानता हूँ कि वहाँ इस समय एक अहिंसक जाति का राज्य है।

नारदजी मुस्काये। बोले—साँड़जी, राजा की पहचान उसके कार्य से होती हैं। आप नाराज न हों, मैं किसी पर आक्षेप नहीं करूँगा। सत्य क्या है, यह आपको स्वतः समझना चाहिये।

(१) आजकल के राष्ट्रपति, मन्त्री, उपमन्त्री या पार्टी के मुखिया कहीं भी स्वागत समारोह में जाते हैं तो उनका स्वागत ताली बजा कर किया जाता है। यह तालीवादन वृहन्नलाओं का प्रतीक है, भूतकाल में अगर कोई स्वागत समारोह में ताली बजा देता था तो उसे समारोह से बाहर कर दिया जाता था।

आजकल जितनी बार तालियाँ बजायी जाती हैं, उतना ही उसको महत्व दिया जाता है। अखबारों में खबर बड़े-बड़े हरूफों

में निकाली जाती है कि अमुक महोदय के भाषण में १७ बार तालियाँ बजायी गयीं और जनता ने हार्दिक स्वागत किया।

( २ ) जब कोई नेता या मन्त्री मंच पर आता है तो तालियाँ बजाकर उसका स्वागत किया जाता है, उनके समारोह में नगाड़ा, शहनाई, शंख नहीं बजते हैं। अगर किसी ने ऐसा आयोजन किया तो उसे पिछड़ा हुआ कहा जाता है, क्योंकि बृहन्नलाओं को अपना ही बाजा प्यारा लगता है। अतएव इससे सिद्ध होता है कि शासन बृहन्नलाओं का है।

अगर कहीं उद्घाटन समारोह जन-खा पार्टी के लोग या राज्याधिकारी करते हैं तो वहाँ शंख, शहनाई नहीं बजती, आतिशबाजी नहीं छोड़ी जाती है, किन्तु रेशमी फीता कमर पर हाथ रखकर कैंची से कतर दिया जाता है, यह कार्य जनखाओं का प्रतीक नहीं तो क्या है? अतः सिद्ध होता है कि आजकल सर्वत्र मंगलामुखियों का शासन है।

( ३ ) आज का धर्म है, हर रोज मूँछ-दाढ़ी का सफाया, हाथ नचा-नचा कर भाषण करना, पैर में चमरौधे की जगह चप्पल पहनना, पार्टी बना कर दूसरों पर ताने कसना। यह इनका महान प्रतीक है। सो हे साँड़जी, ऐसे कर्मों से सिद्ध होता है कि अखण्ड ब्रह्मचारियों का शासन है।

(४) आपने भी इतिहास-पुराण पढ़ा है, सतयुग, द्वापर, त्रेता में किसी भी शासनाधिकारी ने परिवार-नियोजन नहीं किया, स्त्री या पुरुष को बन्ध्य नहीं बनाया गया, किन्तु मंगलामुखियों का शासन होने पर एलान कर दिया गया कि परिवार नियोजन जरूरी है, क्योंकि अपनी बिरादरी को सभी बढ़ावा देना चाहते हैं। अतीत में आज से अधिक मनुष्यों और पशुओं की आबादी थी, महाभारत गवाह है। लेकिन किसी भी देश ने परिवार-नियोजन

नहीं किया, उलटे आशीर्वाद देते थे कि तेरे सौ पुत्र हों और उनका परिवार फूले-फले। आज के युग में परिवार-नियोजन करना बृहन्नलाओं का खास ध्येय है। हे साँड़जी, इससे सिद्ध होता है कि चौदह वर्षीय शासन मंगलामुखियों का है। मंगलामुखियों के राज्य का गुण होता है कि राज्य के कर्मचारी, अधिकारी प्रजा पर जुल्म करते हैं, उनका शोषण करते रहते हैं, अगर कोई निडर बोले तो उस पर उलटा इल्जाम लगा कर कैद भेज दिया जाता है, अगर कोई उनकी निरादरी का बोले तो उसे कहीं अधिकारी बनाकर उसकी आवाज बन्द कर दी जाती है। घूसखोरी, चोरीबाजारी, भ्रष्टाचार राज्य के अंग-अंग में व्याप्त है। मन्त्रिगणों से शिकायत की जाती है तो उस पर परदा डाल देते हैं। अगर कोई अधिक शान दिखाये तो कहते हैं कि सबूत लाओ, वरना अंजाम बुरा होगा। प्रजा में आर्थिक संकट इतना व्याप्त रहता है कि उसकी कमर सीधी नहीं हो पाती। फिर उस पर करों का बोझा लाद दिया जाता है, ताकि उठकर आवाज न कर सके। बृहन्नलाओं के नेता काफी बोलते हैं, उन्हें भाषणों से ही फुरसत नहीं मिलती। राज के कर्मचारी जो भी रिपोर्ट दें, वही ठीक मानी जाती है। चोर डाकू खुले आम काररवाई करते हैं। उनके लिये ऐसा दण्ड नहीं है कि भविष्य में वे ऐसी हरकतें नहीं करें। इसी से सिद्ध होता है कि शासन के अधिकारी वीर नहीं, नपुंसक होते हैं और नपुंसकता जनखों का जन्म-सिद्ध अधिकार है।

हे साँड़जी, स्त्री पुरुषों को गुलाम समझती है। पुत्र पिता के अनुशासन में नहीं। भाई-भाई आपस में लड़ते हैं, यह बीज बन्दर जाति का बोया हुआ है। उनको भी श्रीरामजी का वरदान था; जब तक श्रीराम का वरदान था, तब तक उन्होंने बन्दरों की तरह शासन किया।

मैंने पूछा—महाराज, सो कैसे ?

नारदजी बोले—दो बिल्लियों वाली कहावत बिलकुल ठीक है। एक रोटी के टुकड़े के लिये दो बिल्लियाँ लड़ीं तो एक ने कहा—इसे मैं लूँगी और दूसरी ने कहा कि मैं लूँगी। आखिर वे बंदर के पास गयीं। उससे कहा कि हमें आधा-आधा हिस्सा कर दिया जाय। बन्दर चालबाज था, उसने रोटी के दो हिस्से कर उन्हें तराजू पर रखा, जिधर से पलड़ा झुकता था, उधर से टुकड़ा तोड़कर खाता जाता था। बिल्लियों ने देखा कि रोटी तो बन्दर खाकर खत्म कर देगा। अन्त में दोनों ने दुखी होकर कहा कि जो टुकड़ा बचा है, वह हम लोगों को दे दिया जाये। तब बन्दर ने तुरत कहा कि यह मेरे न्याय की फीस है, अतः उसे भी खा गया। सो साँड़जी, बन्दरों ने यह फूट के बीज इस दुनिया में डाले।

साधु-पुरुष के प्रयत्न से बन्दर भाग गये और साधु भी गुजर गया। श्रीराम के वरदान से वृहन्नलाओं का राज्य हो गया।

( ५ ) इनको अपने भाषण, उद्घाटन-विधान से ही फुरसत नहीं, राज्य-कार्य कैसे हो। शासन इन्होंने कभी किया भी नहीं, यह तो अपनी तालियाँ बजाने में ही मगन रहे। ज्यों-ज्यों इनके राज में विकास-कार्य बढ़ता जाता है, अन्न दो सेर का मिलने लगा है। गेहूँ दो सेर, चीनी तीन पाव, चावल एक सेर। स्वर्ण-मुद्रा की जगह ये श्वेतपत्र उड़ाते हैं। इतने मुलायम होते हैं कि इन्हें चाँदी या सोना काफी भारी ज्ञात होता है। उपरोक्त लक्षण जहाँ भी ज्ञात हो, समझ लीजिये कि वहाँ श्रीरामजी के रामराज्य के वृहन्नला-बन्धु राज्य कर रहे हैं।

साँड़जी, आप ही सोचें, जो तालियाँ बजवा-बजवा कर आनंद लेते हैं, क्या वे जन हैं ? जी, नहीं। वस्तुतः वे जन नहीं, जन-खा हैं।

नारदजी बोले—साँड़जी, पुरानी कहावत है कि

जर-जमीन जोरू जोर की।
जोर हटे तब और की॥

लेकिन यहाँ तो जोर का सवाल ही नहीं है। ये मुँह से, हाथ से, गर्दनों के झटकों से बात करते हैं। कोई अन्य देश अगर इनका कुछ हड़प ले तो विरोध में ढोलक बजाते हैं। एक जगह बैठकर आपस में वादा-विवाद करते हैं। दुश्मन के सामने लड़ना इन प्राणियों का काम नहीं। अगर इनके देश में दूसरे देश की फौज गोली बरसाये तो ये उस फौज पर गोली न बरसा कर अपने देश में गहरी भीड़ पर गोली बरसा कर उत्तर देते हैं। अगर देश के अन्दर कोई प्राणी भूखों मरने लगे तो विरोध में ये भी 'जानमारू' अभियान चालू कर देते हैं; जैसे, चूहामार अभियान, टिड्डीमार अभियान, मलेरियामार अभियान, कुत्तामार अभियान, खटमल-मार अभियान, बन्दरमार अभियान। वृहन्नलाओं के देश में बड़े-बड़े जानवरों को बहादुरी से मारने के लिये कारखाने बनाये जाते हैं। यहाँ गायें, भैंसें, बछड़े, बकरे-मार अभियान चालू हुआ करते हैं।

देश में जानवरों के कम होने से अकाल, दुर्भिक्ष, महामारी फैलेगी, इस बात को आजकल के प्राणी नहीं सोचते। उनको तो विदेशी मुद्रा से प्यार है; प्राणी से नहीं।

गोबर से धरती को खाद मिलती है, धरती गोबर से हर वक्त नयी बनी रहती है और हमारी खेती हरी-भरी रहती है। कभी भी दुर्भिक्ष पड़ने का डर नहीं रहता है। जब से जानवरों का ह्रास होना शुरू हुआ, तभी से धरती ने अन्न पैदा करना छोड़ दिया।

नारदजी बोले—हे साँड़जी, धरती में ऐसा पदार्थ छोड़ते हैं कि वह वन्ध्या हो जाती है। ये अपना चुनाव-चिह्न नपुंसक पशुओं को

बनाते हैं। जुलूस के आगे-आगे नपुंसक पशु रखेंगे और पीछे-पीछे स्वयं नपुंसक लोग रहेंगे।

गायों के परम शत्रु हैं ये बृहन्नला-बन्धु। गायों को बन्ध्या बनाने का उपाय व्यर्थ समझते हैं। बड़े-बड़े बधालय कायम कर उनका बध करा देते हैं। स्वयं एक मच्छर भी नहीं मारते। अहिंसा की पूजा करते हैं। हिंसा का जब प्रश्न आता है तो हाथ से नहीं, मशीन से हिंसा करते हैं। घी नहीं खाते ये लोग। घी से पुंसत्व प्राप्त होने का भय रहता है। घी के बदले व्हेजीटेबुल यानी बनस्पति लेते हैं। इससे नपुंसकता कायम रहती है।

नारदजी ही-ही करके हँसने लगे और बोले—साँड़जी, इस कलयुग में जो न हो जाय थोड़ा है। अतः आप राम-राम जपते रहिये, कभी न कभी आपका भी राज्य होगा, क्योंकि तलवार का नहीं, वोट का युग है। जिसको अधिक वोट मिलेगा, वह राज्यारूढ़ हो जायेगा।

गोस्वामीजी ने कहा है—'कलयुग केवल राम अधारा', सो साँड़जी, आपने राम की महिमा सुन ली। श्रीराम ने वरदान देकर बन्दरों को राज्य दिया। सन् १९४७ में वे चले गये। उनकी अवधि पूरी होने पर बृहन्नलाओं को राज्य दिया और जब इनकी अवधि पूर्ण हो जायेगी तो फिर दूसरा कोई राम का प्यारा आ जायेगा।

इसलिए आपसे मेरा बार-बार यह अनुरोध है कि आप भी श्रीराम को आठो याम भजते रहें। बोलो, सियावर रामचन्द्र की जय!

नारदजी के इस जयकार के साथ ही आँख खुल गयी तो क्या देखता हूँ कि श्रीमतीजी मेरी आँख पर पानी के छींटे दे रही हैं और चिल्ला रही हैं —

'नौ बज गये जनाब ! बाद में सियावर रामचन्द्रजी की जय-कार कीजियेगा, जल्दी चाय पीने की तैयारी कीजिये। चाय पीकर दुकान खुलवाइये। मडुआडीहवाला खड़ा होकर दरवाजे पर चिल्ला रहा है, उसे टायर-ट्यूब और एक दर्जन साइकिल देनी है न !'

\+ + +

और अब सोकर उठे घण्टों हो गया है ! मैं नये बजट की बाबत अखबार में खबर पढ़ रहा हूँ। बिजली की वस्तुओं के साथ-साथ साइकिल पर ड्यूटी बढ़ गयी है। अखण्ड ब्रह्मचारियों के देश में लोग कमर लचकाकर हाथ मटकाकर पैदल चलने की आदत बनाये रखें; इसलिए कल से मुझे साइकिलें महँगी बेचनी पड़ेंगी।

# परीक्षा

[ नजाकत की शैली में ]

लगन और बरच्छा की तरह जीवन की परिच्छा भी यद्यपि भगवान की ही सदिच्छा का परिणाम है, फिर भी संसार यही सिक्छा देता है कि भिच्छा भली, मगर परिच्छा नहीं। फिर भी दुनिया में सभी लोग सभी लोगों की परीक्षा लेते रहते हैं। भक्त भगवान का, डाक्टर नाड़ी निदान का, अक्ल शैतान का, सरकार सार्वजनिक शान का, पति अपनी पत्नी के मान का, कनमैलिया कान का, गायक गान का, युवराज प्रान का और मुअज्जन अजान का इम्तहान लेता ही रहता है। आजकल स्कूल कालेजों की परीक्षा का हर जगह सवाल है और घर-घर का नन्दलाल उसके खयाल से ही बेहाल है। यह किसकी खुरचाल है, यह भी एक सवाल है। सबका जवाब वही है—इसमें जो जीता वह नायाब है और जो हारा उसे तलाशे चिल्लू भर आब है। इसलिए जिनकी हालत खराब है उनकी सहायता करना ऐन शबाब है। अतः परीक्षाफल प्रकट होने पर सबके मन पर तरंग का रंग चढ़ सके, छात्र एक कक्षा से दूसरी कक्षा की ओर बढ़ सके, खूब खिलकर, खेलकर, खुलकर पढ़ सके, इसलिए इसी समय यह चेतावनी देना जरूरी है कि 'अरे इम्तहान अब तो सरपर खड़ा है, करो, कर सको जो, कि मौका बड़ा है।' थोड़ा ही दिन और है, इसमें जो चूका वह गया।

मगर कमर कसकर पढ़ाई में जुटना पड़ेगा। साथ ही पढ़ाई का अर्थ यह नहीं कि आँख चिपकी है पुस्तक पर और दिमाग है टेनिस लान पर। ऐसा होने से यही होगा जो उन चार आदमियों का हुआ जो भाँग छानकर नौका द्वारा मथुरा से कुम्भ नहाने के लिए प्रयाग चले। रातभर नाव खेते रहे। सबेरे पौ फटी तो एक चिल्लाया कि अरे प्रयाग के घाट तो मथुरा जैसे ही हैं। दूसरा बोला—मकान भी वैसे ही हैं। तीसरे ने कहा—आदमी भी वैसे ही दिखायी देते हैं, त्यों ही चौथा चमक उठा। अपनी पत्नी को सामने नहाते देखकर बोला—'अरी तू प्रयाग कैसे आयी?' उसने जवाब दिया कि—"पागल हुए हो? यह मथुरा है, प्रयाग नहीं।" फिर तो चारों चकराये कि मामला क्या है? रातभर डाँड़ चलाते-चलाते हाथ भर गये, फिर भी मथुरा से आगे न बढ़े। जब कारण की तलाश हुई तो देखा गया कि घाट से बँधी हुई नाव की रस्सी खोली ही नहीं गयी थी। इसलिये जिनका दिमाग कहीं और बँधा रहेगा, उनके रातभर पढ़ने से भी कुछ न होगा। होगा तो यही कि परीक्षाफल प्रकट होने पर वे लम्बी साँस भरेंगे और कहेंगे—

'बहारे उम्र गुजरी सालहायें इम्तहानी में।
हमें तो पास ही की फिक्र ने पीसा जवानी में॥'

## परीक्षा का समय

⊕

[ हजामत की शैली में ]

यह परीक्षा का समय है। उधर प्रकृति में गरमी आयी, इधर पुरुषों में सरगरमी। और ऐसी ही गरमी और सरगरमी में तो

लोगों की परीक्षा होती है ! एक तो यों ही गरमी, उसपर परीक्षा का नाम ही सरगरमी कर देता है। इस गर्मी से कुछ को जोश मिले, कुछ बेहोश हो जायँ और कुछ ख़ामोश तो फिर इसमें किसी का दोष नहीं। फिर भी सब परीक्षा दे रहे हैं। जनता के सामने महँगी का प्रश्न है—उसे कुछ भी उत्तर नहीं सूझता है। सरकार के सामने घाटे का बजट है। मालिक के सामने मजदूरों का प्रश्न है। मजदूरों के सामने पेट का सवाल है, कैसे उनके रिक्त स्थान की पूर्ति हो। अध्यापकों के सामने कम वेतन का सवाल है; छात्रों के सामने पढ़ने का प्रश्न है। राष्ट्रसंघ के सामने महामंत्री चुनने का सवाल है। रूस के सामने शांति का और शांति के सामने प्रेम का प्रश्न है। अभी तो सब समझने में ही वक्त लगेगा। माथापच्ची करनी पड़ेगी। जनसंघ के सामने प्रजापरिषद, परिषद के सामने धर्मसंघ, धर्मसंघ के सामने गौ, और गौ के सामने चारे की समस्या है। अर्थात् सबके सामने कुछ न कुछ विकट प्रश्न हैं। सबकी परीक्षा हो रही है। प्रश्न-पत्र बँट रहे हैं। उत्तर मिल रहे हैं पर संतोषजनक नहीं। किसी तरह लोग पास हो रहे हैं या किये जा रहे हैं। परीक्षाफल निकले या न निकले, पर फल मालूम ही है-सबका फल है बेकारी। भर्ती कैसे हो, स्कूलों में जगह नहीं; अगर भर्ती हो गये भी तो पढ़ें कैसे, कोर्स महँगा, किताबें महँगी। न लिखें तो पास कैसे हों ? पास हो गये भी तो नौकरी कहाँ ? यदि नौकरी मिल गयी तो वेतन नहीं मिलता। वेतन मिला भी तो, उससे पूरा भोजन नहीं मिलता। भोजन मिला भी तो उससे शक्ति नहीं मिलती और शक्ति नहीं तो कुछ भी नहीं। हम सोच रहे हैं, यह परीक्षा कैसे दी जाय ? दी जाय तो पास कैसे हुआ जाय ?

# एक परीक्षार्थी की डायरी

## [ शराफत की शैली में ]

आज सुबह तीन बजे ही एलार्म घड़ी बजने लगी। नींद तो मेरी खुल गयी, लेकिन मैं चुपचाप लिहाफ ओढ़े पड़ा था। घड़ी घनघना रही थी कि बाबू जी और अम्मा जी की नींद खुली। उन्होंने देखा कि मैं तो सो रहा हूँ। बाबू जी चिल्लाये—'भोंदू सुबह हो गयी, उठो...पाठ याद करो।' मैं अब भी पड़ा रहा। उधर बाबू जी सो गये और इधर फिर से मैंने खर्राटे लेना शुरू किया। जब सोकर उठा तो देखता हूँ कुल ९ बजकर साढ़े सत्ताइस सेकेंड हुए हैं। हाथ मुँह-धोकर स्कूल की ओर चला।

रास्ते में खयाल आया कि आज तो हिंदी की परीक्षा है। सो रहीम करीम के दोहे याद करता, संज्ञा-क्रिया-सर्वनाम-विशेषण, क्रिया-विशेषण, अव्यय आदि व्याकरण के देवी-देवताओं के नाम जपता १०॥ बजे स्कूल पहुँचा। दर्जे में देखता हूँ पोंगा पंडित बड़ी-बड़ी आँखें क्रोध से लाल किये बैठे मेरी राह देख रहे हैं। परचा बँट चुका था। लड़के सवाल हल कर रहे थे। मुझे देखते ही पोंगा पंडित तड़प उठे। किसी तरह चिरौरी-विनती कर पाया था कि निगाह हिन्दी के परचे पर गयी।

उलट-पलट चारो ओर से देखा, कोई भी चीज ऐसी नजर नहीं आयी जो मेरे मतलब की हो। समझ बेचारी बहुत पहले ही साथ छोड़ बैठी थी। परचा पढ़ना शुरू किया। कुल सात सवाल थे। कोई भी चार सवालों का जवाब लिखना था। पहला सवाल था तुलसीदास जी ने रामायण क्यों लिखी। अब आप ही

बताइये ? यह भी कोई सवाल में सवाल है। पोंगा पंडित से ही कोई पूछता कि आपका नाम पोंगा पंडित क्यों रक्खा गया था, हमारा नाम भोंदू क्यों रखा गया तो क्या जवाब मिलेगा। बहरहाल वह सवाल तो मैंने छोड़ दिया।

दूसरा सवाल कुछ पेचीदा था। उसमें पूछा गया था कि कबीरदासजी कपड़ा ज्यादा बुनते थे या कविता ज्यादा लिखते थे। मैंने जवाब लिख दिया—बराबर-बराबर। मतलब, वे जुलाहे के घर में पाले-पोसे गये थे, सो अपना पेट पालने के लिए कपड़ा बुनते थे और दुनिया की भलाई के लिए कविता लिखते थे।

ऐसे ही टेढ़े-मेढ़े सवाल थे। रात में मेरी नींद पूरी हुई न थी, मैं चौथे सवाल का जवाब लिखते-लिखते सो गया।

सोते-सोते मैं देखने लगा था सपना। सपने में देखा एक बड़ा उम्दा घोड़ा मुझे मिल गया है और मैं उसे सरपट दौड़ा रहा हूँ। नदी-नाले समुद्र पहाड़ सबको पार करता हुआ वह घोड़ा थोड़ी ही देर में हवा से बातें करने लगा। मेरा घोड़ा हवा में उड़ ही रहा था कि देखा एक छोटा-सा हवाई जहाज चला आ रहा है। मैंने हवाई जहाज को रोकने का इशारा किया। हवाई जहाज का पायलट था कोई समझदार आदमी। वह मेरे पास आ गया। मैं घोड़े को रोक तो सकता नहीं था, सो उछल कर चाहा कि हवाई जहाज के भीतर पहुँच जाऊँ। जैसे ही मैं उछला कि मेरी नींद खुल गयी और देखता हूँ मैं जमीन पर कुर्सी समेत लुढ़क गया हूँ। स्याही की दावात मेरे ऊपर गिर गयी है और मैं नीलाम्बर हो गया हूँ।

दो तीन आदमियों ने मुझे उठाया, तब तक तीसरा घण्टा भी खतम हुआ। कापी छीन ली गयी। तीन ही सवाल कर पाया था। पता नहीं पास हो सकूँगा या नहीं। अगर हिन्दी में फेल

हुआ तो बड़ी बेइज्जती होगी। सोच रहा हूँ कल पोंगा पंडित के घर जाकर सही सिफारिश करूँ। शायद कुछ नम्बर दे दें। निकल जाऊँगा। खैर, बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेहु। अभी तो हिसाब, अंग्रेजी और जुगराफिया का पर्चा बाकी है। हिसाब में लघुत्तम और लंगड़ी भिन्न से पाला पड़ा है, कभी चक्रवृद्धि ब्याज टाँग लड़ाता है, तो कभी व्यवहारगणित। कुछ समझ में ही नहीं आता कि मैं बराबर 'ब' के कि 'स' बराबर है 'द' के। और यह ज्योमेट्री की क्या बात है? अंग्रेजी में अगर फेल भी हो गये तो 'प्रमोशन' मिल ही जायगा। यह हिस्ट्री व जुगराफिया बड़ी बेवफा हैं। भगवान, तुमने मुझे बनाया तो फिर स्टूडेंट बनाने की क्या जरूरत पड़ी थी और अगर स्टूडेंट ही बनाना था तो कुछ बुद्धि-दिमाग भी दे दिया होता। अब तुम्हीं बेड़ा पार करो परमात्मा! वैसे मैं पूरी कोशिश करूँगा, आगे तुम्हारा ही भरोसा है।

❀

# मूर्खों की महिमा

पर द्रव्येषु निज पिता प्रापटीं,
पठति निःखरचे पत्र-पत्रिकाम् ।
करन्ति चतुर्शत विंशति—
जयन्ति सर्वदा राम-राम् ॥
भो पाठकः सावधान-सावधान ।
उपर्युक्त लक्षणधारी मानवेति ॥
—पाठकेनोपनिषत्

( भावार्थ )—दूसरों के धन को अपने पिताजी का धन समझनेवाले, मुफ्त में पत्र-पत्रिका पढ़नेवाले, चार सौ बीस करते हुए राम-राम जपने का ढोंग करनेवाले लक्षणधारी मनुष्यों से हे पाठको सावधान ! सावधान !

—दूसरों के भाव का अपहरण कर अपनी पुस्तक का पेट भरनेवाले, स्त्रियों के नाम से लिखकर सम्पादकों को चकमा देनेवाले, दक्षिणा देकर अपने कर्तृत्व-कुफल पर मनचाही आलोचना लिखानेवाले, सुबह-शाम राजकीय पुरस्कार की लालच में अपना चरित्र अपवित्र करनेवाले लक्षणधारी पुरुषों से हे लेखको सावधान ! सावधान !

—अपनी छपी हुई कविता को दुबारा प्रकाशनार्थ भेजनेवाले, कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा जोड़कर महल खड़ा करनेवाले, अखबारों की कतरन से निबन्ध निर्माण करनेवाले, गुरु की सेवा के प्रताप से नाम के पहले 'डाक्टर' लगानेवाले, प्रतिदिन पत्र के दफ्तर में पहुँचकर सम्पादकीय विभाग की चाय पीनेवाले लक्षणधारी महापुरुषों से हे सम्पादको, सावधान ! सावधान !

—लेखकों के पुरस्कार को हड़पकर अपनी तनखाह पूरी करनेवाले, दिनभर दफ्तर में बैठकर दुनिया भर का समाचार-पत्र पढ़ने के बाद घर लौट जानेवाले, मित्रों के पुत्रों के मूँड़न नकछेदन, यज्ञोपवीत का मांगलिक समाचार छापकर नये रस्टुरेण्ट में मुफ्त की चाय पीनेवाले, सदैव दो घण्टा सम्पादकीय विभाग एवं चार घण्टा व्यवस्था-विभाग में बैठनेवाले लक्षणधारी पुरुष-प्राणियों से हे पत्र-संचालको, सावधान ! सावधान !

संस्कृत-साहित्य का जूठन चबाकर नित नये लेख एवं मैटर देनेवाले लेखकों, सम्पादकों, व्यवस्थापकों से हे मेरी पुस्तक के पाठको, सावधान ! सावधान !

मुख्य संस्कृत ग्रन्थों में मूर्ख-पुराण का नाम हमने तो पढ़ा भी है, आपने सुना अवश्य होगा। मूर्ख-पुराण में सार-तत्व क्या लिखा हुआ है, नीचे प्रकट किया जा रहा है।

संसार में एक से एक परम मूर्ख हैं !

एक मूर्ख के शरीर पर बड़े-बड़े बाल थे, उन्हें एकबारगी समाप्त करने के लिए वह अग्नि में कूद गया और जल मरा।

एक मूर्खने भुने तिल बो दिये, और सालभर खेत सींचता रहा !

एक मूर्ख को चाय बनाने की जल्दी थी। वह जल्द से जल्द पानी गरम करने चला। उसने जल से भरी केतली में अग्नि डाल दी, और पानी गरम होने का आसरा देखता रहा।

अपनी नाक की चिन्ता सिर्फ भले मनुष्य करते हैं, मगर पत्नी की नाक की चिन्ता सभी करते हैं। एक मूर्ख की पत्नी की नासिका जरा टेढ़ी थी। उसके गुरु महाराज की नाक बिलकुल सीधी थी। उसने दोनो की नाक काट डाली और गुरु की नासिका पत्नी की नाक पर जमाने लगा।

एक मूर्ख ने आग में सोना साफ किया जाता देखकर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की। उसे इस बात का भरोसा हुआ कि वह इस तरह अपने मैले कपड़े भी साफ कर लिया करेगा। और उसने अपनी समस्त पोशाक आग के हवाले कर दी।

एक मूर्ख को खजूर के फल चखने की इच्छा हुई, जब तत्काल फल प्राप्त होने में कठिनाई का अनुभव हुआ तो उसने पेड़ पर चढ़ने में असमर्थ पाकर पेड़ ही काट डाला।

एक आदमी को दिव्य-दृष्टि मिल गयी थी। उसे जमीन में गड़ा धन दिखायी देता था। एक मूर्ख ने उसे काफी धन देकर अपने यहाँ रख लिया। एक दिन मूर्ख ने उस आदमी की आँखें इसलिए निकाल लीं कि वह कहीं चला न जाय।

एक मूर्ख कहीं निमंत्रण में गया। ( मूर्ख अक्सर निमंत्रण में जाते भी हैं ) वहाँ से लौटकर उसने विचार किया कि सब वस्तुओं में नमक की विशेषता थी। अतः वह मुट्ठी-मुट्ठी नमक खाने लगा।

एक मूर्ख को जलसे के लिए कई मन दूध की जरूरत थी। उसने अपनी एकमात्र गौ को महीने भर इसलिए न दुहा कि इकट्ठा महीने भर का दूध दुहूँगा।

एक खलघाट कपित्थ के पेड़ के नीचे बैठ जाता था कि कपित्थ फल सिर पर गिर कर टूटे तो मीठा रस चखूँ।

× × ×

मूर्ख में क्या बात है जो संस्कृत साहित्य में उसपर इतना अधिक प्रकाश डाला गया ?

मूर्ख ? मूर्ख एक अपने आप में पूर्ण ऐसा व्यक्तित्व है, जिससे दुनिया के तमाम विद्वान प्रभावित होते हैं ?

दुनिया में कोई किसी से नहीं डरता, लेकिन मूर्ख से सभी डरते हैं।

मूर्ख से वही व्यक्ति नहीं डरता, जो स्वतः काफी मूर्ख है या जिसकी मूर्खता किसी भी मूर्ख से बढ़ी-चढ़ी है।

मैं ऐसे अनेक मूर्खों को जानता हूँ जो तब तक बाबाजी का घंटा हिलाते रहे, जब तक मूर्ख नहीं थे। मूर्खता आते ही, आदमी बन गये। कार में बैठकर निकलने लगे, बेकारी खत्म हो गयी, दस वर्ष भी बाजार में चक्कर न लगा सके और दिवाला मार कर बैठ गये।

× × ×

मूर्ख में कौन-सी प्रधान विशेषता होती है, जिससे वह मूर्ख कहलाने का गौरव प्राप्त करता है ?

मूर्ख में बुद्धि की कमी होती है ?

जी, नहीं। मूर्ख में बुद्धि की कमी नहीं, बल्कि उसकी बुद्धि का प्याला छलकता रहता है।

तब, मूर्ख में शरारत रहती होगी ?

जी, नहीं, वह बहुत शरीफ होता है ?

नंगा रहता होगा ?

बिलकुल गलत। मूर्ख कभी नंगा रहता ही नहीं। नंगे रहते हैं विद्वान एवं बुद्धिमान, जो एक गमछा कमर में, एक चद्दरा देह में लुपेटे रहते हैं।

मूर्ख कला-हीन व्यक्ति होता होगा ?

जी, नहीं। मूर्ख के चरणों में चौसठ कलायें सिर झुकाये खड़ी रहती हैं।

फिर क्या ऐसी बात है, जो हम किसी को मूर्ख समझ बैठते हैं?

सुनिये, मूर्ख दम्भी होता है। दम्भ सभी कलाओं का सार है। जिसके पास दम्भ नहीं, वह अच्छा मूर्ख नहीं बन सकता।

संस्कृत साहित्य में महाकवि क्षेमेन्द्र ने दम्भ को समस्त कलाओं का सार-तत्व कहा है। दम्भ जैसी कला के मिलते ही चपल लक्ष्मी भी अपने दरवाजे पर अचल हो जाती हैं। दम्भ से ही यह मूर्खों की दुनिया चल रही है। जिस दिन उनके भीतर से दम्भ का कीड़ा गायब हो जाय, दुनिया का प्रत्येक मूर्ख खत्म हो जाय।

कवि ने कितने सुन्दर ढंग से दम्भ की व्याख्या की है? वे कहते हैं कि इस भव-वन में अनेक लता आदि से ढँका दम्भ नामक कूप है, जिसमें मुग्ध कुरंग आकर स्वयं गिर पड़ते हैं।

दंभ माया रहस्य का मंत्र है। इच्छित वस्तुओं का चिंतामणि, धूर्तों का प्रभाव बढ़ानेवाला है। लक्ष्मी का वशीकरण है।

दंभ मछली की तरह है। इसके न हाथ हैं न पैर, न सिर; यह दुर्लक्ष्य है।

भुजंग मंत्र से, कुरंग कूट यंत्र से, विहंग जाल से और मनुष्य दंभ से फंसाये जाते हैं। दंभ तरु की जड़ आँखें बन्द करना है। स्नान करके देर तक गीले कपड़ों के जल से उसे सींचा जाता है अपवित्रता उसके फूल हैं, सुख उसके फल हैं।

व्रत-नियम से बक-दंभ होता है। नियमों को छिपाने से कूर्मज दंभ होता है। हर बात तथा आँखों की गति छिपाने से मार्जरिज

दंभ होता है। बक दंभ दंभों में दंभ-पति है। कूर्मज दंभ दंभ नरेन्द्र है और माजरिज दंभ चक्रवर्ती है।

दांभिकों की पहचान विलक्षण है। लक्षणों को मिलाइये। क्षुद्र नख-श्मश्रु-कच चोटी, जटाधारी, लम्बी दाढ़ीवाला, बहुमृत्तिका पिचास (बात-बातपर काफी मिट्टी से हाथ धोनेवाला) कम बोलनेवाला, मोटी पवित्री पहननेवाला, उँगलियों पर जप करनेवाला, सदा विवाद करनेवाला, लोगों के बीच में बैठे-बैठे भी जप करने में होंठ कँपाने वाला, गलियों में ध्यान-मुद्रा में चलनेवाला, घाट पर बहुत नाटकीय ढंग से कुल्ला-आचमन करनेवाला, बहुत देर तक स्नान करने वाला, बात-बात पर कान छूने वाला, जाड़ों में सीत्कार से दाँत कँपाकर स्नान सूचित करनेवाला, लम्बा-चौड़ा तिलक लगानेवाला, सिर–चोटी में फूल धारण करनेवाला और लोगों के स्पर्श से बचकर चलनेवाला दांभिक होता है।

कीर्ति-लोलुप दंभी कौन होते हैं? जो गुणहीनों को प्रणाम करे, गुणी को देखकर अकड़ रहे, बन्धुओं से द्वेष रखे, पराये के लिये करुणा का सागर उमड़ाये।

जो स्वार्थ साधन के समय प्रणाम करे और बहुत हें-हें करे तथा काम निकल जाने पर मौन होकर भ्रू भंग करे, उसे क्रूर दांभिक समझना।

शुचि-दंभ, शमदंभ, स्नातक दंभ, समाधि दंभ आदि निस्पृह दंभ की तुलना में कुछ नहीं हैं।

मुण्डित, जटाधारी, नग्न, दण्डधारी, काषाय वस्त्रधारी, भस्म-पोते, घरहरे जैसी पगड़ी बाँधे दंभ संसार में विचरता रहता है।

लोभ दंभ का पिता है, माया माता है, कपट भाई है। कुटिलता उसकी विवाहिता पत्नी है, हुङ्कार उसका प्रिय पुत्र है।

कहते हैं कि जब विधाता सृष्टि रचना कर फुरसत में आये तो उन्होंने देखा कि मनुष्य निरावलम्ब है, अत्यन्त सीधा है, भोगों से हीन है; उन्हें करुणा पैदा हुई। मनुष्य मात्र की हित कामना से, उन्होंने समृद्ध करने के लिए अपनी माया से दंभ की सृष्टि की।

वे मनुष्य मात्र से ज्यों बोले, 'हे पुत्र'! कि कुशा की मुट्ठी, पुस्तकमाला, रिक्त कमंडल, हृदय के समान ही कुटिल दंड, मृगचर्म लिये, मोटी पवित्र कुशा कान पर रखे, चोटी में कुशा एवं फूल बाँधे, काष्ठ की भाँति कड़ी गरदन बनाये; जप से चंचल होंठवाला, समाधि में आँखें बंद किये, रुद्राक्ष की माला एवं मिट्टी से भरा एक पात्र हाथ में लिये, नेत्रों-भौंहों, हुङ्कार तथा मुख-चेष्टा से त्रास उत्पन्न करता, मौनव्रती, ब्रह्म लोक में भी सबका स्पर्श बचाता, बैठने के लिए सिंहासन चाहने वाला दंभ ब्रह्मा जी के सम्मुख खड़ा हो गया।

सप्तर्षियों ने देखते ही भय-ग्रस्त हो उसे प्रणाम किया, ब्रह्मा को भी चकित होना पड़ा। अपने अल्प-तप की लज्जा से वशिष्ठ की पीठ झुक गयी, नारद आडंबर रहित मुनिव्रत के प्रति निरादृत हो गये, जमदग्नि घुटनों में मुँह छिपाकर बैठ गये, गालव की गरदन अपने आप दूसरी ओर घूम गयी। भृगु लज्जा में डूब गये।

तब ब्रह्मा ने कहा, 'आओ मेरी गोद में बैठो!' यह सुन कर दंभ ने ब्रह्मा जी की जंघा पर जल छिड़का, फिर बहुत संकोच से जा बैठा। बोला—जोर से मत बोलना। बोलना हो तो मुँह के सम्मुख हाथ रख लेना। तुम्हारे मुख की अशुद्ध हवा मुझे न लगने पाये।

यह सुनकर ब्रह्मा जी मुस्कुराये और अपने नवीन पुत्र का नामकरण करते हुए बोले—तुम दंभ हो; उठो, तुम पृथ्वी पर जाओ। तुम्हरा अंतस सृष्टि के प्राणियों को कभी नहीं ज्ञात होगा,

तुम्हारी चाल कोई न समझेगा। तुम्हें वहाँ नाना प्रकार के भोग प्राप्त होंगे। तुम और कहीं मत रहना, सिर्फ मूर्खों के पास रहना।

यह कहकर ब्रह्माजी ने एक शिला उठायी, दंभ के गले में बाँध दी। दंभ अपनी पत्थर प्रतिभा के कारण धीरे-धीरे पृथ्वी पर उतरने लगा।

हे पुत्र! दंभ यहाँ पहुँचते ही न्यायालय के कर्मचारियों में, तपस्वियों में, कर वसूल करने वालों में, तांत्रिकों-मांत्रिकों में वैद्यों में, सुरा-सेवियों में, वणिकों में, सुन्दरियों में, गायकों में, वाचकों में, समालोचकों में तो घुसा ही, सृष्टि के प्रत्येक उपयोगी पदार्थ में घुस गया।

हे पुत्र! तुमने बगुले को एक टाँग पर खड़ा होकर मछली पकड़ते देखा होगा। जटा वल्कलधारी वृत्त भी तो इसी दंभ से आक्रांत हैं।

हे पुत्र! दंभ वंचकों का कल्पवृक्ष है। विष्णु ने भी वामन दंभ से त्रैलोक्य को आक्रांत किया था।

× × ×

मूर्खो, यदि तुम्हारे भीतर दंभ नहीं है तो कुछ नहीं है। वह मूर्ख शत-प्रतिशत मूर्ख नहीं है जो दंभ का सहारा लेना नहीं जानता।

जो केवल मूर्ख हैं, उन्हें सींग नहीं होती। यही कारण है कि वे किसी को क्षति नहीं पहुँचा पाते। जो दंभी मूर्ख हैं, वे सींगवाले होते हैं। वे प्राणीमात्र को क्षति पहुँचाने की शक्ति रखते हैं।

मूर्खों को दृष्टि नहीं होती। वे दिव्यदृष्टि रखते हैं। अपने दंभ के कारण उन्हें दिव्य-दृष्टि तक प्राप्त हो जाती है। जो सिर्फ दृष्टि रखते हैं, मूर्ख की दिव्य दृष्टि के सम्मुख हार जाते हैं, पस्त हो जाते हैं।

मूर्ख नेता होता है, उसे कोई चुने या न चुने, वह जन जन का नेता होता है। उसके नेतृत्व में लक्ष-लक्ष योजनाएँ फलीभूत होती है। वह जब चाहता है जैसा चाहता है, जिस तरह चाहता है, इस सारी सृष्टि को नाचना पड़ता है।

वह अनंत वस्तुओं का स्वामी है, उसके पास क्या नहीं है? वह धन पात्र है, वाहन युक्त है, भवन पति है, सुन्दर शरीरवाला है, जवान होकर चलनेवाला है। वह सर्वस्व का स्वामी है।

मूर्ख के पास किसी वस्तु का अभाव है तो चंद वस्तुओं का। मूर्ख को इनसे क्या वास्ता? अगर उसके पास अभाव है तो कृपा का, क्षमा का, उदारता का, दान-शीलता का, विनम्रता का। वह इन वस्तुओं के अभाव में परम सुखी है। उसे न तो कृपा की जरूरत है, न उदारता की, न क्षमा की, न विनम्रता की, दान-शीलता की तो उसे नाम मात्र की आवश्यकता नहीं। इन पाँचों बहनों को वह बहुत पहले तलाक दे चुका है। इन दिनों उसने मूर्खता (पतिगृह का नाम कुटिलता) से विवाह कर लिया है। मूर्ख को अपनी प्यारी 'मूर्खता' से असीम प्यार है। वह उसकी प्रिया है, प्रेयसी है, पत्नी है, स्वामिनी है। मूर्खता उसे भले छोड़ देना चाहे, मूर्ख छोड़ने की गलती नहीं कर सकता।

संसार में अबाध विचरण करने वाले मूर्खों! तुम लक्ष-लक्ष की संख्या में तब तक विचरते रहो, जब तक परमाणु युद्धों का सिल-सिला नहीं शुरू हो जाता। तुम्हें इस धरा पर सहस्रायु प्राप्त हो! तुम्हारे बोझ से यह धरती इसी प्रकार अंटाचित्त पड़ी रहे और तुम इसकी छाती पर इसी प्रकार उधम मचाते रहो।

संसार के समस्त मूर्खों को नमस्कार।

मगर नमस्कार करने की जरूरत नहीं है। नमस्कार उसी को किया जाता है, जिसका नाता इस दुनिया से छूट चुका हो। भला

मूर्खों का नाता इस दुनिया से छूटेगा ? जब तक यह संसार है, मूर्ख यहाँ रहेंगे। दंभी यहाँ रहेंगे और सारी सृष्टि को अपने ठेंगे पर रखने वाले महापात्र, महामूर्ख एवं महाचांडाल रहेंगे।

मूर्खता सरस्वती की सौतेली बहन है। महासरस्वती हमारे आपके, हमारे आपके बाप के कपार पर टपकती थीं, मूर्खता हमारे आपके न सही, मूर्खों की नाक पर जरूर टपकती है। वह मूर्ख वस्तुतः जन्मजात मूर्ख नहीं जिसकी नाक से मूर्खता टपक कर छाती, पेट होते हुए जमीन पर न उतरे। मूर्खता नाक से टपकती है, मूर्खता मुख से लपकती है, मूर्खता आँख से झपकती है। उसका टपकना, लपकना, झपकना मनुष्य मात्र के लिए जरूरी है।

अगर हम सब लोग महाबुद्धिमान हो जायँ तो यह सृष्टि दो कदम भी न चले। लँगड़ी हो जाय। वह तो कहिये कि इस संसार में हमारे आपके साथ कुछ मूर्ख भी सदैव रहते हैं और रहेंगे, इसीलिए यह दुनिया चलती जा रही है। मूर्ख इस सृष्टि का संचालन करता है, वही अपनी मेधावी शक्ति से इसे भोजन दे रहा है। यदि मूर्ख बुद्धिमानों की पाँत में खड़ा हो जाय तो उसके आत्म साक्षात्कार का फल होगा कि बाल-बच्चे भूखों मरेंगे, सारी दुनिया परेशान होगी और सर्वत्र संसार क्रम छिन्न-भिन्न हो जायगा।

मूर्ख अपने करतब से पत्थर युग परमाणु युग तक सदैव इसी बात के लिए प्रयत्नशील रहा है कि उसकी मूर्खता जीवित रहे। वह अपने रक्त की विशेषता को समझता है। इसीलिए वह हड्डी के हथियार चलाना नहीं चाहता, ताम्र-पत्र में नहीं खाना चाहता, वल्कल नहीं पहनना चाहता। अब वह राकेट से मार करेगा, स्टेनलेस स्टील में खायेगा, प्लास्टिक एवं नाइलान पहनेगा।

मूर्खता कोई घूँटी नहीं है, जो ऊपर से पिलाई जाती हो। वह अपने आप भीतर से पैदा होती है, अपने आप पैदा न हो तो

उसे मनुष्य का उद्देश्य ज्ञात न हो, परभाव का प्रेमी न हो और न मनुष्य-मात्र का मूल्यांकन हो। आप और कुछ कीजिए या मत कीजिए, आपके भीतर जो जन्मजात मूर्खता है, उसकी अवश्य रक्षा कीजिए। वह आपका अमूल्य धन है! जिस दिन मूर्खता का नाश होगा, आप परमब्रह्म में लीन हो जाएँगे और इस संसार सागर में गोता खाने योग्य नहीं रहेंगे। अतः हे इस मूर्खतापूर्ण सृष्टि के सपूतो, यदि तुम्हें दुनिया में कुछ करना है तो तुम अपनी मूर्खता की अवश्य रक्षा करो, तभी इस असार संसार में तुम्हें सारतत्व प्राप्त होगा।

और, तभी तुम मूर्खता का सम्पूर्ण आनन्द उठा सकोगे।

॥ शुभम् भूयात् ॥